फरवरी २०२० / पृष्ठ ५२ / मूल्य ₹१०

# लोकराज्य

# मराठी

मराठी बोलता हूँ, मराठी समझता हूँ, मराठी जानता हूँ, मराठी मानता हूँ

# मराठी भाषा

## गौरव दिन

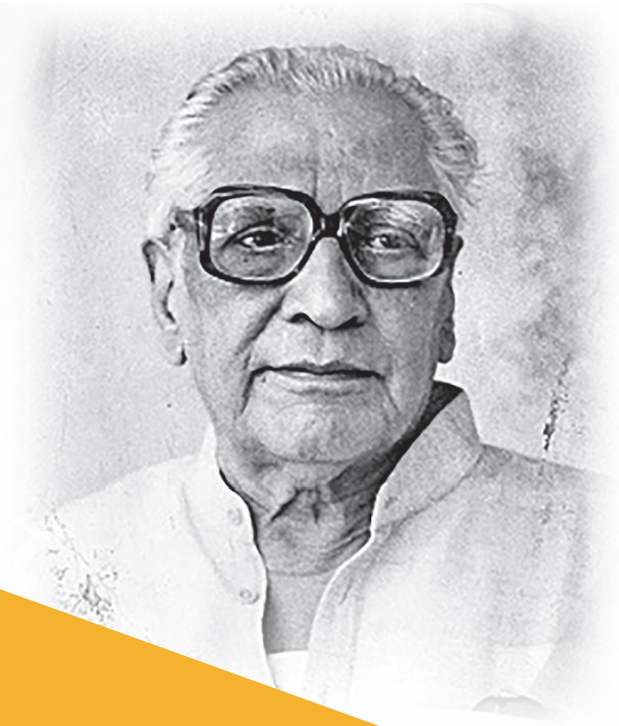

**श्री वि. वा. शिरवाडकर उर्फ़ कुसुमाग्रज ने महाराष्ट्र के साहित्यिक, सांस्कृतिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वि. स. खांडेकर के बाद मराठी साहित्य को ज्ञानपीठ पुरस्कार दिलाने वाले वे दूसरे महान साहित्यकार थे। उनकी स्मृति को अभिवादन के रूप में २७ फरवरी को उनके जन्मदिन को महाराष्ट्र सरकार मराठी भाषा गौरव दिन के रूप में मनाती है।**

## मातृभाषा की क्षमता पर विश्वास हो

भाषा जेल में नहीं बढती है। आज भी जो मराठी प्रचलित है वह अनेक भाषाओं के शब्दों और व्यावहारिक संज्ञा के नजराने लेकर ही सम्पन्न हुई है। किसी भी जीवंत समाज की भाषा किसी तालाब की तरह सीमित नहीं रहती। वह समय के अनुसार निर्माण होने वाले नए ज्ञान, विचारों और जानकारियों को झरने की तरह आत्मसात कर आगे बढने वाली नदी के प्रवाह जैसी होती है। दूसरी प्रगत भाषाओं से संपर्क रखकर ही वह प्रगति कर सकती है। शुद्धता के कर्मकांड में डूबी हुई और उसकी वजह से आगे नहीं बढने वाली भाषा मृतावस्था में कैसे दफ़न हो जाती हैं, इतिहास में यह देखने को मिलता है। इस बात का ध्यान मराठी भाषा ने अपने १५ सदी के प्रवास में रखा है। और इसीलिए नए युग की चुनौतियों का सामना करने की सामर्थ्य के सम्बन्ध में आशंकित हम उसकी संतानें कमजोर हैं। हमारी किसी भाषा से कोई दुश्मनी नहीं है। मौसी की तरह पालन करने वाली अंग्रेजी भाषा से तो बिलकुल भी नहीं है। मौसी बाई अब हमारी मां के घर का कब्जा फिर से हमारी मां को दे, बस इतनी सी ही हमारी मांग है। हमारे सामने जो सवाल है वह अंग्रेजी के बहिष्कार का नहीं अपितु मराठी के संरक्षण और संवर्धन का है।

भाषा का मतलब शब्दों का संकलन नहीं होता है। समाज के वैचारिक और संचित ज्ञान को काल से आगे ले जाने और परिणामतः समाज के बदलते जीवन को अखंडता, आकार और आशय देने वाली भाषा एक महाशक्ति होती है। धागे में पिरोये गए मणियों की तरह सामाजिक जीवन की सभी धारणाओं और विकास की प्रेरणा उसमें समाहित रहती है। इसलिए मराठी पर यह संकट उसके शब्दकोष या उसके साहित्य पर संकट नहीं है। वह महाराष्ट्र की अस्मिता पर, मराठीपन पर और यंहा के लोगों के भविष्य पर संकट है। समाज की प्रगति या क्रांति स्वभाषा की धार पर ही उपजायी जा सकती है, इस बात को क्रांतिकारियों के प्रणेताओं ने कहा है। संस्कृत भाषा को भगवान ने बनाया है ! तो प्राकृत क्या चोरों की वजह से हो गयी ? इस प्रकार का संतप्त सवाल संत एकनाथ ने पूछा था। आज वही सवाल अंग्रेजी के सम्बन्ध में पूछा जा सकता है। संस्कृत को पढ.उस जमाने में जो पुरोहित बने आज उनकी जगह अंग्रेजी में पारंगत हुए चार -पांच टक्का लोगों ने ले ली है। इन पांच टक्का लोगों के प्रतिस्थापित हित संबंधों के लिए क्या आठ करोड़ लोगों का भविष्य धोखे में डालना है क्या ? इस प्रश्न पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए।

अनेक विख्यात वैज्ञानिकों और डॉक्टर्स ने इस बात को बार -बार कहा है कि सभी स्तरों पर अपनी मातृ भाषा में हांसिल की गयी शिक्षा ही सबसे अच्छी होती है, अंग्रेजी की जंहा जरूरत पड़े वंही उसकी पारिभाषिक संज्ञाओं का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। इसलिए स्वभाषा की रक्षा का सवाल मंत्रालय या किसी सरकारी विभाग का नहीं, यह हर सामान्य आदमी का प्रश्न है। इस बात को ध्यान में रख सरकार ने सबका सहयोग लिया तो इस संकट पर मात देना कोई कठिन कार्य नहीं है, ऐसा मुझे लगता है। दुनिया की सभी प्रगल्भ भाषाओं ने जो साधा है वह मराठी भी साध सकती है। केवल आपको विश्वास होना चाहिए। हर मुश्किल परिस्थितियों से जीतने की क्षमता हमारी मातृ भाषा में है। अमृत से भी शर्त जीत लेने की क्षमता हमारी भाषा में है।

**( १२ -१३ अगस्त १९८९ को मुंबई में हुई अंतरराष्ट्रीय मराठी परिषद में कवि कुसुमाग्रज उर्फ़ श्री वि. वा. शिरवाडकर के अध्यक्षीय भाषण से )**

# अंतरंग


**अभिजात मराठी – ये लीजिये सबूत** ६

महान संशोधक श्री व्यं. केतकर, राजाराम शास्त्री भागवत, वि. का. राजवाडे, इरावती कर्वे, कृ. पा. कुलकर्णी, दत्तो वामन पोतदार, बि. ल. भावे, रा. भि. जोशी आदि ने अपनी खोजों के आधार पर कहा है कि महाराष्ट्री (मराठी) भाषा कम से कम अढाई हजार साल पुरानी है स्पष्ट रूप से नजर आती है। महाराष्ट्री -मऱ्हाठी भाषा का अढाई हजार साल की यात्रा का साधार प्रकाश में आना मतलब मराठी भाषा एक अभिजात भाषा है यह निर्विवाद रूप से सिद्ध होता है।

**मेरा महाराष्ट्र, आपका उद्योग, सबकी समृद्धि** १८

राज्य के विकास में रोजगार निर्माण को सबसे अधिक प्रमुखता मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने दी है। राज्य को विकास के मार्ग पर ले जाना है तो हर क्षेत्र का विकास होना आवश्यक है और उसके लिए राज्य के सभी वर्गों को साथ लेकर चलने की नीति मुख्यमंत्री ने स्वीकारी है। कृषि, उद्योग और शिक्षा जैसे क्षेत्र का विकास एक दूसरे के साथ मिलकर किया जा सकता है, इस बात पर उनका बल है।

**स्वच्छ पर्यावरण समृद्ध पर्यटन** २४

राज्य के विकास में पर्यटन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। पर्यावरण की स्वच्छता, पर्यटन व्यवसाय के विकास के लिए उपयुक्त सिद्ध होती है। इसकी वजह से हम सभी को पर्यावरण स्वच्छता के लिए दिल से प्रयास करने चाहिए। यह कहना है पर्यटन व पर्यावरण मंत्री श्री आदित्य ठाकरे का।

**छोटा देश –बड़ी उड़ान** ४४

इजराइल एक महत्वपूर्ण ठिकाने पर बसा देश है। यह देश अफ्रीका और एशिया महाद्वीप दोनों के बीच एक कडी के रूप में है। इसकी वजह से प्राकृतिक सुंदरता, विविध संस्कृतियों का संगम और अफलातून मौसम इस देश को मिला है। इजराइल में अनेक पर्यटन स्थल हैं, जिसकी वजह से देश -विदेश के पर्यटकों का यह हमेशा आकर्षण केंद्र बना रहता है।

| | |
|---|---|
| अभिजात मराठी ये लीजिये सबूत | ६ |
| मराठी हृदय और मन की | ११ |
| मराठी का संवर्धन, मराठी की श्रेष्ठता | १४ |
| मराठी संवर्धन के नए उपक्रम | १७ |
| मेरा महाराष्ट्र, आपका उद्योग, सबकी समृद्धि | १८ |
| आपकी कुर्सी, आपका सम्मान ... | २१ |
| स्वच्छ पर्यावरण समृद्ध पर्यटन | २४ |
| सरखेल | २८ |
| हम करेंगें हीं | ३० |
| एक नजर | ३३–३६ |
| मंत्रिमंडल में तय हो गया | ३७ |
| पानी की किल्त दूर | ४२ |
| छोटा देश -बड़ी उड़ान | ४४ |
| गडों का राजा : राजगड | ४६ |
| मंत्रिमंडल | ४८ |
| अग्रसर मराठी कदम | ५० |

वर्ष २ । अंक ८ । फरवरी २०२०

सूचना एवं जनसंपर्क महानिदेशालय,
महाराष्ट्र सरकार

लोकराज्य

**संपादन**

| | |
|---|---|
| मुख्य संपादक | डॉ. दिलीप पांढरपट्टे |
| संपादक मंडळ | अजय अंबेकर |
| | सुरेश वांदिले |
| संपादक | अनिल आलूरकर |
| उप संपादक | प्रवीण कुलकर्णी |
| | गजानन पाटिल |
| | राजाराम देवकर |

**वितरण व डिजाईन**

| | |
|---|---|
| वितरण | मंगेश वरकड |
| | अश्विनी पुजारी |
| सहायक | भारती वाघ |
| मुखपृष्ठ सज्जा | सीमा रनाळकर |
| | सुशिम कांबळे |
| मुद्रक | मे. मुद्रण प्रिंट एन पैक प्राइवेट लिमिटेड प्लाट नं. सी - २६० एमआईडीसी, टीटीसी इंडस्ट्रीयल एरिया, सविता केमिकल रोड, बिहाइंड गोकुल होटल, पवने, नवी मुंबई - ४००७०३ |

**टीम मुद्रण**

| | |
|---|---|
| संपादक | संजय राय |
| सहायक संपादक | संजय गुरव |
| साज सज्जा | जयश्री भागवत |

**पता** सूचना एवं जनसंपर्क महानिदेशालय,
महाराष्ट्र सरकार न्यू प्रशासन भवन, १७ वीं मंजिल, मंत्रालय के सामने, हुतात्मा राजगुरु चौक, मुंबई - ४०००३२
**Email : lokrajya.dgipr@maharashtra.gov.in**

**वितरण - क्रेता**

क्रेता और वाद-विवाद निवारण - ९३७२२३०३२०
(सुबह १०.३० से ५.३० कार्यालयीन कामकाज दिवस)

**ई - लोकराज्य** http://dgipr.maharashtra.gov.in

**Follow us on www.twitter.com/MahaDGIPR**
**Like us on www.facebook.com/dgipr**
**Subscribe us on YouTube/ MaharashtraDGIPR**
**Visit us on www.mahanews.gov.in Blog/maharashtradgipr**

कृपया सूचना एंव जनसंनपर्क महानिदेशालय की वेवससाईट http://dgipr.maharashtra.gov.in देखें.
महाराष्ट्र सरकार की एक निर्मिति

# मेरी मराठी मिट्टी

**मेरी मराठी मिट्टी का,**
**लगाओ ललाट पर टीका,**
**इसके साथ जी रही हैं,**
**दरिया -घाटियों की शिला,**

**इसकी कोख में जन्मे हैं,**
**काळे कणखर हाथ,**
**जिनके दुर्दम्य धीर ने,**
**की मृत्यु पर मात,**

**नहीं फैलाया हाथ कभी,**
**मांगने को दान,**
**स्वर्ण सिंहासन के**
**समक्ष नहीं झुकायी मान।**

**इसके गगन में गूंजती,**
**आदि स्वतंत्रता की वाणी,**
**इसके पुत्रों के आलिंगन में,**
**है समता की गवाही,**

**मेरी मराठी मिट्टी का,**
**लगाओ ललाट पर टीका,**
**इसके संग जीयेगी,**
**मेरे देश की शिला**

(कुसुमाग्रज की कविता 'मराठी माती ' का हिंदी भावार्थ )

# भाषाओ में सम्मानित मराठी

**सुभाष देसाई**
उद्योग, खनन, मराठी भाषा मंत्री

*'आमुच्या मनामनात दंगते मराठी*
*आमुच्या रगारगात रंगते मराठी*
*आमुच्या उराउरात स्पंदते मराठी*
*आमुच्या नसानसात नाचते मराठी'*

कविवर्य सुरेश भट की कविता की यह पंक्तियाँ जिनका भावार्थ है 'हमारे मनों में मराठी उत्पन्न होती है -हमारे रग रग में दौड़ती है -हमारे दिलों में धड़कती और हमारी नस -नस में मराठी नाचती है ' मराठी भाषा की महानता को बहुत ही सटीक रूप से व्यक्त करती है। मराठी हमारी सांस है और हमारा अभिमान है। आपको और हमें मराठी बोलना और समझना आता है यह बड़े सौभाग्य की बात है। संत ज्ञानेश्वर ने मराठी को अमृत की उपमा दी है। अमृत जैसी या उससे भी अधिक मीठी आपकी और हमारी मराठी नक्षत्रों की बारह राशि। सात वारों में रवि -शशि। दीप की भाषा जैसी। मराठी बोली। फादर स्टीफंस ने कुछ इस प्रकार से मराठी भाषा की श्रेष्ठता का वर्णन किया है।

मराठी भाषा का करीब २००० साल पुराना वैभवशाली इतिहास है। इस बात के अनेक सबूत भी मिले हैं। ये सबूत हमारी मराठी भाषा को प्राचीन और सम्पन्न अभिजात भाषा सिद्ध करने में समर्थ हैं। मराठी को अभिजात भाषा का दर्जा मिले इसके लिए हमारे द्वारा किये जा रहे प्रयास शीघ्र ही सार्थक होंगे। इस बात की मुझे अपेक्षा और विश्वास भी है। रायगड पर फहराने वाला छत्रपति शिवाजी महाराज का ध्वज और दिल्ली के तख्त को भयभीत कर देने वाली मराठी भाषा का सत्व और महाराज की भवानी तलवार की चमक जैसी है। और इसीलिए हमारी सरकार आते ही सबसे पहले मुख्यमंत्री श्री उद्धव ठाकरे ने देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को विशेष पत्र लिखकर मांग और अपील की है कि 'मराठी भाषा को अभिजात भाषा का मुकुट पहनाने में विलंब नहीं करें। 'हमारी रग -रग में मराठी भाषा का स्पंदन होता है और यही वजह है मराठी का वैभव को हम सर्वोच्च प्राथमिकता देने वाले हैं। अब मंत्रालय की हर फ़ाइल में टिप्पणियां मराठी में लिखी जाएंगी इस बात की अनिवार्यता हमने कर दी है। जिन फाइलों पर टिप्पणियां मराठी में नहीं होंगी उन्हें लौटा दिया जाएगा। मराठी भाषा की किसी भी प्रकार की अवहेलना हम बर्दाश्त नहीं करने वाले हैं।

मराठी भाषा के विकास के लिए मराठी भाषा विभाग को और अधिक सक्षम किया जाना तय किया गया है। इस कार्य के लिए हम मराठी भाषा के ज्येष्ठ और श्रेष्ठ साहित्यकारों व अभ्यासकों की भी मदद लेंगें। हमने इस संदर्भ में ज्येष्ठ साहित्यकार पद्मश्री मधु मंगेश कर्णिक और अन्य मान्यवरों को विशेष चर्चा के लिए बुलाया था । मराठी प्रवाह और अधिक चेतनादायी बने इसके लिए मराठी पर आस्था रखने वाले सभी लोगों के मौलिक सुझावों पर हम विचार करने वाले हैं। मराठी को और अधिक तेजोमय करने के लिए सभी पहलुओं को समाहित करने वाली एक योजना बनायेंगे।

मराठी भाषा विभाग के तहत कार्य करने वाले भाषा निदेशालय, साहित्य और संस्कृति मंडल, राज्य मराठी विकास संस्था और विश्वकोश मंडल के माध्यम से आने वाले समय में नए -नए उपक्रम शुरु किये जायेंगें। साहित्य निर्मिति, भाषा संशोधन और मराठी भाषा का आधुनिक तकनीक और ज्ञान के साथ सामंजस्य बनाने के लिए हमारा प्रयास रहेगा। पुस्तकों के गांव से रंग वैखरी, इस प्रकार के मराठी भाषा को प्रोत्साहित करने के शुरु उपक्रमों में तेजी लाने का कार्य किया जाएगा और इस प्रकार के कार्य में देश और दुनिया में रहने वाले सभी मराठी शामिल हो सकें इसके लिए सही प्रयास किये जायेंगें। मराठी भाषा भवन का प्रकल्प अलग-अलग कारणों से अटका हुआ था। अब इस प्रकल्प में हम तेजी लाने जा रहे हैं। शीघ्र ही मुंबई में मराठी भाषा भवन हमारी नजरों के सामने बनकर खड़ा दिखेगा, इस बात का आप सभी को मैं विश्वास दिलाता हूँ।

हमारी नसों में नाचने वाली मराठी का वैभव, उसकी विभिन्न बोलियों में है। इन बोलियों को मुख्य प्रवाह में लाकर मराठी का फलक और अधिक व्यापक करने का हमने निर्धारण किया है। मराठी केवल साहित्य तक ही नहीं सिमट कर रह जाए वह ज्ञान भाषा, आधुनिक तकनीक की भाषा, कौशल्य विकास की भाषा बने इस बात के लिए हम विशेष प्रयास करने वाले हैं। दसवीं तक सभी विद्यालयों में मराठी अनिवार्य करने का हमारा विचार है। महाराष्ट्र में रहने वाले हर व्यक्ति को मराठी आनी चाहिए। उन्हें मराठी में ही काम करना चाहिए। मराठी का ह्रदय बहुत विशाल है वह किसी और भाषा से भेदभाव करती नहीं है। अपनी शुद्धता और पवित्रता को बरकरार रखते हुए मराठी ने अन्य भाषाओं के अनेक शब्दों को अपनी ममता में अंगीकार किया है। सर्व समावेशकता मराठी भाषा की विशेषता है। यह बात अन्य भाषाओँ को बोलने वालो को ध्यान में रखकर मराठी को अपनाना चाहिए। हमारी मराठी सभी को आनंद और मोह में डालने वाली है। जिस प्रकार से कवि गुरु ठाकुर लिखते हैं कुछ ऐसी हमारी मराठी है :

*अलवार कधी, तलवार कधी*
*पैठण सुबक नऊवार कधी*
*कधी कस्तुरीचा दरवळ दैवी*
*ती सप्त सुरांवर स्वार कधी।*

इसकी प्रतिष्ठा के लिए, उसका सम्मान रखने की जवाबदारी महाराष्ट्र के हर व्यक्ति की है। आने वाले समय में हम सभी साथ आकर इस जवाबदारी को निभाएं और मराठी के ध्वज को और ऊंचाइयों पर पंहुचायें। मराठी भाषा गौरव दिन के अवसर पर महाराष्ट्र के सभी नागरिकों को हमारी शुभकामनाएं और जिन कवि कुसुमाग्रज के जन्मदिन के अवसर पर यह दिन मनाया जाता है उन्हें भी विनम्र अभिवादन। इस दिन के अवसर पर इस अंक में हमने मराठी भाषा के संबंध में कुछ लेख प्रकाशित किये हैं। आशा है ये आपको पसंद आयेंगें।

शुभकामनाओं के साथ...

**सुभाष देसाई**
(अतिथी संपादक)

**महान संशोधक श्रीधर व्यं. केतकर, राजाराम शास्त्री भागवत, वि. का. राजवाडे, इरावती कर्वे, कृ. पा. कुलकर्णी, दत्तो वामन पोतदार, बि. ल. भावे, रा. भि. जोशी आदि ने अपनी खोजों के आधार पर कहा है कि महाराष्ट्री (मराठी) भाषा कम से कम अढाई हजार साल पुरानी है यह बात स्पष्ट रूप से नजर आती है। महाराष्ट्री –मऱ्हाठी भाषा का अढाई हजार साल की यात्रा का साधार प्रकाश में आना मतलब मराठी भाषा एक अभिजात भाषा है यह निर्विवाद रूप से सिद्ध होता है।**

# अभिजात मराठी ये लीजिये सबूत

**हरी नरके**

मराठी भाषा सलाहकार समिति की पहली ही बैठक में तात्कालीन मुख्यमंत्री ने मराठी भाषा को 'अभिजात भाषा' का दर्जा दिलाने के लिए सरकार द्वारा प्रयास किये जाने की घोषणा की थी। उस बैठक के दौरान चर्चा में इस सन्दर्भ में आगे के निर्णय में ध्यान रखा गया। High antiquity of its early texts/recorded history over a period of 1500-2000 years, -body of ancient literature / texts, which is considered a valuable heritage by generations of speakers. The literary tradition be original and not borrowed from another speech community.The classical language and literature being distinct from morden, there may be a discontinuity between the classical language and its later forms of its offshoots . मराठी भले ही दुनिया की दसवें नंबर की बोली जाने वाली भाषा हो लेकिन उसका जन्म २००० साल पहले नहीं हुआ है इस बात की वजह मराठी को अभिजात भाषा का दर्जा नहीं दिया जा सकता यह मुद्दा सामने आया। मराठी भाषा का जन्म उद्‌गम या विकास निश्चित रूप से कब हुआ इस बार में साल १९३३ में प्रकाशित हुई मराठी संशोधन मंदिर के संचालक कृष्णाजी पांडुरंग कुलकर्णी की पुस्तक 'मराठी भाषा उद्‌गम और विकास 'को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। उसमें उन्होंने कहा है कि सभी प्राकृत भाषा, अपभ्रंश व संस्कृत भाषा ने अपने अपने तरीके से मराठी भाषा को जन्म देने में सहयोग किया दिखाई देता है। अलग -अलग प्राकृत भाषा बोलने वाला अलग -अलग समाज समय के अनुसार आर्यावर्त से अनेक कारणों की वजह से

महाराष्ट्र में आया और यहीं बस गया। इनकी सम्मिश्रित बोलियों से ही मराठी भाषा बनी। महाराष्ट्र देश जिस तरह से गोपराष्ट्र, मल्लराष्ट्र, अश्मक, कुंतल, विदर्भ, कोंकण आदि छोटे -छोटे देशों से मिलकर बना और यंहा के लोग जिस तरह से अलग -अलग समूहों से मिलकर बने उसी तरह से मराठी भाषा भी अलग -अलग प्राकृत भाषाओं, विशेषतः महाराष्ट्री व अपभ्रंश के मिश्रण से बनी। महाराष्ट्र देश, मराठा समाज व मराठी भाषा का निर्माण ऊपर बताये गए घटनाक्रम के अनुसार ईसा पूर्व ६०० -७०० साल का है। (पृष्ठ -१६८ )

## विस्तृत विवेचन

कृ. पा. कुलकर्णी ने अपने ४९६ पृष्ठों के शोध ग्रन्थ में इस विषय पर वृहद रूप से खोज की है। इस विषय के हर पहलू को उजागर करने के लिए उन्होंने इस सन्दर्भ में विशेषज्ञों के ३२ मौलिक सन्दर्भ ग्रंथों का प्रयोग किया है। कुलकर्णी के मत के हिसाब से मराठी भाषा का जीवन १३०० –१४०० वर्षों का सिद्ध होता है। यदि ऐसा है तो फिर मराठी भाषा को अभिजात भाषा का दर्जा नहीं मिल सकेगा। इस सम्बन्ध में (१) डॉ. श्रीधर व्यंकटेश केतकर लिखित 'प्राचीन महाराष्ट्र ' खंड -१ व २, (२ ) हाल सातवाहनों के 'गाथा सप्तशती '- संपादक स. आ. जोगळेकर, (३)गुणाढ्य की 'बृहत्कथा 'व राजाराम शास्त्री भागवत, दुर्गा भागवत, इरावती कर्वे, वि. का. राजवाडे, वि. ल. भावे, रा. भी. जोशी आदि के ग्रंथों का अध्ययन कर क्या तस्वीर सामने आती है इस बात का प्रयास करते हैं।

'कथा सरित्सागर ' नामक इस महाग्रंथ का मराठी में अनुवाद श्री ह. अ. भावे ने भले ही किया हो लेकिन उनके पाँचों खण्डों की विस्तृत विवेचना व प्रस्तावना प्रसिद्द विदुषी दुर्गा भागवत ने की है। उस प्रस्तावना में कहा गया है कि बृहत्कथा की तुलना रामायण और महाभारत से की जा सकती है। प्राचीन भारत के साहित्य में एक जो परेशानी है वह यह कि अधिकाँश ग्रन्थ विलुप्त हो गए हैं और बहुत से जो मिलते हैं उनकी अवस्था बहुत जीर्ण -शीर्ण है। ऐसे ही विलुप्त ग्रंथों में गुणाढ्य की बृहत्कथा का भी समावेश था। बृहत्कथा का उल्लेख अनेक पुराने ग्रंथों में किये जाने की जानकारी आती है। बृहत्कथा से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सम्बंधित ग्रन्थ संस्कृत और प्राकृत भाषा में हैं। ये ग्रन्थ शैव और वैष्णव मत से निकले हुए हैं और जैन मत में भी ये ग्रन्थ उपलब्ध हैं।

उस समय भिन्न मतों द्वारा मान्य 'बृहत्कथा ' एक प्राचीन और लोकप्रिय ग्रंथ था इस बात में कोई शंका नहीं है। बृहत्कथा से प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्ध रखने वाले दो ग्रन्थ हैं। वे दोनों कश्मीर से हैं और ग्यारहवीं सदी में उपलब्ध हुए हैं। दोनों की भाषा संस्कृत और मत शैव है। पहला अंतरराष्ट्रीय प्रसिद्धि हांसिल करने वाला ग्रन्थ सोमदेव का 'कथा सरित्सागर ' तथा दूसरा क्षेमेन्द्र की 'बृहत्कथा मंजिरी ' है। ये दोनों ग्रन्थ श्लोकबद्ध हैं। कथा सरित्सागर का अनुवाद यूरोपीय भाषाओं में भी उपलब्ध है। लेकिन बृहत्कथा मंजिरी का केवल अंग्रेजी भाषा में अनुवाद मिला है और वह भी उसके कुछ हिस्सों का ही। ११ वीं सदी में सोमदेव शर्मा जो कि कश्मीर के राजा अनंत के दरबारी पंडित कवि थे ने अनंत राजा की रानी सूर्यवती को प्रभावित करने के लिए पैशाची भाषा में उस समय उपलब्ध बृहत्कथा से संस्कृत में कथा सरित्सागर की रचना की। दुर्गा भागवत कहतीं हैं कि, सोमदेव शर्मा ने ग्रन्थ के आरम्भ में इस बात का उल्लेख भी किया है कि उन्होंने इस ग्रन्थ की रचना गुणाढ्य की बृहत्कथा के आधार पर की है।

## प्राचीन महाराष्ट्र

डॉ. श्री. व्यं. केतकर इस ग्रन्थ के बारे में अपने 'प्राचीन महाराष्ट्र' ग्रन्थ में लिखते हैं कि, पैशाची का मुख्य विश्रुत ग्रन्थ कहा जाय तो बृहत्कथा ही है। वह कुरु युद्ध के बाद के इतिहास का संरक्षक है। इसकी वजह से प्रस्तुत ग्रन्थ में बृहत्कथा से एक पद्धति के अनुसार इतिहास का निष्कर्ष निकालने का प्रयास दिखाई देता है। ऐतिहासिक कथा सूत्रों की खोज के लिए अनेक प्रश्नों की विवेचना भी की गयी है। उनमें से एक प्रश्न बृहत्कथा के काल (समय) के संबंध में भी है। बृहत्कथा, अखिल भारतीय कथाओं का संग्रह होने की वजह से उसमें प्रतिष्ठान कथा व दक्षिणापथ कथा, कुंडीनपुर कथा होने से महाराष्ट्र का इतिहास जानने के लिए उस संग्रह का उपयोग करना चाहिए यह मालूम पड़ा। इस संग्रह को तैयार करने में वररुचि का योगदान होने की वजह से और वररुचि की महाराष्ट्र की भाषा में आद्य व्याकरण होने की वजह से वररुचि के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया गया।

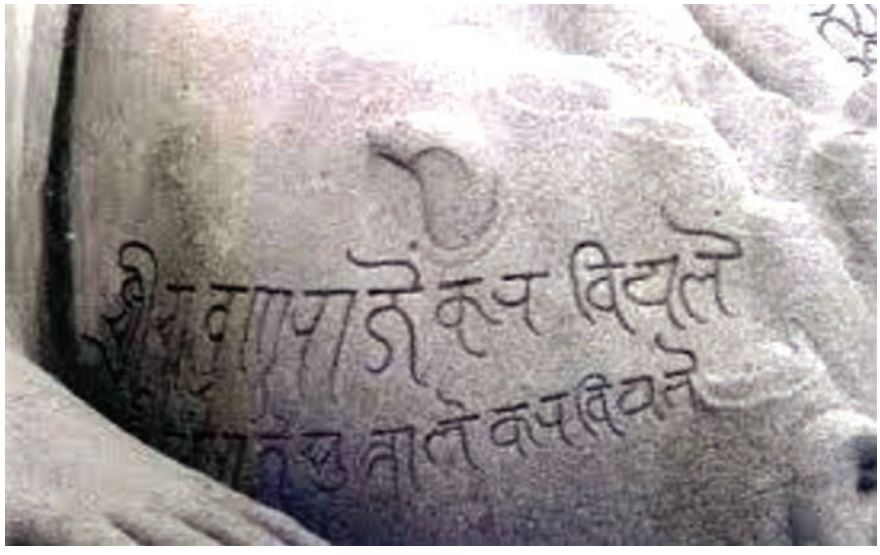

**श्रवण बेलगोल में गोमटेश्वर की मूर्ति के पांव के नीचे मराठी में उकेरा गया शिलालेख। 'श्री चामुंडाराये करवियले गंगाराये सुत्ताले करवियले ' यह प्राचीन भारत का सबसे पुराना मराठी भाषा का शिलालेख के रूप में जाना जाता है।**

वररुचि महाराष्ट्री विद्वान थे और उनका व्याकरण पाली या अर्ध मगधी इन भाषाओं के उदय के पूर्व का है, यह हमारा मत है। और पैशाची भाषा की प्रमुखता जिस समय में थी वह समय वररुचि के व्याकरण से निदेर्शित होता है। वररुचि के समय से पूर्व कुछ पीढियों तक पैशाची वाङ्मय भाषा थी। उस समय में महाराष्ट्री भाषा भी प्रगल्भ हो गयी थी और प्राकृत भाषा में वह प्रमुख थी यह भी स्पष्ट है। मराठी भाषा की इस प्रगल्भता का समय वररुचि से दो -तीन सौ साल पहले का है ऐसा कहना भी कोई गलत नहीं होगा। उसके आधार पर 'प्राकृत प्रकाश 'की उत्पत्ति का समय, चारों प्राकृत भाषाओं का व्याकरण होना और 'महाराष्ट्र 'शब्द अस्तित्व में होने की पूर्ण संभावना लगती है। अर्थात महाराष्ट्र के इतिहास का एक प्रकाशमान काल मतलब वररुचि और पाणिनी का काल था। इससे यह भी निष्कर्ष निकलता है कि वररुचि और पाणिनी के काल खंड में ज्यादा अंतर नहीं होकर दोनों करीब -करीब समकालीन थे और एक ही गुरु के शिष्य होने की संभावना भी उत्पन्न होती है। विद्वानों के काल खण्डों को लेकर जो संग्रह बनाया गया है उसमें कथापीठ लंबक का अलग से समावेश भी हुआ होगा। कथा पीठ लंबक की रचना का काल मौर्य काल के प्रारम्भ का होना चाहिए ऐसा हमारा मत है। (पृष्ठ ११-१२).

वे कहते हैं कि महाराष्ट्र शब्द और भाषा वररुचि के समय में थी और वररुचि के काल में ही यह भाषा संवर्धित भी हुई थी। वररुचि का काल ईसा से ८०० या ६०० साल पूर्व का भी मानकर चलें तो भी महाराष्ट्र की यह स्वतंत्र भाषा उससे दो सौ से तीन साल पूर्व विकसित होनी चाहिए। यानी महाराष्ट्र के आद्य विकास का कालखंड ईसा पूर्व की पहली सहस्राब्दी से पूर्व का माना जाए तो यह कालखंड ईसा पूर्व दूसरी सहस्राब्दी तक जाता है। और इस भाषा का नामकरण महा और रठ्ठ को जोड़कर ईसा पूर्व दूसरी सहस्राब्दी में हुआ होगा ऐसा लगता है। अश्मक राजा कुरु का युद्ध शुरु हुआ और कुरु युद्ध के बाद से अश्यमकों की निरंतरता है। महा और रठ्ठ का एकीकरण और अश्मक राजा की निरंतरता का सम्बन्ध लगाने के प्रयास अवश्य होते हैं। अश्मक राज्य शुरु होने से पहले रठ्ठों का प्रसार होकर महाराष्ट्र बना होगा और उनकी संयुक्त जनता में अमक राजकुल भी उत्पन्न हुआ होगा, इस प्रकार का इतिहास दिखाई देता है। (पृष्ठ १३ )

## हाला की सप्तशती

डॉ. केतकर हाला की सप्तशती के बारे में कहते हैं कि यह महाराष्ट्र का अत्यंत प्राचीन वाङ्मय है। इसमें यह दिखाई देता है कि उस समय का प्रमुख जनपद हलिक था। गोदा तट और विंध्य पर्वत इन दोनों ही प्रदेशों का वाङ्मय में उल्लेख मिलता है। भाषा का नाम प्राकृत अधिक प्रिय था। (पृष्ठ २६ ) केतकर का अनुमान है कि सातवाहनो के समय में अपभ्रंश भाषा का उदय हुआ होगा। इसका कारण वे बताते हैं कि सातवाहनों के दौर में

**नेवासे स्थित स्तंभ पर संत ज्ञानेश्वर की ज्ञानेश्वरी लिखी हुई है।**

अपभ्रंश भाषा होने का उल्लेख बृहत्तकथा में भी मिलता है।

राजाराम शास्त्री भागवत का निवडक साहित्य दुर्गा भागवत ने संपादित किया है जिसके पहले खंड में मराठों के संबंध में चार उदगार इस विषय पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं। राजाराम शास्त्री भागवत कहते हैं 'महाराष्ट्र शब्द बहुत पुराना है। मगध में जब नंदों का राज्य हुआ करता था, यानी शालिवाहन, शकों के पहले करीब चार सौ साल पहले वररुचि नाम के एक विद्वान हुआ करते थे। उन्होंने 'प्राकृत प्रकाश ' नाम से प्राकृत भाषा यानी संस्कृत नाटक में बाल भाषा का व्याकरण किया है। उस व्याकरण के अंत में 'शेषं महाराष्ट्रीवत् 'लिखा है। अशोक ने महाराष्ट्र देश में धर्मोपदेश देने के लिए कुछ बौद्ध भिक्षु भेजे थे जिसका जिक्र बौद्ध लोगों की दंतकथाओं में मिलता है।

**नंदों के बाद चन्द्रगुप्त ने राज्य किया। चन्द्रगुप्त के बाद उसका बेटा बिन्दुसार गद्दी पर बैठा। बिन्दुसार के बाद उसके बेटे प्रियदर्शी या अशोक को गद्दी मिली। इन वर्णनों के हिसाब से यह कहना गलत नहीं होगा कि करीब करीब २२ सौ वर्ष पूर्व का शब्द है 'मरहट्ठ' या महाराष्ट्र।** (पृष्ठ ७ व ८) बाकी सभी मऱ्हाठी भाषा की तरह शौरसेनी भाषा के नियम हैं यह समझना चाहिए। इस सूत्र का अर्थ यह है कि जिसे हम बाल भाषा कहते हैं उसके पूर्व के समय में शौरसेनी हुआ करती थी। शूरसेना मतलब मथुरा मंडल प्रान्त की पहले की भाषा जिसे शौरसेनी कहते थे। ऊंची जाति की कुलीन महिलायें जो भाषा प्राचीन नाटकों में बोलती थी वह 'शौरसेनी' नाटक कहे जाने पर हूबहू चित्रित होती है। जब संस्कृत में नाटक होने लगे थे उसमें उच्च जाति कुलीन महिलाओं की भाषा 'शौरसेनी ' होती थी इस बात में जरा भी शक नहीं है। इस शौरसेनी भाषा का एक रूप जैसे संस्कृत था वैसे ही दूसरा रूप महाराष्ट्री उर्फ़ अति प्राचीन मऱ्हाठी थी, ऐसा कात्यायन का कहना है। शौरसेनी से ही मगधी और पैशाची नामक बाल भाषाएँ निकली हैं।

मगध, मतलब गया और पटना के आसपास का मुल्क। उस देश की जो पहले की भाषा थी वह मगधी। पंजाब वगैरा प्रान्त में रहने वाले लोगों का 'पिशाच 'प्राचीन नाम

दिखाई देता है। कर्ण पर्व में लिखा गया है कि बाल्हिक यानी बल्क, बुखारा व समरकंद आदि ठिकाने के लोग पिशाचों के वंशज हैं। इन लोगों की पहले की भाषा पैशाची थी। शौरसेनी से ही मगधी और पैशाची निकली। कात्यायन कहते हैं कि जैसी संस्कृत वैसी ही मऱ्हाठी थी। इसलिए यदि सभी बाल भाषाओं का मूल प्राचीन मराठी ही है। यह यदि अवधारणा बनायी जाए तो कोई प्रत्यवाय नहीं। 'गाथाओं की भाषा महाराष्ट्री ' अलंकार के रूप में यह कहा जाता है। गाथा शब्द 'गै ' धातु से आया है। 'गाथा 'शब्द से प्रायः आर्य या गीति संस्कृत समझी जाती है। इन अलंकारों के नियमों से गानों की भाषा प्राचीन काल में 'महाराष्ट्रीय' ही होती थी ऐसा कहना पड़ेगा। तब सभी बाल भाषाओं की प्रकृति व गाने प्राचीन काल की जिस भाषा में होते थे वह 'मऱ्हाठी' भाषा ही थी। शौरसेना की प्रकृति संस्कृत की थी यह कात्यायन ने शुरु में ही कहा था।

ऐसा होते हुए आखिर में 'शेषं महाराष्ट्रीयवत्' में कात्यायन पुनः बोलता है। उसके पक्ष के अनुसार 'महाराष्ट्री ' व 'संस्कृत 'इन दोनों ही भाषाओं में परस्पर निरपेक्षता दिखाई देती है। मूल शब्द जो देखा गया है वह 'पाअड' है। 'पाअड' शब्द का नजदीकी शब्द संस्कृत में 'प्रकट ' है। यानी 'पाअड भाषा ' =प्रकट भाषा। यानी लोगों के व्यवहार और कामकाज में जो भाषा चलती थी वह थी 'पाअड भाषा '. संस्कृत भाषा थी, धर्म की भाषा अर्थात धर्म प्रसार करना जिनके हाथों में था ऐसे 'ब्राह्मण ' समाज की। अर्थात वह सामान्य लोगों की भाषा नहीं थी। लेकिन 'पाअड भाषा ' बहते पानी की तरह थी और सभी के जीवन से और सबका सम्बंध उसके साथ था। सामान्य रूप से वही 'पाअड' सभी के द्वारा समझे जाने वाली, ऐसा उसका नाम पड़ा। तथा धर्म भाषा संस्कृत मतलब, थोड़े से विद्वान ब्राह्मणों ने मिलकर अपने बुद्धि प्रभाव से 'सँवारी हुई भाषा 'जिसका नाम ब्राह्मणी ही पड़ गया। कुछ काल के बाद 'संस्कृत 'शब्द से मेल दिखे इसलिए 'पाअड 'शब्द का प्रकट रूप नहीं करते हुए 'प्राकृत 'में रूपांतर किया हुआ दिखाई देता है। इसकी वजह से प्राकृत शब्द संस्कृत में हर रोज दिखाई देने वाला यानी 'क्षुल्लक 'इस अर्थ में लिया जाने लगा। 'शिक्षा 'नाम से वेद का एक हिस्सा है जिसमें 'प्राकृते संस्कृते चापि '(प्राकृत भाषा व संस्कृत भाषा में ) ऐसा उल्लेख किया गया है। इसके अपेक्षा प्राचीन काल में भी 'प्राकृत 'को एक स्वतंत्र भाषा के रूप में समझने वाला समाज बहुत दिनों से था, यह पता चलता है। उस समय 'महाराष्ट्री ',शौरसेनी, मगधी व पैशाची ये सभी जितनी 'पाअड ' भाषा थी वे 'प्राकृत' हो गयी और इस प्राकृत भाषा का 'प्राकृत प्रकाश ' नामक सूत्रमय व्याकरण कात्यायन ने पहली बार लिखा। ऊपर लिखी गयी पाँचों भाषा 'पाअड ' भाषा जितनी ही सबसे प्राचीन और सबकी प्रकृति 'महाराष्ट्री ' उर्फ़ प्राचीन मऱ्हाठी। महाराष्ट्री से निकली शौरसेनी व शौरसेनी से कालान्तर में निकली मगधी व पैशाची इन दोनों ही भाषाओं का प्राचीन मराठी से नाता था। शौरसेनी की असली मां यदि कहा जाय तो व प्राचीन मऱ्हाठी भाषा। (पृष्ठ १२-१३ )

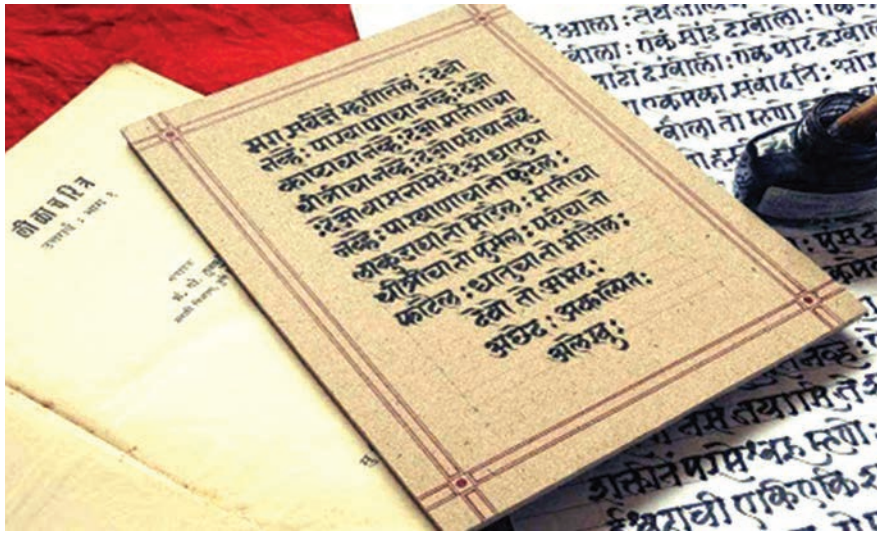

## महत्वपूर्ण सबूत

प्राचीन मराठी मे १) गाथा सप्तसती, २) प्रवर सेना के सेतु काव्य, ३) गौड वध, ४) राजशेखर की कर्पूरमंजरी ग्रन्थ और गुणाढ्य के पैशाची भाषा में बृहत्कथा ग्रन्थ महत्वपूर्ण सबूत थे। नन्द के समय के शालिवाहन का गुणाढ्य प्रमुख था। उस ग्रन्थ का विवरण संस्कृत के दो श्लोकमय अनुवाद में विद्यमान है। श्रीलंका के महावंश, पाली भाषा में सिंहली लिपि के ग्रन्थ में अशोक द्वारा बौद्ध भिक्षु महाराष्ट्र में भेजने का उल्लेख है। भवभूति के दो सौ साल बाद राजशेखर हुआ। वह महेन्द्रपाल राजा के पास आश्रय में था। वो स्वयं को महाराष्ट्र चूडामणी के रूप में कहलाता था।

इरावती कर्वे ने अपने ग्रन्थ मराठी लोगों की संस्कृति में कहा है, पश्चिम की तरफ से शक व महाराष्ट्र में सातवाहन आने से पहले महाराष्ट्र की भूमि पर संस्कृत या संस्कृत से उद्भव होने वाली भाषा की उत्पति हो चुकी थी और इसलिए बाहर से आने वाले राजाओं ने द्रविड भाषा की बजाय महाराष्ट्री (संस्कृत प्राकृत अवतार) को आत्मसात किया (पृष्ठ क्र. २०३)। पूरे भारत की संस्कृति जिस काव्य में वर्णित की गयी वह वैदर्भी रीति में थी, इससे विदर्भ में संस्कृत परंपरा का स्थान पता चलता है।अपरान्त की तरह ही विदर्भ भी अति प्राचीन आर्य (संस्कृत बोलने वाली) बस्ती थी। ये दोनों ही बस्तियां वन्य प्रदेश में विकसित हुई। संस्कृत द्रविडों से लडाई करके नहीं, पहले प्रख्यात वैदर्भी का नाम लोपामुद्रा है। यह नाम आर्य नहीं है। यह लोपामुंडा का रूप तो नहीं है? मुंड लोगों की राजकुमारी लोपा उसका अर्थ होगा। मुंडा का नागों से सम्बन्ध था और

इस बात के बौद्ध वाङ्मय में सबूत भी मिलते हैं। कौशल के राजा पसेनदी का मन था कि बौद्धों के घराने में शादी कर उनका रिश्तेदार बना जाय। वासभखत्तिया के विवाह से जन्मे विदुडभ ने पूरे शाक्य कुल का नाश किया था। यह कथा पाली वाङ्गमयमें बतायी गयी है। ईसा पूर्व ५०० से ६०० साल पहले की यह कथा है। इसका मतलब उस समय नाग व मुंड एक होते थे ऐसा दिखाई देता है। (पृष्ठ क्र. २१३ व १४) इरावती कर्वे ने इस सन्दर्भ में आगे अधिक जानकारी देते हुए लिखा है कि महाराष्ट्र के राजा सातवाहन थे। महाराष्ट्र के इन सातवाहन राजाओं ने प्रतिष्ठान यानी पैठण में राज्य किया था। प्राकृत भाषा को बढाया साथ ही साथ मराठी भाषा को भी जन्म देने में मदद की । महाराष्ट्र के अधिकाँश संत कवियों का जन्म मध्य महाराष्ट्र में ही हुआ और वर्तमान में जो मराठी भाषा है उसका स्वरूप उन्होंने ही निधार्रित किया। अश्मकों के सबसे प्रसिद्द राजा मतलब प्रतिष्ठान के सातवाहन ही थे। उनसे पहले प्रतिष्ठान का नरसिंह नाम का राजा हुआ करता था। इस बात का उल्लेख सोम स्वामी की कथा सरित्सागर में मिलता है। इस कथा के बारे में श्रीधर व्यं. केतकर ने प्राचीन महाराष्ट्र का इतिहास लिखा है। सातवाहनों को संस्कृत की जानकारी नहीं थी, उन्होंने प्राकृत भाषा को आश्रय दिया। उन्होंने मऱ्हाठी नाम के मांडलिक राजा से विवाह सम्बन्ध जोड़ा, इसका उल्लेख दन्त कथाओं व शिलालेखों में दिखाई पड़ता है। सातवाहन, चालुक्य, राष्ट्रकुट व यादव इन वंशों ने महाराष्ट्र पर एक के बाद एक राज्य किया। महाराष्ट्र में बौद्धों की गुफाएं सातवाहनों, वाकाटक व चालुक्यों के कार्यकाल के दौरान की हैं। उन पर सभी लेख प्राकृत भाषा में ही लिखे हुए हैं।

लीलावती नामक अपभ्रंश भाषा में लिखे गए काव्य में सुप्रसिद्ध बौद्ध पंडित नागार्जुन, हाला का मित्र और हितोपदेशक था -ऐसा कहा जाता है। शिलालेखों में उनके सम्बन्धी रट्ठ व महारठ के नाम भी हैं। इस बात को उद्धृत करने वाले शिलालेख पश्चिम महाराष्ट्र में हैं। आंध्र व कर्नाटक जैसे दो संस्कृत संपन्न राष्ट्रों से बराबरी कर मराठी ने अपनी दक्षिणी सीमा को निधार्रित किया। यही नहीं मराठी भाषा को कर्नाटक के मूल तक पंहुचायी। इसके अनेक सांस्कृतिक कारण हैं। प्रख्यात सूत्रकार बौद्धायन व आपस्तंभ दक्षिण के ही थे। बृहत्कथा में अपाणनीय नामक इंद्रादी व्याकरण का उल्लेख मिलता है जो दक्षिण में रची गयी होगी ऐसा प्रतीत होता है।

चालुक्य और राष्ट्रकुट दोनों ही जैन अनुयायी थे और उनके आश्रय में बड़ी संख्या में जैन ग्रन्थ महाराष्ट्र में लिखे गए। पुष्पदंत का हरिवंशपुराण, राष्ट्रकुट राजाओं के अधीन मान्यखेड (मालखेड) में रचा गया है। कर्नाटक

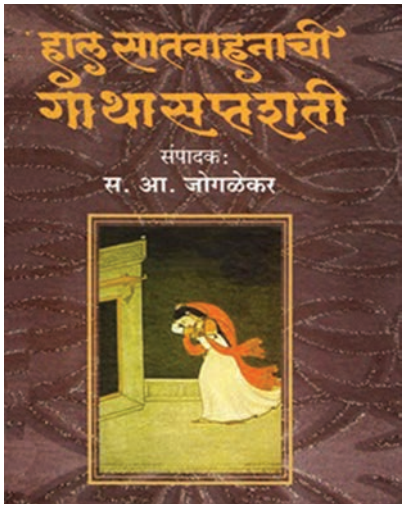


में महाराष्ट्री भाषा में ग्रंथों की रचना राजा के आश्रय में ही होती थी, ऐसा स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। श्रवण बेलगोल का शिलालेख मराठाओं की आक्रामक राजसत्ता का प्रतीक नहीं अपितु जैनों के धर्म प्रसार का प्रतीक है। मध्ययुग में मराठी की जननी यानी महाराष्ट्री ही थी। जिसका वर्चस्व दक्षिण तक था और उसमें उत्तम ग्रन्थ लिखे जाते थे। कोऊहल कवि ने लीलावती नामक जो काव्य लिखा है वह मरहट्ठ देश में लिखने की बात उसने स्वयं उल्लेखित की है। इस काव्य को लिखने का काल ईसा बाद ८०० साल का हो सकता है, यह बात दूसरी सदी से सप्तसती हाला तक मिलती है। इनमें से एक सातवाहनों की (ईसा पूर्व के सातवाहनों की) रानी पंडिता भी थी। वह राजा से विनोद (हास्य) के रूप जो संस्कृत भाषा बोलती है वह राजा को समझ में नहीं आती है। इस पर रानी हंसती है और राजा इसे अपना अपमान मानकर चला जाता है। राजा ६ महीने में भाषा सीखने का निश्चय करता है और वह जो भाषा सीखता है वह थी प्राकृत भाषा। यह वर्णन बृहत्कथा के प्रारम्भ में आता है और उसमें वररुचि का नाम प्रमुखता से आता है। बृहत्कथा में दुनिया के कथा मराठी वाङ्मय के प्रौढत्व के, स्वयं सिद्धता के बीज भी इस प्राकृत वाङ्मय में हैं। बृहत्कथा के मुकाबले में दुनिया का कोई भी कथा वाङ्गमय नहीं है। हाला की सप्तसती में काव्य भी लोक वाङ्गमय हैं। यह किसी राजा के राज कवि द्वारा लिखा हुआ नहीं अपितु महाराष्ट्र में प्रचलित लोकप्रिय काव्यों का संकलन है। इसमें राज दरबार के वर्णन की बजाय, गांव-गांव के पाटिलों और उनकी बहुओं की कथाओं यानी ग्रामीण जीवन का चित्र दिखाई देता है। लीलावती नामक अद्भुत कथा हाल राजाओं के बारे में है। उसमें भी महाराष्ट्र का प्राण यानी प्रतिष्ठान नगर और वंहा की गोला उर्फ़ गोदावरी नदी और उसमें नहाने वाली अंगों पर हल्दी लगाए हुए महाराष्ट्र सुंदरी का वर्णन मिलता है। यह कवि अपनी भाषा को मरहठ देसी भाषा का नाम देता है। (पृष्ठ २२३-२६ ). दुर्गा भागवत ने राजाराम शास्त्री भागवत के संशोधन का निष्कर्ष निकालते हुए कहा है कि पुरानी महाराष्ट्री भाषा संस्कृत की अपेक्षा ही पुरानी और सही है। (पृष्ठ २ )

महान संशोधक श्रीधर व्यं. केतकर, राजाराम शास्त्री भागवत, वि. का. राजवाडे, इरावती कर्वे, कृ. पा. कुलकर्णी, दत्तो वामन पोतदार, बि. ल. भावे, रा. भि. जोशी आदि ने अपनी खोजों के आधार पर कहा है कि महाराष्ट्री (मराठी) भाषा कम से कम अढाई हजार साल पुरानी है स्पष्ट रूप से नजर आती है। महाराष्ट्री -मऱ्हाठी भाषा का अढाई हजार साल की यात्रा का साधार प्रकाश में आना मतलब मराठी भाषा एक अभिजात भाषा है यह निर्विवाद रूप से सिद्ध होता है।

**लोकराज्य जनवरी-फरवरी २०१२ से पुनमुर्द्रित**

# मराठी हृदय और मन की

**वैश्वीकरण की वजह से मानव जीवन में आमूलचूल बदलाव हो रहे हैं। इसी पार्श्वभूमि में यदि मराठी बोली –भाषा के सन्दर्भ में विचार किया जाय तो यह भाषा आने वाले दिनों में अड़चन में आती दिखने के आसार नजर आ रहे हैं। महाराष्ट्र के राजनीतिक काल खंड को देखें तो यंहा के सामाजिक जीवन में बड़े पैमाने पर बदलाव होता आया है और इतिहास इस बात का गवाह है। वर्तमान में हम 'ग्लोबल समय' का अनुभव ले रहे हैं। वैश्वीकरण की व्यापक प्रक्रिया में दुनिया बहुत सिमटती जा रही है। इसकी वजह से समाज, व्यक्ति और भाषा के बीच संबंधों में नए बदलाव होते दिख रहे हैं। राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनेक बोलियां व भाषाएँ तेजी से विलुप्त हो रही हैं।**

**डॉ. वैजनाथ अनमुलवाड**

आज के समय में अंग्रेजी जैसी ज्ञान भाषा को केंद्र में रख प्रमुखता से व्यवहार किया जा रहा है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेजी भाषा और उसका प्रभुत्व कितना व्यापक है इस बात की मीमांसा अनेक अभ्यासकों ने अलग-अलग रूप से की है। इनमें से एक डॉ. प्रकाश परब कहते हैं एक तरफ अंग्रेजी जैसे भाषा साम्राज्यवादी इतिहास, विज्ञान, तकनीक, उद्योग आदि क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय व्यवहार की वजह से अंतरराष्ट्रीय संपर्क भाषा के रूप में तेजी से बढ.रही है। दूसरी तरफ सैकड़ों भाषा या बोलियां हाशिये पर जा रही है। बदली हुई आर्थिक नीतियों की वजह से व जीवन संघर्ष की वजह से समाज की भाषा चयन व भाषा वृत्ति पर भी परिणाम होता दिख रहा है। इससे यह बात ध्यान में आती है कि हमारी भाषा के सम्प्रेषण की, भौतिक प्रगति का साधन नहीं उसके आगे भी उसको एक सामाजिक, सांस्कृतिक भूमिका है। भारतीय भाषाओँ और बोलियों के बारे में डॉ. गणेश देवी के भाषाओं के सन्दर्भ में किये गए कार्यों का उल्लेख करना ही पड़ता है। उन्होंने 'भारतीय भाषाओं का लोक सर्वेक्षण ' नामक पुस्तक में लिखा है कि १९५१ की जनगणना में ७८२ भाषा व बोलियों का पंजीयन किया गया था। १९६१ की जनसँख्या में यह आंकड़ा १६५२ तक पंहुच गया था। उनसे पहले इस बारे में सर जार्ज ग्रिअर्सन की किताब 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ़ इंडिया '(१९०३-१९२३ ) में १९ वीं सदी के अंतिम दशक में भारत को लेकर जो जानकारियां एकत्र की गयी थी। उसमें उस समय भारत में १७९ भाषाएँ और ५४४ बोलियां अस्तित्व में होने की बात कही गयी है। १९२१ की जनगणना के अनुसार उस समय भारत में १८८ भाषाएँ और ४९० बोलियां थी। किसी देश में भाषाओँ का मामला कितना पेचीदा होता है यह उपरोक्त उदाहरणों से समझ में आता है। दुनिया में यदि किसी भाषा को बोलने वाले संचित नष्ट हो जाते हैं तो उस भाषा की हजारों साल से अभिव्यक्त होने वाली लोक संस्कृति नष्ट हो जाती है। साथ साथ विपुल ज्ञान भी नष्ट हो जाता है।

## बदलता समय और बोली भाषा

आज के बदलते समय में अनेक क्षेत्रों में जो आमूलचूल बदलाव हो रहे हैं, उसी रूप में बदलाव भाषा में भी हो रहे हैं। बोली -भाषाओं के सन्दर्भ में यह बदलाव तेजी से होता हुआ दिखाई दे रहा है। वर्तमान में दुनिया में मौजूद छह हजार में से करीब तीन हजार भाषाएँ इस सदी के अंत तक विलुप्त हो जाएंगी ऐसी आशंकाएं जताई जा रही हैं और इस पर सार्वजनिक रूप से चर्चाएं हो रही हैं। इस अनुमान से भाषाओं की आज की स्थिति देखें तो हर दो सप्ताह में एक भाषा की मौत हो रही है। आज दुनिया में ५०० भाषाएँ ऐसी हैं जिनके बोलने की संख्या १०० से भी कम हैं। १५०० भाषाएँ ऐसी हैं जिनके बोलने वालों की संख्या एक हजार है। ३००० ऐसी भाषाएँ हैं जिनके हर एक के करीब १०००० ही बोलने वाले शेष बचे हैं। बोली -भाषा को नष्ट होने की यह वास्तविकता कितनी भीषण है यह इन आंकड़ों से पता चल रहा है। भविष्य में भाषाओं के विलुप्त होने की तस्वीर और अधिक अंधकारमय होने वाली है इस आशंका से नकारा नहीं जा सकता। बदलते हुए समय में बोली -भाषा के अस्तित्व को बचाकर रखना है तो उन भाषाओं को बोलने वाले लोगों को जीवित रखना होगा भाषा जीवित रखने के लिए लोग भी जीवित रखने पड़ते हैं। इसका कारण यह है कि पीढियों से चली आ रही संस्कृति के विभिन्न अंगों का दर्शन बोली -भाषा के माध्यम से घढता रहता है, लेकिन बोली -भाषा का

अभ्यास कभी कभी ही किया जाता है। लेकिन इस बात भी है कि बोली -भाषा का विकास या उसके ह्रास के लिए वह भाषा या बोली, बोलने वाले लोग भी जवाबदार होते हैं। कोई भी प्रगत भाषा, सामाजिक उपेक्षा की वजह से पीछे हो सकती है। इसी तरह से उपेक्षित भाषा सही नियोजन और योग्य मार्ग की वजह से प्रगति पथ पर भी चल सकती है। हिब्रू, कोंकणी आदि भाषा इसके उदाहरण हैं। ऐसा भी कहा जा सकता है कि आर्थिक, प्राकृतिक आपत्ति के साथ साथ सामाजिकऔर मानव शास्त्र भी जवाबदार रहती हैं। आज के समय में भारत में जो भाषाएँ प्रचलित हैं उनमें से ८७ भाषाओं में समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं। ७१ भाषाओं में रेडियो कार्यक्रम प्रसारित होते हैं और १५ भाषाओँ में फ़िल्में बनती हैं। इन भाषाओं पर अधिक बल देने की जरूरत है।

## महाराष्ट्र की बोली भाषा

महाराष्ट्र की भौगोलिक रचना में बदलाव के अनुसार भाषा के अलग -अलग रूप दिखाई देते हैं। उदाहरण के रूप में अहिराणी, आगर, कोहली, खानदेशी लेवा, संदगडी, झाडी, तावडी, पोवारी, मालवणी, वाढवळी, सामदेवी और संगमेश्वरी। इनके अलावा आदिवासी जनजातियों की करीब २३ बोली -भाषाएँ, भटकन्तु जातियों की १६। यही नहीं भौगोलिक क्षेत्र के हिसाब से नागपुरी, नगरी, कोल्हापुरी, सातारी, मराठवाडी, चंदगडी, कोंकणी आदि भाषाएँ हैं।

बदलते समय और परिस्थितियों में स्थानीय भाषिकों के कार्य -कलापों की संकल्पना उनकी ही भाषा से व्यक्त करने की क्षमता दिन -प्रतिदिन कम होती जा रही है। शब्द वैभव, पारम्परिक ज्ञान, शाब्दिक कला का प्रयोग, मिठास आदि विशिष्टता केवल बोली -भाषा में ही मिलती है। उनका असर प्रमाण भाषा में कैसे आएगा ? बोली भाषा का यह वैशिष्ट्य मानकर भी लोगों को अलग -अलग कारणों से अन्य भाषाएँ सीखनी पड़ती है। यदि ऐसा होता तो एक से अधिक भाषाओं को सीखने की बौद्धिक सामर्थ्य उसे प्रकृति से मिल जानी चाहिए थी। लेकिन अपनी भाषा छोड़ दूसरों की भाषा सीख कर हमारा कल्याण हो सकता है, ऐसी समझ समाज में तेजी से फ़ैल रही है। इसकी वजह से बोली भाषा या स्व भाषा की स्थिति खराब होती जा रही है।

'भाषा' और 'बोली' में हम हमेशा ही फर्क करते हैं। यानी 'प्रमाण भाषा' और 'बोली भाषा' इसे विभक्त करने वाली एक रेखा है इस बात को मानते हुए हम इस रेखा को और गहरी करते रहते हैं। इस प्रकार की निर्णायक भूमिका की वजह से 'प्रादेशिक बोली भाषाओं' की स्थिति अधिक गंभीर बनती जा रही है। सामाजिक भेद रेखा की विषमता की वजह से बोली भाषा की गति में प्रगति नहीं होने के संकेत स्पष्ट रूप से प्रतीत हो रहे हैं। इस सन्दर्भ में गणेश देवी का एक उदाहरण देखते हैं। 'जब एक समाज को

ऐसा लगने लगता है की उसके उदर निर्वाह के लिए दूसरी भाषा में शिक्षा हांसिल करना जरूरत बन गया है तब वह समाज नयी भाषा की परिस्थिति को स्वीकार करने का निर्णय करता है। 'और इस वजह से आज की दुनिया में भाषिक विरासत का ह्रास हो रहा है ? और यह प्रक्रिया भाषिक संहार को गति दे रही है क्या ? इस बात का विचार करना अब हमें प्रासंगिक सिद्ध होगा। और यदि ऐसा हो रहा है तो मानवी भाषाओं का भविष्य संकट में है, इस बात को मान्य करना होगा। सांस्कृतिक स्तर पर जो समाज पहले से ही अल्प संख्यक हैं स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर जो समाज कमजोर हैं, जिन समाज की आवाज पहले ही क्षीण हो चुकी है, ऐसे समाज भाषा संहार के पहले शिकार होंगे यह स्पष्ट है। इन परिस्थितियों से आज की बोली और बोली भाषिकों की स्थित ध्यान में आती है। प्रमाण भाषा का उदय, बोली भाषा से ही होता है। प्रमाण भाषा पर विश्वास रखने वालों को बोली -भाषा को उपेक्षित नहीं करना चाहिए। उनका योग्य संवर्धन और जतन किया तो ही प्रमाण भाषा और अधिक समृद्ध होगी, इस बात में कोई शंका नहीं है।

महाराष्ट्र में 'भाषिक जाति ' निर्माण होने की पुरानी परंपरा है। वैश्वीकरण को स्वीकारने के बाद 'अंग्रेजी ' बोलने वालों का एक नया वर्ग तैयार हो गया है। बड़ी नौकरियों पर उन्होंने कब्जा जमा लिया है। इस वर्ग को बोली भाषा, संस्कृति या मराठी का कभी अभिमान नहीं रहता है। उनके बच्चे अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा ग्रहण करते हैं। बोली भाषा या मातृ भाषा बोलने वालों के बच्चे केवल मराठी भाषा माध्यम से शिक्षा हांसिल करते हैं। इस वर्ग में गरीब मजदूर, किसान, श्रमिक आदि के बच्चों का समावेश बड़े पैमाने पर होता है।

'अंग्रेजी ' भाषा को सम्मान और मराठी भाषा को दूर करना यह बात गरीबों के लिए फायदे की नहीं है। लोकतंत्र में लोकभाषा को महत्व या विदेशी भाषा को ? लेकिन अपना कब्जा जमाये रखने के लिए लोकतंत्र की लोकभाषा को बलि देने वाले बहुत से लोगों का समूह तैयार हो गया है। इन लोगों का यह कब्जा ख़त्म करना ही चाहिए। भाषा को बचाना या उसका जतन करने का काम किसी पुरातन अवशेष को बचाने जैसा नहीं है। रोजाना के व्यवहार में उसका अधिक से अधिक उपयोग करना, वह अधिक गुणवत्तापूर्ण बने इसके लिए भाषा विकास प्रक्रिया को गतिमान करना, योग्य नियोजन करना यह हमारा प्रमुख कर्तव्य होना चाहिए। आज राज्य सरकार ने भाषा विकास के लिए कदम उठाये हैं यह बात मराठी बोलने वाले के लिए महत्वपूर्ण है ऐसा कहा जा सकता है। स्वतंत्र मराठी भाषा विभाग। भाषा महानिदेशालय, राज्य मराठी विकास संस्था, विश्वकोश निर्मिति मंडल, साहित्य और संस्कृति मंडल जैसे उपक्रमों से भाषा को और अधिक समृद्ध करने के ठोस प्रयास किये जा रहे हैं। परिचय ग्रन्थ, बोली अकादमी इनके अलावा साहित्यकारों को माध्यम से भी मराठी या प्रादेशिक बोली भाषा

## वातावरण और बोली भाषा

भौगोलिक परिस्थितियों व वातावरण के अनुसार भी बोली भाषा का रूप बदलता है। उदाहरण के तौर पर समुद्र तट के किनारे रहने वाले लोगों की भाषा लम्बे वाक्यों की होती है। पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले लोग कड़क शब्द बोलते हैं जबकि ठंडे प्रदेशों के लोग मुलायम और मीठी भाषा बोलते हैं। हम बोलते हैं कि 'दस कोस पर भाषा बदलती है ', दरससल सिर्फ भाषा में ही यह बदलाव नहीं होता, वंहा के पत्थर, पहाड़, जमीन, हवा, पानी, फसल, अन्न के स्वाद इन सभी में कुछ अलग दिखाई देता है। और इनका असर भाषा पर अपने आप होता है।

वर्तमान में विविध चित्रपट या नाटकों में या दूरदर्शन पर दिखायेजाने वाले विविध कार्यक्रमों में भाषा के साथ बड़े पैमाने पर छेड़छाड़ होती दिखाई देती है। एक चैनल (चित्रवाणी ) पर खाद्य पदार्थ के कार्यक्रम में मराठी भाषा के सन्दर्भ में एक उदाहरण का जिक्र यंहा करते हैं, एका चित्रवाणीवरील खाद्यपदार्थ कार्यक्रमातील मराठी भाषेच्या संदर्भातील एक उदाहरण पाहू. 'चिप्स मीडियम फ्राय करून लाइट रेड कलर आला की त्यात ग्रीन चिलीचे बारीक पिसेस मिक्स करायचे, कोरियांडर किंवा दुसऱ्या कोणत्याही ग्रीन व्हेजिटेबलचे टेंडर लीव्झ टॉपवर डेकोरेशनसाठी जेन्टली स्प्रेड करायचे आणि थोडा म्हणजे हाफ स्पूनफुल लाइम ज्यूस स्प्रिंकल करून सर्विंग बाऊलमधून सर्व करायचे...' ही आजच्या मराठी भाषेची स्थिती आहे. (जिसका हिंदी में भावार्थ इस प्रकार है 'चिप्स मीडियम फ्राई करके, उसका लाइट रेड कलर आये कि उसमें ग्रीन चिली के बारीक पिसेस, कोरिएंडर या कोई और ग्रीन वेजिटेबल की टेंडर लीव्ज टॉप पर डेकोरेशन के लिए जेन्टली स्प्रेड करना है। थोड़ा यानी हाफ स्पून लाइम जूस स्प्रिंकल कर सर्विंग बाउल में सर्व करना है...') यह आज की मराठी भाषा की स्थिति है। किसी भाषा का रूप सौंदर्य बदला कि उसकी क्या स्थिति होती है वह इस उदाहरण से पता चलता है। स्व भाषा में अन्य भाषाओं के शब्द आने चाहिए क्योंकि उनकी वजह से भाषा को प्रवाह मिलता है लेकिन वे शब्द इस तरह से नहीं भर दिए जाएँ कि मूल भाषा का अस्तित्व ही नहीं बचे।

ज्ञान, विज्ञान, तकनीक आदि क्षेत्रों अंग्रेजी भाषा का प्राबल्य अधिक है। इंटरनेट, मोबाइल आदि पर अधिकाँश व्यवहार अंग्रेजी में ही चलता है। लेकिन उस भाषा का तिरस्कार नहीं करते हुए हमें अपनी मातृभाषा का जतन करना चाहिए, उसको बढाना चाहिए। व्यवहार, व्यापार तथा शिक्षा में मातृ भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग हो। भावी पीढी को बोली भाषा का महत्व समझाना चाहिए। हर व्यक्ति को बोली भाषा के संवर्धन, संकलन और जतन करने केलिए सामूहिक स्तर पर प्रयास करने चाहिए। एक व्यापक भाषा अभियान चलाकर जगह -जगह पर 'लोक भाषा संवाद केंद्र ' की स्थापना करनी चाहिए। तभी बोली भाषा नष्टकरने वाले दुष्चक्र को ख़त्म किया जा सकता है।

बदलते हुए समय में स्व भाषा या बोली भाषा के सामने कितने भी पहाड़ जैसे आव्हान आये फिर भी उपाय ढूंढें जा सकते हैं। उनमें से एक उपाय स्व भाषा के अभिमान का है।

को परिष्कृत किया जा रहा है।

मध्ययुगीन काल के कीर्तन, भारुड़, अभंग, दशावतारी, लोक गायकी वाङ्गमय, स्फुट रचना आदि के माध्यम से 'बोली ' के विविध प्रायोगिक आविष्कार होते दिख रहे हैं। इसी तरह से दलित, ग्रामीण, स्त्रीवादी, आदिवासी आदि वाङ्गमय प्रवाहों के माध्यम से विविध बोली भाषाओं द्वारा बड़े पैमाने पर साहित्य निर्माण हो रहा है। नाट्य, पथ नाट्य, चित्रपट, दूरदर्शन, आकाशवाणी, समाचार पत्र के माध्यमों से भी बोली को बढावा दिया जा रहा है। इस प्रकार विविध माध्यमों से बोली भाषा के नियोजनबद्ध चलाये जायेंगें तो ही वह अस्तित्व में रह सकती है। लोक साहित्य की परम्परागत वस्तु, चित्रमाला, पोशाक, विविध नाट्य या वासुदेव, पोतराज जैसे व्यक्ति विशेषों का उनकी उनकी भाषा शैली में उपाय करके विधमान आशय सूत्रों का आविष्कार करना यानी भाषा का प्रवाह रखना है। इस प्रकार से विविध स्तरों पर भाषा को अखंडित या प्रवाहमय रखने के लिए सभी ने मिलकर प्रयास किये तो उसका गुणवत्तापूर्ण अस्तित्व बरकरार रह सकेगा।

**संदर्भसूची :** १) डॉ. प्रकाश परब, पुणे विद्यापीठाच्या मराठी विभागातील उदबोधन वर्गात दि. १७/ १२/ २००४ ते ०६/०१/ २००५ या कालावधीत दिलेले व्याख्यान. २) डॉ. गणेश देवी, भारतीय भाषांचे लोकसर्व्हेक्षण, संपा. अरुण जाखडे, पद्मगंधा प्रकाशन, पुणे २०१२. ३) डॉ. वैजनाथ अनमुलवाड, संपा. इसाप प्रकाशन, नांदेड. ४) अरुण साधू, लोकराज्य, फेब्रु. २०१४. ५) गणेश देवी, लोकसत्ता, दि. २२ सप्टें. २०१३

**सहायक प्राध्यापक, मराठी भाषा विभाग, स्वामी रामानंद तीर्थ, मराठवाड़ा विश्वविद्यायल, नांदेड़**

**भाषा के आधार पर राज्यों की रचना के अनुसार १ मई १९६० को महाराष्ट्र राज्य का निर्माण होने के बाद स्वतंत्र राज्य का कामकाज मराठी भाषा में किये जाने के लिए 'महाराष्ट्र राजभाषा अधिनियम १९६४ ' के तहत मराठी भाषा को राजभाषा के रूप में अमल में लाया गया। मराठी भाषा के सर्वांगीण विकास के दृष्टिकोण से महाराष्ट्र राज्य के सुवर्ण महोत्सवी वर्ष के उपलक्ष में २२ जुलाई २०१० को मराठी विभाग की स्थापना की गयी। मराठी भाषा का प्रचार –प्रसार इस विभाग का मुख्य उद्देश्य है। इस उद्देश्य को प्रभावी तरह से पूरा करने के लिए मराठी विभाग के तहत राज्य मराठी विकास संस्था, भाषा महानिदेशालय, महाराष्ट्र राज्य मराठी विश्वकोश निर्माण मंडल, महाराष्ट्र राज्य साहित्य और संस्कृति मंडल जैसे विभाग कार्यरत हैं।**

# मराठी का संवर्धन, मराठी की श्रेष्ठता

**अजय भोसले**

आज की मराठी भाषा की नीव ईसवी पूर्व २०० साल पहले सातवाहन वंश के समय से दिखाई देती है। इसके बाद संस्कृत या कन्नड़ भाषा को राजकीय प्रक्षय मिलने की वजह से मराठी भाषा का विकास थोड़ा सुस्त होता दिखा। लेकिन यादवों के काल में फिर से इस भाषा को एक उभार मिला। इसके बाद देश में जब मुगलों के आक्रमण बढे तो पर्शियन भाषा का प्रयोग बढने लगा। ऐसी परिस्थितियों में वारकरी सम्प्रदाय ने मराठी भाषा को जीवित रखने का महत्वपूर्ण कार्य किया। ब्रिटिश शासन के दौरान अंग्रेजी भाषा को मिले सम्मान की वजह से सभी प्रादेशिक भाषाओं पर एक प्रकार का संकट निर्माण हो गया था। उसके बाद जब देश स्वतंत्र हुआ और भाषा के आधार पर जब राज्यों का गठन हुआ तो प्रत्येक प्रदेश को अपनी -अपनी स्थानीय भाषा, संस्कृति को बढाने का अवसर मिला। महाराष्ट्र में सरकार ने मराठी भाषा और महाराष्ट्र की संस्कृति के संरक्षण, संग्रहण और संवर्धन करने के लिए १ मई १९९२ को राज्य मराठी विकास संस्था की स्थापना की। मराठी के संवर्धन के लिए मराठी साहित्य संस्कृति मंडल, मराठी भाषा के शब्दकोष समृद्ध करने के लिए विश्वकोश निर्मिति मंडल की स्थापना की गयी। विविध निजी संस्थाएं भी स्वस्फूर्त रूप से मराठी के प्रसार के लिए काम कर रही हैं।

मराठी के प्रसार के लिए सरकार के स्तर पर अनेक उपक्रम चलाये जाते हैं। मराठी की प्राचीनता को ध्यान में रख इसे अभिजात भाषा का दर्जा दिलाने के लिए एक समिति बनायी गयी है। इस समिति ने भाषा की प्राचीनता, मौलिकता व सलगता, प्राचीन भाषा व उसके आधुनिक रूप के रिश्ते को विचार में रख अपनी रिपोर्ट सरकार को पेश की थी। यह रिपोर्ट केंद्र सरकार के पास भेजी गयी है। मराठी के सर्वांगीण विकास के लिए आने वाले २५ वर्षों की स्थिति को ध्यान में रखते हुए मराठी भाषा की नीति बनाने का काम शुरु है। प्रशासन के तहत आने वाले विभिन्न क्षेत्रीय कार्यालयों तथा इधर -उधर बिखरे हुए सभी कार्यालयों को एक स्थान पर सुविधा उपलब्ध कराकर देने की दृष्टि से मुंबई में मराठी भाषा भवन के निर्माण करने का निर्णय सरकार ने किया है।

मराठी भाषा संवर्धन पखवाड़ा, मराठी भाषा गौरव दिन, वाचन प्रेरणा दिन आदि माध्यमों से मराठी की ज्योति प्रज्वलित करने का काम जोर शोर से शुरु है। सभी विषयों के शब्द मराठी भाषा में होने चाहिए इसके लिए विश्वकोश मंडल उपक्रम

के तहत अब तक २० खंड प्रकाशित किये जा चुके हैं। यह विश्वकोश मोबाइल ऐप (भ्रमण ध्वनि उपयोजक ) पर भी उपलब्ध हैं।

सरकार व न्याय के कामकाज में मराठी भाषा का प्रभावी तरह से प्रयोग हो इसके लिए अनेक परिभाषा कोष का निर्माण भी किया जा रहा है। इस तरह के कोष अब मोबाइल ऐप पर भी उपलब्ध कराये गए हैं। भाषा महानिदेशालय ने अब तक विभिन्न विषयों के २९ परिभाषा कोष प्रकाशित किये हैं। १० परिभाषा कोषों पर कार्य चल रहा है जबकि ३० परिभाषा कोष प्रस्तावित हैं। राज्य मराठी विकास संस्था मराठी का प्रयोग अधिक गुणवत्ता पूर्वक करने के लिए चर्चा सत्र, प्रकाशन के माध्यमों से मराठी भाषा के संवर्धन का काम कर रही है।

राज्य मराठी विकास संस्था के माध्यम से मराठी भाषी विद्यार्थियों को मदद, महाराष्ट्र के बाहर काम करने वाली संस्थाओं को मदद, पुस्तक प्रदर्शनियां, हस्त लेखन का अभ्यास, अमराठी भाषिकों के लिए उपक्रम, मराठी के दुर्लभ ग्रंथों का संग्रहण, संस्था के प्रकाशनों को ई पुस्तक का स्वरूप देने के महत्वपूर्ण कार्य किये जा रहे हैं।

**भाषा सलाहकार समिति :** राज्य की आने वाले २५ वर्षों के लिए मराठी भाषा की नीति निधार्रित करने के लिए, भाषा की अभिवृद्धि के लिए, नए -नए उपाय व कार्यक्रम सुझाने तथा उनके सन्दर्भ में सरकार का मार्गदर्शन करने के लिए भाषा महानिदेशालय के तहत भाषा सलाहकार समिति की स्थापना की गयी है।

**अभिजात भाषा का दर्जा :** किसी भी भाषा को अभिजात भाषा देने का कार्य केंद्र सरकार के द्वारा किया जाता है। मराठी भाषा को अभिजात भॉषा का दर्जा दिलाने के सन्दर्भ में रिपोर्ट पेश करने के लिए सरकार ने ज्येष्ठ साहित्यकार प्रा. रंगनाथ पठारे की अध्यक्षता में मराठी भाषा तज्ञ संशोधकों की समिति गठित की थी। इस समिति की रिपोर्ट केंद्र सरकार को भेजी जा चुकी है तथा अब इस सम्बन्ध में केंद्र सरकार से प्रयास जारी हैं।

**मराठी भाषा संवर्धन पखवाड़ा :** मराठी भाषा के वैभव को संजोने तथा उसके संवर्धन व वृद्धि के लिए हर साल १ जनवरी से १५ जनवरी के बीच मराठी भाषा संवर्धन पखवाड़ा आयोजित किया जाता है।

**उच्च न्यायालय की प्राधिकृत भाषा :** भारतीय संविधान की धारा ३४८ (२ ) के तहत उच्च न्यायालय की प्राधिकृत भाषा मराठी करने के लिए विधि व न्याय विभाग की तरफ से कार्यवाही शुरु है।

**परिभाषा कोष व शब्दकोष:** भाषा महानिदेशालय ने अब तक विविध विषयों व ज्ञान शाखाओं के परिभाषा कोष, सरकारी कामकाज के उपयोगी शब्दकोश व सरकारी कामकाज के उपयोग में आने वाली मार्गदर्शक पुस्तिका प्रकाशित की है। इनमें सरकारी कामकाज में उपयोगी शब्दकोष -६, सरकारी कामकाज में उपयोगी मार्गदर्शक पुस्तिका -९, परिभाषा कोष २९, पारिभाषिक शब्दावलियाँ -४, कुल मिलाकर ५० प्रकाशन, प्रकाशित किये हैं।

**राज्य क़ानून मराठी में :** संकेत स्थल (वेबसाइट ) पर जाहिर की गयी राज्य अधिनियमों की संख्या ६०२ है जिनमें से ३२९ राज्य अधिनियमों को आधुनिक रूप देकर पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया है।

**मराठीविश्वकोष :** महाराष्ट्र राज्य साहित्य और संस्कृति मंडल की स्थापना साल १९६० में की गयी। इसके बाद उस मंडल का विभाजन कर स्वतंत्र रूप से महाराष्ट्र राज्य मराठी विश्वकोष निर्मिति मंडल की स्थापना १९८० में की गयी। मंडल की स्थापना के बाद मराठी विश्वकोष के १ से २० (संहिता खंड ) व खंड २१ (सूची खंड ) प्रकाशित करने की योजना थी। इसके अनुसार मराठी विश्वकोष का पहला भाग १९७६ में प्रकाशित हुआ और अंतिम २०वां भाग (उत्तरार्ध ) जून २०१५ में प्रकाशित किया गया। २०१९ में २१ सूची खंड प्रकाशित किया गया। इसके साथ साथ कुमार विश्वकोष का खंड २ जीव सृष्टि और पर्यावरण भाग 1 (अंकुरण से ग्लूकोज ), भाग २ (घटसर्प से पैरामेशियम ) मुद्रित स्वरूप, दृश्य श्राव्य माध्यम (वीडियो ) तथा ब्रेल लिपि में प्रकाशित किया गया है। भाग ३ (पांगारा से लैंगिक पारेषित संक्रमण ) के इन तीन खण्डों को मिलाकर ८५० पंजीयन संकेत स्थल पर उपलब्ध कराये गए हैं।

**ज्ञान मंडल:** मराठी विश्वकोष को आधुनिक स्वरुप देने के लिए ज्ञान मंडल की स्थापना किये जाने की मान्यता दी गयी है। इसके अनुसार मराठी विश्वकोष निर्मिति महामण्डल के माध्यम से महाराष्ट्र के अलग -अलग विश्वविद्यालयों, शैक्षणिक व शोध संस्थानों में विषयवार ६० ज्ञान मंडल स्थापित करने की इच्छा मंडल की है। इनमें से वर्तमान में ४५ ज्ञान मंडल कार्यरत भी हैं।

**पुस्तकों का गांव :**महाबलेश्वर के पास भिलार गांव में यह कार्यरत किया गया है। भिलार गांव में २५ सार्वजनिक स्थानों का चयन किया गया तथा पर्यटक वंहा जाकर सहज तरह से पुस्तक पढ.सकें, इस प्रकार की यह योजना बनायी गयी है।

**रंगवैखरी :** मराठी साहित्य के नामचीन लेखकों की साहत्यिक कृतियों को विविध कलाओं के आधार पर नाट्य रूप देकर उनकी प्रस्तुति करने को महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के लिए रंगवैखरी प्रतियोगिता

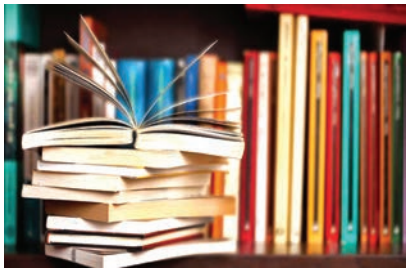

का आयोजन किया जाता है।

**वाचनयात्रा :** वाचन प्रेरणा दिन पर डेक्कन क्वीन व पंचवटी गाड़ियों में पासधारी डिब्बे में चल ग्रंथालय (मोबाइल लाइब्रेरी ) की वाचन सेवा शुरु की गयी है।

**पुस्तक प्रकाशन योजना :** निजी प्रकाशकों द्वारा जिन पुस्तकों के प्रकाशन को नकार दिया जाता है ऐसी पुस्तकें जिज्ञासु और सामान्य वाचकों को कम कीमत पर उपलब्ध

कराने की यह योजना है। इस योजना में विज्ञान ग्रंथमाला, उत्कृष्ट ग्रंथों का अनुवाद, महाराष्ट्र के इतिहास से सम्बंधित दस्तावेज का संपादन व प्रकाशन, वैचारिक, समीक्षात्मक, चरित्रात्मक (महाराष्ट्र के शिल्पकार ) आदि विषयों से सम्बंधित पुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं। इसके अलावा पुनर्मुद्रण भी किया जाता है। इस योजना के तहत साहित्य और सांस्कृतिक मंडल ने अब तक ५४६ पुस्तकों का प्रकाशन किया है।

**ललित पुस्तक प्रकाशनार्थ योजना :**इस योजना के तहत मराठी में वैचारिक व विज्ञान विषय पर आधारित पुस्तकों की आवश्यकता को ध्यान में रख लिखे गए विज्ञान व तकनीक विषयक शोध व विशिष्टता पूर्ण उच्च दर्जे के लेखन का विचार अनुदान के लिए किया जाता है। पुस्तकों के प्रकाशनार्थ अनुदान के लिए वयक्ति अथवा संस्था की तरफ से प्राप्त होने वाले पुस्तक प्रकाशन के खर्चे का ७५ % या अधिक से अधिक ३० हजार रूपये की आर्थिक सहायता की जाती है।

**नव लेखक प्रोत्साहन अनुदान योजना:** इस योजना के तहत जिनकी एक भी पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई हो ऐसे नए लेखकों की कहानी, उपन्यास, ललित गद्य, काव्य, नाटक (एकांकी ),बाल संग्रह आदि लेखनों के लिए मंडल की तरफ से अनुदान दिया जाता है। प्रकाशकों द्वारा नव लेखकों की पुस्तक विहित तरीके से छापकर मंडल में देने के बाद उसके खर्च का ७५ % अनुदान दिया जाता है। इस योजना के तहत अब तक २१६७ नव लेखकों की पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं।

**कार्यशाला अनुदान :** नव लेखकों को ज्येष्ठ साहित्यकारों का मार्गदर्शन मिले, उनके लेखन में सुधार आये इसलिए महाराष्ट्र में अलग -अलग स्थानों पर नव लेखकों का चर्चा सत्र, कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं। इस योजना के तहत नव लेखकों की ७ कार्यशालाओं के आयोजन के लिए प्रति कार्यशाला ५० हजार यानी साढे.तीन लाख रुपया हर साल अनुदान के रूप में दिया जाता है।

**साहित्य संस्था अनुदान :**इस योजना के अंतर्गत अखिल भारतीय मराठी साहित्य महामण्डल, विदर्भ साहित्य संघ -नागपुर, मराठवाडा साहित्य परिषद -औरंगाबाद, महाराष्ट्र साहित्य परिषद -पुणे, मराठी साहित्य संघ -मुंबई, कोंकण मराठी साहित्य परिषद -रत्नागिरी व दक्षिण महाराष्ट्र साहित्य सभा कोल्हापुर, इन सात संस्थाओं को विविध वाड्गमय प्रकाशित करने के लिए हर साल प्रत्ये को १० लाख रुपये का नदान दिया जाता है।

**मराठी साहित्य सम्मलेन अनुदान :** अखिल भारतीय मराठी साहित्य मंडल की

तरफ से हर साल अखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलन आयोजित करने के लिए ५० लाख रुपये का अनुदान दिया जाता है। मुख्य साहित्य सम्मलेन की तरह से ही अलग -अलग धारा के जान समूहों व उपेक्षित वर्गों के अन्य मराठी साहित्य सम्मेलनों को भी अनुदान दी जाए इसके लिए महाराष्ट्र राज्य सांस्कृतिक नीति २०१० में किये गए प्रावधान के अनुसार हर साल २ लाख रुपये के अनुसार ३० लाख रुआपये का अनुदान देने का निर्णय किया गया था। यह राशि अब बढाकर ६० लाख रुपये कर दी गयी है।

**नियतकालिकों को अनुदान :** इस योजना के तहत विविध विषयों पर आधारित मराठी भाषा में प्रकाशित होने वाले ५५ नियतकालिकों को प्रतिवर्ष अनुदान दिया जाता है।

**राज्य वाड्मय पुरस्कार योजना :**इस योजना के तहत अ) प्रौढ.वाड्गमय विभाग के २२ वाड्गमय पुरस्कार, ब ) बाल वाड्गमयविभाग के ६ पुरस्कार, क) प्रथम प्रकाशन विभाग के ६ पुरस्कार, ड) सरफोजीराजे भोसले बृहन्महाराष्ट्र पुरस्कार ऐसे कुल मिलाकर ३५ वाड्गमय पुरस्कार दिए जाते हैं।

**जीवन गौरव पुरस्कार योजना :**मराठी साहित्य और वाड्गमय के क्षेत्र में अच्छा और मूल्यवान काम करने वाले ज्येष्ठ साहित्यकारों को ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता ज्येष्ठ साहित्यकार स्व. विंदा करंदीकर के नाम का जीवन गौरव पुरस्कार प्रदान किया जाता है। इस पुरस्कार के तहत पांच लाख रुपये, सम्मान चिन्ह व प्रशस्ति पत्र दिया जाता है।

**श्री. पु. भागवत पुरस्कार योजना :** साहित्य लेखन के क्षेत्र में विशेष व उत्कृष्ट कार्य करने वाली प्रकाशन संस्थाओं के प्रकाशन व्यवसाय में अमूल्य कार्य करने वाले श्री पु भागवत के नाम पर हर साल पुरस्कार दिया जाता है। इस पुरस्कार के तहत ३ लाख रुपये, सम्मान चिन्ह व प्रशस्ति पत्र दिया जाता है।

**बृहद प्रकल्प योजना :** महाराष्ट्र के साहित्य, संस्कृति और इतिहास के साथ साथ विज्ञान, आधुनिक तकनीक और समाजशास्त्र के दायरे में आने वाले विषयों पारर मराठी भाषा में पुस्तकें प्रकाशित करना मंडल का प्रमुख उद्देश्य है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए इस योजना के तहत साहित्य, संस्कृति, कला, इतिहास, विज्ञान, तकनीक, वैचारिक, सामाजिक, समीक्षात्मक, चरित्रात्मक, शास्त्रीय, वाड्गमयीन, शोध जैसे विषयों पर विविधता पूर्ण, नवीनता पूर्ण व दुर्लभ बृहद ग्रंथों की योजना कार्यान्वित की जाती है व उनका प्रकाशन किया जाता है।

# मेरी मराठी की मिठास

**मेरी मराठी की मिठास**
**मुझे लगती है प्यारी,**
**मेरे मराठी छंद**
**मन को नित्य मोहते।**
**ज्ञानोबा की तुकोबा की**
**मुक्तेश्वा की जनाई की,**
**मेरी मराठी मिठास**
**रामदास शिवाजी की।**
**आओ आओ सभी जन आओ,**
**हाक मेरी मराठी की**
**सब बंधन अब टूट गए हैं**
**साक्ष्य भीमा के पानी का।**
**डफली और तुनतुना लेकर**
**खड़ी गायकों की टोली,**
**अभिनंदन के मान वाली**
**वीरों की यह मायबोली।**
**अभंगों की तालों पर**
**चले हल के फाल यंहा**
**कोमलता थम गई,**
**भोर के बाद जातों पर।**
**इसका स्वरुप देखने**
**इसकी चाल की तेजी को**
**इसके नेत्र प्रभा जैसे**
**सात्विक और कंचन जैसे।**
**कृष्णा गोदा सिंधुजल**
**इसकी बढ़ाते कांति,**
**आचार्यों के आशीर्वाद**
**इसके मुख से ही आते।**
**मेरी मराठी की थोरी**
**नित्य नए स्वरूप देती,**
**जब श्रद्धा में शीश झुके**
**मुख से उमड़ते गीत नए।**

(कवि वि. म. कुलकर्णी की कविता माझ्या मराठीची गोडी का हिंदी भावार्थ )

**मराठी भाषा को अभिजात दर्जा देने सम्बन्धी प्रस्ताव केंद्र सरकार के पास प्रलंबित पड़ा हुआ है। राज्य सरकार की तरफ से समय -समय पर इसके सम्बन्ध में पत्र व्यवहार व प्रयास किया जाता है। इस सम्बन्ध में विविध क्षेत्रों के विशिष्ट लोगों की मदद लेने पर भी विचार किया जा रहा है।**

# मराठी संवर्धन के नए उपक्रम

डॉ. विश्वजीत कदम, राज्यमंत्री मराठी भाषा

मराठी भाषा को अभिजात दर्जा दिलाने के लिए केंद्र सरकार से प्रयास किये जा रहे हैं। राज्य के सीमावर्ती क्षेत्रों में मराठी भाषा का प्रचार व प्रसार करने के लिए नए उपक्रम शुरु करने के हम प्रयत्न कर रहे हैं। इसके लिए मराठी भाषा विभाग के अंतर्गत आने वाली मराठी विकास संस्था, भाषा महानिदेशालय, महाराष्ट्र राज्य मराठी विश्वकोश निर्मिति मंडल, महाराष्ट्र राज्य साहित्य और संस्कृति मंडल आदि विविध उपक्रमों की समीक्षा कर आगे की दिशा निधार्रित करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण कदम उठाये जा रहे हैं।

मराठी भाषा को अभिजात दर्जा देने सम्बन्धी प्रस्ताव केंद्र सरकार के पास प्रलंबित पड़ा हुआ है। राज्य सरकार की तरफ से समय -समय पर इसके सम्बन्ध में पत्र व्यवहार व प्रसाय किया जाता है। इस सम्बन्ध में विविध क्षेत्रों के विशिष्ट लोगों की मदद लेने पर भी विचार किया जा रहा है। युवा पीढी में मराठी भाषा की चाह बढे इसलिए युवा साहित्यकारों को पुरस्कार देने जैसे विविध उपक्रम शुरु करने की हमारी इच्छा है। मराठी सिनेमा जगत का भी मराठी भाषा के विकास में बड़ा योगदान है। इस वजह से सिनेमा क्षेत्र के गीतकार, पटकथा लेखक तथा वेबसाइट के माध्यम से मराठी भाषा का प्रचार -प्रसार करने वालों को भी पुरस्कार देने का विचार किया जा रहा है। मराठी भाषा को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नयी पीढी तक पंहुचे, इसके लिए यूट्यूब पर बालगीत, कहानियों के छोटे -छोटे वीडियो तैयार करने का हम प्रयास कर रहे हैं।

## भाषा संवर्धन

मराठी भाषा के विकास व संवर्धन के लिए मराठी साहित्यकारों द्वारा दिए गए सभी सुझावों का सम्मान किया जाएगा। अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में मराठी भाषा के विषय की अनिवार्यता का क़ानून शीघ्र ही सरकार लाने वाली है। इसके लिए विधि व न्याय विभाग, स्कूली शिक्षा विभाग तथा मराठी भाषा विभाग की हाल ही में बैठक ली गयी है। इस बैठक में आये सभी सुझावों पर विस्तार से चर्चा कर क़ानून बनाया जाएगा। क़ानून बनाते समय उसके बारे में कुछ उप सूचनाएं भी ली जाएंगी। कर्नाटक या अन्य राज्यों में बनाये गए इस तरह के क़ानून का अध्ययन कर मराठी भाषा अधिनियम बनाया जाएगा। महानगरपालिका के विद्यालयों में मराठी भाषा से शिक्षा का विकास हो, इसके लिए मराठी भाषा विभाग प्रयास कर रहा है। मराठी वर्णमाला के सम्बन्ध में सरकार आदेश के लिए विशेष बैठक लेकर सम्बंधित निर्देश दिए जायेंगें।

**शब्दांकन : नंदकुमार वाघमारे** विभागीय संपर्क अधिकारी

१. मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे और ज्येष्ठ उद्योगपति रतन टाटा।
२. मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे, उद्योगपति मुकेश अंबानी और आनंद महिंद्रा।
३. सह्याद्रि अतिथी गृह में महाराष्ट्र के औद्योगिक विकास के सम्बन्ध में चर्चा।

# मेरा महाराष्ट्र, आपका उद्योग, सबकी समृद्धि

राज्य के विकास में रोजगार निर्माण को सबसे अधिक प्रमुखता मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने दी है। राज्य में निवेश बढना चाहिए, इसके साथ साथ जो उद्योग यंहा चल रहे हैं उनकी समस्याएं दूर होनी चाहिए इसके लिए उद्योगपतियों और सरकार में संवाद अधिक बढाने के लिए श्री ठाकरे ने सम्मानित उद्योगपतियों के साथ बैठक लेकर उनकी समस्याओं की जानकारी ली। राज्य के विकास के मार्ग पर हर योग्य क्षेत्र का विकास होना जरूरी है। इसके लिए सभी वर्गों को साथ लेकर चलने की नीति मुख्यमंत्री ने बनायी है। कृषि, उद्योग और शिक्षा जैसे क्षेत्र का विकास एक दूसरे के साथ मिलकर किया जा सकता है, इस बात पर उनका बल है।

## कृषि, शिक्षा, रोजगार के लिए योगदान

सरकार राज्य का बल विकास कार्यों को तेजी से पूर्ण कर उनके माध्यम से लोगों के जीवन स्तर को ऊँचा करने का है। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर उद्योगपतियों को आश्वासन दिया कि जो प्रकल्प राज्य के हित के हैं, जिनकी वजह से राज्य विकास के मार्ग पर आगे बढ.सकता है ऐसे किसी भी प्रकल्प के मार्ग में आने वाली सभी अड़चनों को दूर किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने उद्योगपतियों से आव्हान किया कि, यह राज्य हमें किसी एक वर्ग का न होकर हर वर्ग का लगना चाहिए इसलिए उद्योगों को भी राज्य के सर्वांगीण विकास में अपना योगदान देना चाहिए।

## मूलभूत सुविधाओं में सुधार

मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछले कुछ सालों में कुछ औद्योगिक कम्पनियाँ किन्ही कारणों से प्रदेश के बाहर गयी लेकिन अब एक ही कंपनी को बाहर जाने नहीं दिया जाएगा। यही अन्य राज्यों में चल रहे अच्छे उद्योग महाराष्ट्र में कैसे शुरु किये जा सकेंगें इसके लिए उन्हें आकर्षित करने की दिशा में भी काम किया जाएगा। उद्योग के लिए मूलभूत सुविधाएं, सस्ती जमीन, सस्ती दर में बिजली -पानी तथा विविध अनुमति पत्र जल्दी से दिए जाएँ इस सम्बन्ध में उद्योग विभाग तथा उससे सम्बंधित यंत्रणा को निर्देश दिए गए हैं ताकि उद्योगों के समक्ष आने वाली अड़चनों को दूर किया जा सके।

## शहरों को पहचान

राज्य के विकास में उद्योगों के साथ साथ पर्यटन का भी विशेष महत्व है। विशेषतः प्रदेश के विभिन्न शहरों को यदि पर्यटन नक्शे पर लाया गया तो उससे पर्यटकों की संख्या बढेगी तथा शहर के विकास में नया योगदान भी मिलेगा। इसके लिए शहरों की पहचान दुनिया भर में हो सके इस प्रकार से उस क्षेत्र का विकास किया जाना चाहिए।

## पालिका विद्यालयों का विकास

शिक्षा के क्षेत्र में दर्जेदार बदलाव के लिए सरकार के माध्यम से पालिका के विद्यालयों में उत्तम और तकनीकी ज्ञान युक्त शिक्षा सहज और आसान पद्धति से मिले, टेली मेडिसिन जैसी तकनीक के उपयोग से दुर्गम क्षेत्रों में अच्छी स्वास्थ्य सेवा देने उद्योगपतियों की मदद ली जाएगी।

## उद्योग और शिक्षा में सामंजस्य

उद्योगों को प्रोत्साहन देने के लिए सरकार की नीति तो है, लेकिन इसमें भी मध्यम और लघु उद्योगों पर विचार किया जा रहा है। उद्योगों के विकास से राज्य में रोजगार निर्माण करने पर तो बल दिया ही जा रहा है लेकिन उद्योग और शिक्षा में सामंजस्य भी कराया जा सकता है। इस सामंजस्य से उद्योग विस्तार, कौशल्य आधारित शिक्षा और रोजगार निर्माण इन तीनों बातों को साधा जा सकता है।

## उद्योजकों ने अपनी अपेक्षाएं जताई

इस बैठक में उद्योगपतियों ने विविध लाइसेंसों के जल्दी मिलने, बिजली की दरों में सहूलियत देने, उद्योगों की वृद्धि के लिए साहसिक कदम उठाने, तकनीक ज्ञान का सही उपयोग किये जाने, मुंबई में आर्थिक केंद्र हो, बड़े उद्योगों के साथ साथ छोटे व्यवसायों का भी विकास हो, किफायती दर के घरों की योजना सही तरीके से चलाये जाने, कृषि क्षेत्र का विकास करते समय पशु संवर्धन उद्योग को भी बढावा मिले, नए औद्योगिक क्षेत्र निर्माण किये जाएँ, विशेष आर्थिक क्षेत्र निर्माण किये जाएँ, विशेष प्रकल्प योजना द्वारा प्रकल्पों को तेजी दी जाय पर्यटन उद्योग का विकास किया जाय ऐसे अनेक सुझाव दिए। इस बैठक में रतन टाटा, मुकेश अंबानी, उदय कोटक, आनंद महिंद्रा, आदि गोदरेज, हर्ष गोयनका, मानसी किर्लोस्कर, राजेश शाह, आनंद पिरामल, अशोक हिंदुजा, निरंजन हीरानंदानी, वरुण बेरी, महेंद्र तुराखिया, रवि रहेजा, बाबा कल्याणी, गोपीचंद हिंदुजा, सज्जन जिंदल, गौतम सिंघानिया, दीपक पारेख, पिरोजशा गोदरेज, भाविन तुखारिया आदि उद्योगपति उपस्थित थे। और इन्होने नए उद्योगों में वृद्धि के लिए सरकार के समक्ष अपने बहुत से सुझाव रखे।

## मुंबई के विकास को गति

देश की आर्थिक राजधानी मुंबई का विकास हुए बगैर राज्य का विकास हो नहीं सकता। इसलिए मुंबई की मूलभूत सुविधाओं के विकास के लिए विशेष तौर पर ध्यान दिया जा रहा है। मुंबई में विदेशी पर्यटक बड़ी संख्या में आते हैं। इस पर्यटन को विकास देने के लिए सड़कें, फुटपाथ आदि को सुधारने और उनके सौन्दर्यीकरण किये जाने की जानकारी पर्यटन मंत्री आदित्य ठाकरे ने दी है। इन सब विकास को करते हुए मुंबई में रहने वाले लोगों को साफ़ हवा सांस लेने के लिए मिले, इस सम्बन्ध में अर्बन फॉरेस्ट की संकल्पना शुरु की जा रही है। इस योजना के तहत ६६ स्थानों को हरित क्षेत्र बनाया जाएगा। इसकी वजह से शहर की हवा में कार्बन की मात्रा कम करने में मदद मिलेगी। आदित्य ठाकरे ने बताया कि घन कचरा व्यवस्थापन पर भी बल दिया जा रहा है तथा इसके अलावा सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों की शिकायतें का जल्दी से निराकरण करने का कार्य भी किया जा रहा है। यातायात प्रबंधन को नजरों के सामने रख शहर में उसका नियोजन कैसे किया जाएगा इस दिशा में भी काम चल रहा है। मुंबई २४ घंटे नीति के तहत पर्यावरण, इलेक्ट्रिक वाहन आदि विषयों पर प्राथमिकता से काम किये जाने की बात भी आदित्य ठाकरे ने कही।

## १८ हजार कर्ज प्रकरण

राज्य सरकार ने रोजगार एवं स्वयं रोजगार निर्माण शुरु करने के लिए मुख्यमंत्री रोजगार निर्माण कार्यक्रम को प्रभावी तरह से लागू करने के लिए उद्योग मंत्री सुभाष देसाई को निर्देश दिए गए हैं। इस कार्यक्रम के तहत दिसंबर २०१९ के अंत तक २३ हजार आवेदन मिले थे इनमें से १८ हजार आवेदन पात्र पाए गए। अब तक ११ हजार

**महाराष्ट्र सरकार और कन्फेडरेशन ऑफ़ इंडियन इंडस्ट्रीज (सीआईआई ) के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'चर्चा मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे से 'कार्यक्रम में उपस्थित मान्यवर उद्योगपति, उद्योग मंत्री सुभाष देसाई और पर्यटन मंत्री आदित्य ठाकरे उपस्थित थे।**

४२२ प्रकरण कर्ज के लिए बैंकों को भेजे जा चुके हैं। बैंकों में उनकी मंजूरी प्रक्रिया चालू है।

मुख्यमंत्री रोजगार निर्माण कार्यक्रम को बड़े पैमाने पर समर्थन मिल रहा है। विशेष यह कि इस योजना में महिला आवेदन कर्ताओं की संख्या करीब ४१ % है। इस योजना के तहत करीब १० हजार आवेदकों को लाभ देने का सरकार का उद्देश्य है। सेवा क्षेत्र के लिए १० लाख तथा मध्यम और लघु उद्योग के लिए ५० लाख रुपये तक की आर्थिक सहायता दी जाती है। मार्च महीने तक यह लक्ष्य पूर्ण कर लिया जाएगा।

## अन्न प्रसंस्करण केंद्र

सरकार ने राज्य के औद्योगिक विकास द्वारा उद्योगपतियों और किसानों को सक्षम करने को प्राथमिकता दी है। इस पार्श्वभूमि पर औरंगाबाद (बिडकीन ) में पांच सौ एकड़ में 'अन्न प्रसंस्करण केंद्र ' बनाये जाने की घोषणा मुख्यमंत्री ने की है।

किसानों और उद्योगपतियों की दुर्दम्य इच्छा शक्ति को सरकार का सक्रिय साथ देना सरकार का मकसद है। किसानों को कर्ज से मुक्ति दिलाने के साथ साथ किसान अब चिंता मुक्त भी होना चाहिए यह सरकार की भूमिका है। उद्योग विकास के द्वारा यंहा के किसानों व भूमिपुत्रों को रोजगार के अवसर देने व उद्योगपतियों को सक्षम करना सरकार ने अपनी प्राथमिकता बनाया है। उद्योग और कृषि इन दोनों विभागों के समन्वय से अन्न प्रसंस्करण और तेल बीज प्रसंस्करण जैसे कृषि उपज पर आधारित अन्न प्रसंस्करण उद्योग को बड़े पैमाने पर गति दी जाएगी।

बिडकीन में ५०० एकड़ जमीन पर अन्न प्रसंस्करण केंद्र का शीघ्र ही भूमिपूजन कर तेजी से उस कार्य को पूर्ण किया जाएगा। यंहा पर १०० एकड़ जमीन महिला उद्योगपतियों के लिए आरक्षित भी की जाएगी।

मराठवाड़ा में उद्योग क्षेत्र में बड़े पैमाने पर कार्य हो रहा है तथा इन उद्योगों के और अधिक विकास के लिए सरकार द्वारा हर स्तर पर सहयोग किया जाएगा।

## कौशल्य विकास संकुल

राज्य में नए नए उद्योग समूह, व्यवसाय के अवसर विस्तार किये जाने हैं। इसके लिए जरूरी मनुष्य बल उपलब्ध कराने के लिए शेन्द्र में कौशल्य विकास संकुल बनाया जाएगा। अंतरराष्ट्रीय बाजार में अपनी स्वतंत्र पहचान बनाने की क्षमता महाराष्ट्र के मराठवाडा के औद्योगिक क्षेत्र की है। पारम्परिक उद्योग -व्यवसाय को आगे बढाते हुए अलग -अलग आधुनिक प्रयोग कर दुनिया को 'मेड इन इण्डिया ' की पहचान हम करा सकते हैं। इस बात का विश्वास मराठवाडा औद्योगिक क्षेत्र में हो रहे काम को देखकर होता है।

## अतिरिक्त औद्योगिक क्षेत्र

औरंगाबाद के पास शेन्द्रा में करीब एक हजार हेक्टेयर का अतिरिक्त औद्योगिक क्षेत्र बनाया जाएगा। जालना, उस्मानाबाद और नांदेड़ में उद्योगों के विस्तार के लिए मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने के कार्यों में भी तेजी की जाएगी। कपास पर आधारित उद्योग के विस्तार के लिए कपास के दामों में वृद्धि की जाएगी इसके अलावा उस्मानाबाद में टेक्नीकल हब भी शुरु किया जाएगा। मराठवाडा में बड़ी संख्या में नए उद्योग आने वाले हैं। इनके माध्यम से ८३६० करोड़ का नया निवेश आएगा। उद्योगपतियों को सेवा शुल्क का भार नहीं उठाना पड़े इस दृष्टिकोण से उसे कम किया गया है।

**अनिरुद्ध अष्टपुत्रे**

# आपकी कुर्सी, आपका सम्मान ...

**प्रशासन लोकाभिमुख और संवेदनशील होना चाहिए इस बात का उदाहरण मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने स्वयं ही पेश किया। किसान हों या विद्यार्थी या प्रशासन के अधिकारी सबका उनको हक मिलना चाहिए इस बारे में वे बहुत ध्यान रखते हैं। सामान्य जनता को अपने कामों के लिए मुंबई के चक्कर लगाने नहीं पड़ें इसके लिए विभागीय स्तर पर मुख्यमंत्री सचिवालय शुरु करने का उन्होंने सिर्फ निर्णय ही नहीं किया अपितु उन्होंने तुरंत प्रभाव से उन्हें चालू भी कराया।**

प्रशासन का हर व्यक्ति चाहे वह किसी भी पद पर क्यों न हो उसे योग्य सम्मान और आदर दिया जाना चाहिए, इस बात को लेकर मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे बहुत महत्व देते हैं।

सांगली जिले के इस्लामपुर के वाळवा तहसील कार्यालय की नयी इमारत के उद्घाटन समारोह में उद्धव ठाकरे का यह आदर्श देखने को मिला।

इस्लामपुर के वाळवा तहसील कार्यालय का उद्घाटन मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के हाथों हुआ। उद्घाटन समारोह के बाद मुख्यमंत्री और सभी मान्यवर इस इमारत का निरीक्षण करने लगे। पहली मंजिल पर बने सभागृह आदि का निरीक्षण कर मुख्यमंत्री निचली मंजिल के सबसे अंत में बने तहसीलदार कक्ष में पंहुचे। इमारत का यह प्रमुख कार्यालय होने की वजह से मुख्यमंत्री ने इसके अंदर प्रवेश कर इसकी रचना को देखा।

मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने वाळवा तहसील कार्यालय का उद्घाटन करने के बाद तहसीलदार को उनकी कुर्सी पर आसीन होने को कहा। इस अवसर पर सांसद धैर्यशील माने भी उपस्थित थे।

सामने तहसीलदार की कुर्सी थी, उस पर थोड़ी देर उठे और सामने कुछ दूरी पर खड़े तहसीलदार रविंद्र सबनीस का हाथ पकड़कर कुर्सी के पास लाये। कुछ ही समय में उन्होंने सबनीस से कहा आप तहसीलदार हैं न ? यह कुर्सी आपकी है, यंहा बैठिये। मुख्यमंत्री ने यह प्रेम भरे शब्दों में आदेश दिया था। लेकिन उस मौके जिलाधिकारी अभिजीत चौधरी, मंत्री, राज्यमंत्री आदि भी उपस्थित थे। मुख्यमंत्री की इस बात से तहसीलदार असमंजस सी स्थिति में थे और बहुत ही नम्र शब्दों में कहा, मैं बैठ नहीं सकता। लेकिन मुख्यमंत्री ने तो जैसे तय ही कर लिया था। उन्होंने कहा कि यह कार्यालय आपका है, आप यंहा के प्रमुख के रूप में यंहा का कामकाज देखने वाले हैं, यह कुर्सी आपकी है, मुझे इस कुर्सी पर अपने हाथों से आपको बैठाना है। मुख्यमंत्री के इस आग्रह के बाद सबनीस के पास कोई चारा नहीं बचा था और वे कुर्सी पर बैठे। मुख्यमंत्री ने कहा कि आप इतने महत्वपूर्ण पद पर हैं। आपको मैंने स्वयं ने बिठाया है इसलिए आपको काम भी अच्छी तरह से करना है। मुख्यमंत्री ने अपने इस व्यवहार से सबनीस की हौसलाअफजाई की।

इस इमारत के बाहर एक बड़ा नीम का पेड़ हुआ करता था। उस पेड़ को वाळवा के लोग आजादी के आंदोलन का साक्षीदार मानते थे और उसे तोड़ने नहीं दिया था। लेकिन बाद में उस पेड़ को दूसरी जगह प्रत्यारोपित कर दिया गया। मुख्यमंत्री को इस पेड़ के बारे में पहले ही जानकारी दे दी गयी थी। उस पेड़ के नीचे कुछ देर रुकने के बाद मुख्यमंत्री ने अपने साथ खड़े अधिकारियों व कर्मचारियों को को कहा कि इस पेड़ की तरह जीवन जीना चाहिए। सबको खूब छांव दो और वृक्ष के जैसे प्रेम हांसिल करो। सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि आपके पास जो लोग आएं उनको समझो।

मुख्यमंत्री तो यंहा का उद्घाटन कर निकल गए लेकिन तहसीलदार सबनीस कहते हैं कि मैं जब -जब इस कुर्सी पर बैठता हूँ मुझे इस बात का आभास होता है जैसे मुख्यमंत्री मेरे पास खड़े हैं।

## आम आदमी को भरोसा

प्रशासनिक कामों में लोकाभिमुखता, पारदर्शकता और तेजी लाने के लिए विभागीय कार्यालयों में 'मुख्यमंत्री सचिवालय कक्ष ' स्थापना करने का निर्णय मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने नागपुर के शीतकालीन अधिवेशन के दौरान किया था। उसके बाद कुछ ही दिनों में सभी विभागीय राजस्व आयुक्त के कार्यालय में मुख्यमंत्री सचिवालय कक्ष शुरु कर दिए हैं।

**आवेदनों पर कार्यवाही:** इन कक्ष में आने वाले आवेदन सम्बंधित क्षेत्रीय स्तर की यंत्रणा को योग्य कार्यवाही करने के लिए त्वरित भेजा जाएगा। लोकशाही दिन के अवसर पर इन आवेदनों और निवेदनों पर क्या हुआ, इस बात की रिपोर्ट ली जाएगी।

**पावती दी जाएगी –रिपोर्ट ली जाएगी :** जो व्यक्ति इस कक्ष में आवेदन देने आयेंगें उन्हें उन्हें उस आवेदन की पावती दी जाएगी। क्षेत्रीय स्तर पर कार्यवाही होने वाले आवेदनों को विभाग आयुक्त के नियंत्रण में आने वाले सम्बंधित क्षेत्रीय अधिकारियों के पास शीघ्र भेजे जायेंगें। जिन आवेदनों पर सरकार के स्तर पर कार्यवाही अपेक्षित है और जो नीतिगत बातों से सम्बंधित हैं और महत्वपूर्ण प्रकरण से सम्बंधित आवेदन और अर्ज मुख्यमंत्री के सचिवालय से प्रधान सचिव के पास भेजे जाएंगे। इन आवेदनों पर क्या कार्यवाही, प्रलंबित आवेदनों की जानकारी मुख्यमंत्री सचिववालय कक्ष में हर महीने की ५ तारीख से पूर्व पेश कर दी जाएगी।

## किसान हर्षाया....

मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने शपथ विधि के बाद अपने व्यस्त कार्यक्रम के बीच एक किसान से उसकी व्यथा जानी थी। अपने जीवन को ख़त्म करने के उद्देश्य में मुंबई में आये नांदेड जिले के किसान धनाजी जाधव को मुख्यमंत्री श्री ठाकरे से मिलने के बाद जीवन में एक नयी उम्मीद के साथ वह अपने गांव वापस लौटा।

मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने आत्मीयता से इस किसान से बात ही नहीं की वर्षों से लंबित उसकी समस्या का समाधान भी निकाला। जमीन के सात -बारह परिपत्रकों का आधुनिकीकरण होने की वजह से इन्हें बड़ी दिलासा मिली है। जमीन के कर्ज पंजीयन का फेरफार नहीं होने की वजह से श्री जाधव का एक बड़ा काम अटका हुआ था। इस बात पर उसने मुंबई आकर अपनी व्यथा बताने का प्रयास किया। सही जाधव ने अपने जमीन के व्यवहार और कर्ज के बारे में जानकारी दी थी। इस पर मुख्यमंत्री ने उन्हें आश्वासन दिया था कि निराश मत हो, शीघ्र ही मदद की जाएगी। जाधव की इस समस्या के लिए मुख्यमंत्री ने सम्बंधित अधिकारियों को निर्देश दिए। इस पर नांदेड के जिलाधिकारी अरुण होंगरे ने राजस्व विभाग के साथ साथ श्री जाधव व सम्बंधित बैंक अधिकारियों से समन्वय साधकर इस मामले की हकीकत जानी। जमीन के बिक्री

**किसान की व्यथा सुनते हुए मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे।**

प्रकरण में फेरफार करने के निर्देश दिए। इस कार्यवाही की वजह से श्री जाधव के आगे का कर्ज के साथ खेती के मामले में जो अड़चने आ रही थी वे सभी दूर हो गयी।

मुख्यमंत्री के जनसम्पर्क अधिकारी

## संतोष को मुख्यमंत्री का भरोसा

मुंबई में चने -फुटाणे बेचकर शिक्षा हांसिल करने वाले राजेवाडी (जिला -सातारा, तालुका -माण ) के संतोष साबळे को मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने भरोसा दिलाया कि सही तरह से जो हो सकता वो सभी मदद उसे दी जाएंगी। संतोष साबळे रात १० बजे से सुबह ५ बजे तक चौपाटी पर चने -फुटाणे बेचता है और राजनीतिक शास्त्र की पढाई करता है। उसका प्रतियोगी परीक्षा पास कर अधिकारी बनने का स्वप्न है। सातारा से मुंबई आकर प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने वाले संतोष की खबर एक समाचार पत्र में प्रकाशित हुई थी। वह खबर पढक़र

**मुंबई में चने –फुटाणे बेचकर शिक्षा हांसिल करने वाले राजेवाडी (जिला –सातारा, तालुका –माण ) के संतोष साबळे से चर्चा करते हुए मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे।**

मुख्यमंत्री ने संतोष से संपर्क करने के निर्देश दिए थे। इसके अनुसार अपना रात का काम पूरा करने के बाद संतोष को मंत्रालय आने का सन्देश दिया गया। मुख्यमंत्री ठाकरे ने संतोष की इच्छा पूछी। उसके बारे में जानकारी लेते हुए उसकी शिक्षा की सराहना की। उसके साथ ही संतोष को किस प्रकार से मदद की जा सकेगी इसकी जानकारी हांसिल कर उसकी पढाई के लिए तत्काल मदद की जाने का निर्देश सामाजिक न्याय विभाग को दिया। मुख्यमंत्री के इस सहयोग से संतोष एकदम भावुक हो गया और उसने कहा कि वह अब और अधिक जोश के साथ शिक्षा का प्रयास करेगा।

# गौरिल्ला युद्ध

राजेंद्र पाटिल-यड्रावकर

बेलगांव सहित सम्पूर्ण सीमा क्षेत्र कर्नाटक में शामिल कर लेने के निषेध में किये गए आन्दोलन के शहीदों को हर साल १७ जनवरी को अभिवादन किया जाता है। इस बार राज्यमंत्री राजेंद्र पाटिल यड्रावकर बेलगांव में अभिवादन के लिए कैसे गए, उनका अनुभव उनके ही शब्दों में।

शहीदों का अभिवादन करने के लिए तथा सीमावर्ती क्षेत्र के भाइयों को समर्थन का सन्देश लेकर शुक्रवार १७ जनवरी को बेलगांव गया। बेलगांव पंहुचने के लिए ही हमें गौरिल्ला युद्ध की तकनीक का इस्तेमाल करना पड़ा और उसमें हम सफल भी रहे।

शुक्रवार सुबह मैं कोल्हापुर आया। बेलगांव की तरफ जाने वाले महाराष्ट्र के वाहनों की कोगनोली नाके पर कड़ी जांच होती है ऐसा ज्ञात था। इसलिए बेलगांव जाने के लिए निजी वाहनों की बजाय महाराष्ट्र परिवहन मंडल की बस को हमने चुना। हमारी बस संकेश्वर बस स्थानक पर पंहुची और उसमें बड़ी संख्या में कर्नाटक पुलिस के जवान चढ.गए और जांच शुरु कर दी। पुलिस को शक नहीं हो इसलिए मैंने सिर पर टोपी लगा रखी थी और जैकेट पहना था, तथा तबियत खराब होने का स्वांग कर रहा था। इसकी वजह से कर्नाटक पुलिस मुझे पहचान नहीं पायी। कार्यकर्ताओं के साथ मैं वंही उतर गया, उसके बाद आगे की यात्रा कर्नाटक महामण्डल की बस से किया। बेलगांव के मुख्य बस स्थानक पर उतरने की बजाय KLE चिकित्सालय के पास उतरने का निर्णय किया। सुबह साढे. ११ बजे वंहा उतरे। वंहा से आगे की यात्रा रिक्शा से कर सीबीटी मार्ग से हुतात्मा चौक पंहुचे। दोपहर के १२ बज गए थे। पुलिस वंहा तैनात थी। शहीदों का अभिवादन करते हुए पुलिस ने मुझे हिरासत में ले लिया। लेकिन सीमावर्ती साथियों के साथ महाराष्ट्र खड़ा है यह सन्देश देने में हम सफल रहे। इसके लिए गौरिल्ला युद्ध की तरकीब अपनाकर हम कर्नाटक पुलिस को चकमा देने में सफल हुए।

मेरे साथ आये मंगेश चवटे ने महाराष्ट्र सरकार के समन्वयक नियुक्त किये गए महाराष्ट्र सरकार के मंत्री एकनाथ शिंदे द्वारा सीमावर्ती क्षेत्र के भाइयों के लिए दिया गया सन्देश पढक़र सुनाया। सीमावर्ती क्षेत्र संयुक्त महाराष्ट्र में शामिल होना ही चाहिए और इस बात के लिए महाराष्ट्र कटिबद्ध है, श्री शिंदे का यह संदेश वंहा सुनाया गया। इसके बाद कर्नाटक पुलिस ने हमें महाराष्ट्र की सीमा में लाकर छोड़ दिया।

**शब्दांकन : अजय जाधव, विभागीय संपर्क अधिकारी**

# प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार

कला व संस्कृति के क्षेत्र में योगदान के लिए अथर्व लोहार व गणित में सृजनात्मक कार्य के लिए देवेश भइया नामक महाराष्ट्र के इन दो बालकों को राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के हाथों सम्मानित किया गया। इन्हें प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। केंद्रीय महिला व बाल विकास मंत्रालय की तरफ से राष्ट्रपति भवन के दरबार हॉल में आयोजित कार्यक्रम में प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार २०२० प्रदान किया गया। केंद्रीय महिला व बाल विकास मंत्री स्मृति ईरानी, राज्यमंत्री देवाश्री चौधरी, सचिव रविंद्र पवार भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

पिछले साल से ही महिला व बाल विकास मंत्रालय ने 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय पुरस्कार शुरु किया है। सृजनात्मक, शौर्य, सामाजिक सेवा, क्रीड़ा, कला व संस्कृति के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले ४६ बच्चों को इस बार 'बाल शक्ति 'पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अथर्व लोहार व देवेश भइया नामक महाराष्ट्र के इन दोनों बच्चों का भी इस अवसर पर गौरव किया गया। पुरस्कार प्राप्त करने वाले बच्चों को दिल्ली के राजपथ पर २६ जनवरी को होने वाली परेड में शामिल होने का सम्मान भी मिला।

# शौर्य को सलाम

मुंबई के परेल क्षेत्र के जेन सदावर्ते और औरंगाबाद जिले के आकाश खिल्लारे को वर्ष २०१६ का राष्ट्रीय बाल शौर्य पुरस्कार देने की घोषणा की गयी है। देश के १२ राज्यों के २२ बच्चों को राष्ट्रीय बाल शौर्य पुरस्कार से गौरवान्वित किया जाएगा इनमें महाराष्ट्र से जेन सदावर्ते और आकाश खिल्लारे का नाम शामिल है। भारतीय बाल कल्याण परिषद की अध्यक्ष गीता सिद्धार्थ ने पत्रकार परिषद में इस बात की जानकारी दी।

# स्वच्छ पर्यावरण समृद्ध पर्यटन

**मंत्री श्री आदित्य ठाकरे के दैनंदिन कामकाज में युवाओं की विविध संकल्पना, नयी कल्पना, देश –विदेश के दौरों के दौरान देखी गयी चीजों का मंत्री श्री ठाकरे के दैनिक कामकाज में प्रभाव दिखाई देता है।ये संकल्पनाएँ कैसी होंगी इसकी रूपरेखा उन्होंने सूचना एवं जन संपर्क महानिदेशालय में दिए एक साक्षात्कार के दौरान स्पष्ट की। भविष्य में उनके कामकाज का रोड मैप क्या होगा इस बात की विस्तृत जानकारी उन्होंने इस साक्षात्कार के दौरान दी। इस साक्षात्कार का संपादित हिस्सा ।**

आदित्य ठाकरे ने कहा कि पर्यटन, पर्यावरण और राज शिष्टाचार जैसे विभाग सहज में कोई मांगता नहीं है। लेकिन इन तीनों ही विभागों में काम करने का बहुत बड़ा स्कोप है। अपनी पीढी को आने वाले ५०–६० साल निरोगी जीवन जीना है तो पर्यावरण विभाग में बड़े काम करने की जरूरत है। दुनिया में दूसरी पृथ्वी कंही भी नहीं है, इसलिए हम हमारी पृथ्वी को बर्बाद कर दें ऐसा चलने वाला नहीं है। हमें हमारी पृथ्वी को बचाना होगा। हमारे यंहा चार साल तक अकाल था और अब अति वृष्टि और बेमौसम बारिश हुई है। ग्रामीण और शहरी दोनों ही भागों में मौसम परिवर्तन (क्लाइमेट चेंज) का असर दिखाई देने लगा है। दुनिया के कुछ हिस्सों में तापमान ६० डिग्री से नीचे तक पंहुच जा रहा है तथा कुछ ठिकानों में तापमान में वृद्धि हो रही है। हवा में प्रदूषण भी अधिकतम बढ.रहा है। यही हाल रहा तो आने वाले समय में वाई फाई के हॉट स्पॉट की तरह ऑक्सीजन के हॉटस्पॉट बनाने पड़ेगें क्या ? इस तरह की शंका निर्माण होने लगी है। पृथ्वी की जवाबदारी हम सभी की है और हम सब अपना परिसर स्वच्छ रखकर पर्यावरण संरक्षण की जवाबदारी निभा सकते हैं। इस वजह से पर्यावरण की रक्षा के काम को लोक अभियान का रूप देने की मेरी इच्छा है।

और इसी के लिए मैंने यह विभाग जानबूझकर मांग कर लिए हैं।

इस लोक अभियान में पर्यावरण विभाग कैसे काम करेगा इस सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि, पर्यावरण विभाग अब तक बहुदा केवल नियामक (रेग्युलेटरी) के रूप में ही काम करता रहा है। यह विभाग लोगों से दूर ही रहा है। इस विभाग को मुझे लोगों से जोड़ना है। पर्यावरण मतलब केवल नियम इस धारणा को यदि बदलना है तो हमको स्वयं कदम उठाने होंगे। इसके लिए आने वाले समय में पर्यावरण रक्षण के कार्य में विद्यार्थी, युवा व महिलाओं के सहयोग से जन आंदोलन खड़ा किया जाएगा। विद्यालयों में जन जागृति, महाविद्यालयों में आंदोलन और सरकारी कार्यालयों में पर्यावरण रक्षण के विविध कार्यक्रमों की पहले से ही शुरुवात की जाएगी। हमने विद्यालयों में पर्यावरण रक्षण की शपथ का कार्यक्रम शुरु किया है और उसको अच्छा सहयोग भी मिलने लगा है। अब इस शपथ पर अमल होना जरूरी है।

## यह घर मेरा –शहर भी मेरा

सभी ने अपने आस-पास के १० वर्ग फुट का परिसर भी स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त रखा तो भी पर्यावरण संरक्षण का बड़ा काम हो जाएगा। मैं मेरे आस-पास के १० वर्ग फुट का परिसर बदल कर दिखाऊंगा यह लक्ष्य प्रत्येक व्यक्ति को बनाना होगा। ज्येष्ठ चित्रपट अभिनेता अमिताभ बच्चन ने भी इस बावत लोगों से अपील की है। 'यह मेरा घर है, शहर भी मेरा ही है ' ऐसा प्रत्येक व्यक्ति को अपने गांव और शहर के प्रति लगना चाहिए। पर्यावरण रक्षा के आंदोलन में अपने गांव और शहर के बारे में 'अपनापन' बहुत महत्वपूर्ण है। 'मैं कचरा नहीं करूंगा और अन्य कोई कचरा कर रहा होगा तो मैं उसे रोकूंगा। 'सभी के मन में यह भावना जग गयी तो सवा सौ करोड़ की जनसँख्या वाला हमारा देश दुनिया में एक बड़ी क्रांति कर दिखायेगा।

## निश्चय किया तो कुछ भी संभव

पर्यावरण की रक्षा का काम कठिन लगता होगा लेकिन सब संभव है, यह कहते हुए आदित्य ठाकरे ने मुंबई में शुरु कचरे को वर्गीकृत करने की योजना के सफल अमलीकरण का उदाहरण दिया। सितंबर २०१७ में मुंबई में प्रतिदिन करीब १० हजार मैट्रिक टन कचरा जमा हुआ करता था। उस समय यह अंदाज लगाया जा रहा था कि २०१९ तक मुंबई में रोजाना १४ हजार मैट्रिक टन कचरा जमा होगा। लेकिन उसी समय मुंबई में सूखे और गीले कचरे को वर्गीकृत करने का निर्णय किया गया। गृह निर्माण सोसायटियों को इस बारे में जागरूक और प्रोत्साहित करना शुरु किया गया। घनकचरे का व्यवस्थापन करने वाले प्रोजेक्ट्स को एफएसआई में छूट दी गयी । इसका सकारात्मक परिणाम हुआ और साल २०१९ में अंदाजित १४ हजार मैट्रिक टन कचरा प्रत्यक्ष रूप में 6 हजार ५०० मैट्रिक टन पर आ गया। सूखा कचरा अलग कर लिया गया। यानी हमने निश्चय कर लिया तो कुछ भी संभव है। कचरे के व्यवस्थापन के ऐसे प्रयोग के लिए अब अन्य स्थानीय निकाय संस्थाओं को भी आगे आने की जरूरत है।

## प्लास्टिक से मुक्ति

प्लास्टिक बंदी का मुद्दा अब महत्वपूर्ण बन गया है। इस सम्बन्ध में पूछे गए सवाल के बारे में श्री आदित्य ठाकरे ने कहा कि प्लास्टिक की हर चीज खराब नहीं होती है। हम प्लास्टिक की कुर्सियों का इस्तेमाल करते हैं यह ठीक और जरूरी भी है क्योंकि इसकी वजह से लकड़ी की कुर्सियों का इस्तेमाल कम हुआ और लकड़ी का प्रयोग घटा, जिसकी वजह से वृक्षों की कटाई पर अंकुश लगा। लेकिन सिंगल यूज यानी एक बार उपयोग में आने वाला प्लास्टिक पर्यावरण के लिए खतरनाक है। २०१७ में मुंबई में हुई मूसलाधार बारिश के दौरान मैंने देखा कि पलास्टिक की थैलियां नालों में अटकी और इसकी वजह से नालों का पानी भर गया, पानी का निकास हो नहीं पा रहा था। इसी प्रकार यूज एन्ड थ्रो (इस्तेमाल करो और फेंक दो ) की प्रत्येक प्लास्टिक की वस्तु जैसे प्लास्टिक की प्लेट्स, चम्मच, कटोरियाँ, स्ट्रा, थैलियां पर्यावरण के लिए घातक हैं। इनका प्रयोग पूरी तरह से बंद करना जरूरी है। जो लोग कपडे की थैलियों

## इंग्लैण्ड में शेक्सपियर का घर

इंग्लैण्ड में शेक्सपियर के गांव स्ट्रेटफोर्ड – अपॉन – एवन की अपनी यात्रा के बारे में आये अनुभव को श्री आदित्य ठाकरे ने बताया कि 'इस गांव में शेक्सपियर का घर है। इस एक घर को देखने के लिए ही प्रतिदिन लाखों पर्यटक आते हैं। इन पर्यटकों की वजह से आसपास के क्षेत्र में रेस्टॉरेंट, कैफे, सोविनियर शॉप, सिनेमा गृह, बसें, टैक्सियां बड़े पैमाने पर चलती हैं। इन सभी व्यवसायों की वजह से वंहा के स्थानीय लोगों को रोजगार मिलता है। इस परिसर से राज्य और देश की अर्थ व्यवस्था को गति मिलती है। विदेशी मुद्रा मिलती है। यानी इतनी सारी बातें एक पर्यटन की वजह से हो सकती हैं। हमारे यंहा ऐसे अनेक स्थान हैं। इन स्थानों पर दुनिया के देशों से पर्यटक आये तो कायापलट हो सकता है। पर्यटन स्थल की वजह से उस संपूर्ण परिसर का विकास हो सकता है। वायु प्रदूषण कम करने के लिए भविष्य में हमें इलेक्ट्रिक वाहनों के प्रयोग पर बल देना होगा। इसके अलावा अपारंपरिक ऊर्जा के स्रोतों के प्रयोग करने की जरूरत है।

का प्रयोग करते हैं उन्हें प्रोत्साहित करना तथा उनका सम्मान करने के कार्यक्रम चलाने होंगे। प्लास्टिक पर बंदी के लिए सरकार ने तीन साल पहले क़ानून बनाया था। आज दुकानों व रेस्टॉरेंट में कैरी बैग दिखाई नहीं पड़ते हैं। रद्दी कागज.या कपडे की थैलियों की तरफ फिर से लोग लौटने लगे हैं। आने वाले समय में इस बात का ध्यान रखते हुए हमें इन बातों का प्रयोग बढाते हुए सिंगल यूज प्लास्टिक से पूरी तरह मुक्ति लानी ही होगी।

तीर्थ क्षेत्रों के परिसर की नदियों के प्रदूषण के बारे में उन्होंने कहा कि श्रद्धा के रूप में इन क्षेत्रों की नदियों का हमारे लिए बहुत महत्व है। लेकिन तीर्थ स्थलों के समीप इन नदियों का संवर्धन करना भी पर्यावरण की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। इनके अलावा राज्य की अन्य नदियों का पर्यावरण बचाना भी समय की जरूरत बन गया है। पीने के पानी के हमारे सभी स्रोतों को स्वच्छ रखना आवश्यक है। इसके लिए नदियों को प्रदूषण से मुक्त करने के लिए एक विस्तृत योजना बनाने का निर्देश मैंने विभाग को दिया है। इसमें नगर विकास, ग्राम विकास, पर्यावरण, उद्योग, पेयजल आपूर्ति और स्वच्छता जैसे सभी विभागों का सहयोग लेना पड़ेगा। सभी विभागों के समन्वय से राज्य की नदियां स्वच्छ और शास्वत रखने के उपाय शीघ्र किये जायेंगें। लेकिन इस काम में सिर्फ सरकारी स्तर पर ही कार्यवाही करने से काम नहीं चलने वाला है। इस काम में लोगों की सहभागिता और उनकी इच्छा शक्ति महत्वपूर्ण रहने वाली है। पहले हम प्रकृति के पुजारी थे और पृथ्वी, अग्नि, वायु, जल और आकाश की पूजा करते थे, बाद में उनको देवता बनाकर हम उनको ही गंदा करने लगे। इस पर रोक लगनी ही चाहिए। प्रकृति और उसके हवा, पानी, मिट्टी, वृक्ष, प्राणी, पक्षी, फूल आदि हर चीज को हमें बचाना होगा।

भविष्य में हम 100% इलेक्ट्रिक परिवहन कर सके तो वायु प्रदूषण में बड़े पैमाने पर कमी आ सकती है। इसी तरह उद्योगों को विविध नियम पालने के लिए बाध्य करना, उनसे नियमानुसार ग्रीन जोन का निर्माण कराना, उनसे निकलने वाले प्रदूषित पानी और ठोस कचरे के प्रबंधन के लिए उन्हें बाध्य करने पर बल देना होगा।

## पंढरपुर वारी (यात्रा)

पंढरपुर की यात्रा की एक बड़ी परंपरा हमारे पास है। मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे साहब ने जब इस यात्रा की हवाई फोटोग्राफी की थी उस समय मैं उस हेलीकॉप्टर में उनके साथ था। लेकिन मैं कैमरे को बगल में रख आश्चर्यचकित हो नीचे उस यात्रा को ही देख रहा था। लाखों लोग एक भावना से प्रेरित हो एक -दूसरे के साथ रहते हैं, आशीर्वाद देते -लेते हैं और भक्ति का उत्सव मनाते हैं। यह उत्सव आश्चर्यचकित करने वाला होता है। यह हम दुनिया को दिखा सकते हैं। हमारे गणेशोत्सव भी ऐसे ही हैं। जापान और स्पेन में भी ऐसे बड़े उत्सव मनाये जाते हैं। वंहा लाखों की संख्या में विदेशी पर्यटक जाते हैं। हम भी अपने इन उत्सवों में ऐसे ही पर्यटकों को आकर्षित कर सकते हैं।

## राज शिष्टाचार और पर्यटन

पर्यटन को अपना पसंदीदा विभाग बताते हुए इसके माध्यम से राज्य और देश में पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए क्या -क्या किया जाना चाहिए इसकी भी विस्तार से जानकारी आदित्य ठाकरे ने इस साक्षात्कार के दौरान दी। हमारे देश में जंहा बेरोजगारी बढ.रही है, जीडीपी कम हो रही है ऐसे में सेवा क्षेत्र पर ध्यान देने की बहुत जरूरत है। पर्यटन का विकास कर इन बातों को हम बड़े पैमाने पर साध सकते हैं। महाराष्ट्र, नाम से ही महान राज्य है। दुनिया के लोगों को यह राज्य दिखाना चाहिए। छत्रपती शिवाजी महाराज के किलों से लोग अपनी भावनाओं की वजह से जुड़े हुए हैं लेकिन इन किलों के स्थापत्य, ट्रेकिंग के लिए वंहा की बातें, इन किलों का इतिहास दुनिया के देशों में पंहुचाना होगा। राज्य में वर्तमान में ३५० किले हैं। इन किलों को पर्यटन के अंतरराष्ट्रीय नक्शे पर लाना होगा। इसके लिए इन किलों की मरम्मत, उनका सौंदर्यीकरण, वंहा पंहुचने के रास्ते, मूलभूत सुविधाएं इन सभी कार्यों को हमें करना होगा।

राज शिष्टाचार विभाग की जवाबदारी अपने पास लेने के पीछे उन्होंने राज्य के पर्यटन को गति देने का उद्देश्य बताया। राज शिष्टाचार विभाग के माध्यम से देश -विदेश के काउंसलेट जनरल, विदेशी मेहमान, उच्चायुक्त आदि से संपर्क होता है। उनके माध्यम से महाराष्ट्र दुनिया को दिखाने तथा दुनिया को महाराष्ट्र में लाने के अवसर प्राप्त होते हैं। दुनिया को हमारे यंहा लाना है तो सभी देशों के साथ सभी प्रकार के रिश्ते हमें बनाने पड़ते हैं। पर्यटन और राज शिष्टाचार, इन दोनों विभाग के माध्यम से राज्य के पर्यटन को तेज गति दी जा सकेगी। आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, स्विटजर लैंड, इंग्लैण्ड जैसे अनेक देशों की अर्थ व्यवस्था पर्यटन की वजह से ही चल रही है। अनेक

## मुंबई २४ घंटे

मुंबई २४ घंटे के मुद्दे पर श्री आदित्य ठाकरे पिछले कुछ दिनों से चर्चाओं में हैं। इस संकल्पना का जिस तरह से स्वागत हो रहा है उसी तरह से उस पर टीका -टिप्पणियां भी हो रहीं हैं। इस बारे में सविस्तार विवेचन करते हुए उन्होने बताया कि मुंबई एक अंतरराष्ट्रीय शहर है। न्यूयार्क, लंदन, सिंगापुर, हांगकांग जैसे शहर २४ घंटे खुले रहते हैं। अकेले लंदन की इकोनॉमी ५ बिलियन पाउंड की है। मुंबई में देश -विदेश के पर्यटक, उद्योगपति, उच्चायुक्त, सेलिब्रिटीज, विदेशी मेहमान बड़ी संख्या में आते हैं। उनके लिए २४ घंटे सेवा -सुविधा उपलब्ध कराया जाना जरूरी है। इसके अलावा मुंबई में नौकरी पेशा व्यक्ति दिन भर काम करके रात को थककर अपने घर पंहुचता है। उसको भी अपनी ख़ुशी मनाने के लिए, सिनेमा देखने या होटल -रेस्टॉरेंट या कैफे में जाकर कुछ खाने के लिए मुंबई अगर २४ घंटे खुली रही तो उसका निश्चित ही फायदा मिलेगा। वैसे भी यह प्रोजेक्ट हम अनिवासी क्षेत्र में ही शुरु कर रहे हैं। इसकी वजह से शहर के रिहायशी इलाके के लोगों को उससे कुछ तकलीफ नहीं होने वाली है। जिन स्थानों पर सुरक्षा व्यवस्था, सीसीटीवी, विविध प्रकार के लाइसेंस, पार्किंग, अन्न सुरक्षा, अग्नि सुरक्षा आदि का पालन किया जाता है ऐसे ही जगहों को यह सुविधा दी जा रही है। मॉल्स, मिल्स कम्पाउंड जैसे ठिकानों में ही यह संकल्पना शुरु की जा रही है।

मुंबई २४ घंटे, योजना पर विचार रोजगार वृद्धि और अर्थ व्यवस्था के विकास के दृष्टिकोण से करना जरूरी है। वर्तमान में मुंबई में सेवा क्षेत्र के करीब ५ लाख रोजगार हैं। ये रोजगार एक ही शिफ्ट में चलने वाले हैं। मुंबई २४ घंटे खुली रही तो ये रोजगार ३ शिफ्ट में शुरु हो सकते हैं और करीब १५ लाख तक यह आंकड़ा बढ.सकता है। इसके अलावा राजस्व में वृद्धि होगी, व्यापार बढेग़ा, सड़क पर रिक्शा, टैक्सी का कारोबार बढेग़ा, सप्लाई चेन बढेग़ी तथा अर्थ व्यवस्था को गति मिलेगी। मुंबई में पर्यटक या उद्योगपति आते हैं तो वे यंहा औसत ३६ घंटे रहते हैं। लेकिन मुंबई २४ घंटे की सुविधा होने के बाद वे यंहा २ से ३ दिन तक ठहर सकते हैं। पर्यटक शहर में रुके तो आने -जाने के लिए टैक्सी, शॉपिंग, होटल में खाना, रेस्टॉरेंट, कैफे, थियेटर्स, रिक्शा आदि व्यवसायों को गति मिलती है। इन कारोबार में नए रोजगार निर्माण होते हैं। इन कारोबार पर आधारित सब्जी से पेट्रोल पम्प जैसी सप्लाई चेन वाले विविध व्यवसायों का

विकास होगा। मुंबई २४ घंटे संकल्पना को यदि हाउसिंग के नजरिये से देखें तो हमें पता चलेगा कि यह एफएसआई डबल करने जैसा है। २४ घंटे की वजह से हम एक ही स्थान को दो बार की तरह इस्तेमाल कर सकते हैं। यह संकल्पना इंदौर से आयी है। वंहा एक जगह पर दिन में सर्राफा बाजार लगता है तो रात में खान -पान की गली चलती है।

देशों में बारह महीने पर्यटक रहते हैं। ऋतुओं के अनुसार भी पर्यटकों को आकर्षित किया जाता है। हमें भी ये सब बातें करनी होंगी।

## एआर -वी आर तकनीक का इस्तेमाल

महाराष्ट्र आगे बढा तो राष्ट्र आगे बढेग़ा क्योंकि देश की जीडीपी में सबसे बड़ा योगदान महाराष्ट्र का ही है। हमारे महाराष्ट्र की कुछ चीजें जान बूझकर दुनिया के सामने ले जाने की जरूरत है। गड -किले, मंदिर, यात्राओं की परंपरा, उत्सव, कोंकण का किनारा, इको ट्यूरिज्म, फारेस्ट ट्यूरिज्म, हेरिटेज ट्यूरिज्म, ग्रीन ट्यूरिज्म, स्पिरिचुअल ट्यूरिज्म जैसी पर्यटन की हमारे पास विविधता है। ये सारी चीजें हमें दुनिया को दिखानी है। राज्य में यूनेस्को द्वारा घोषित कुछ विश्व धरोहरें भी हैं। एआर -वीआर (ऑग्मेंटेड रियलिटी -वर्चुअल रियलिटी ) जैसे कुछ अत्याधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल कर पर्यटन स्थलों की जानकारी अधिक प्रभावी रूप से पर्यटकों तक पंहुचायी जा सकती है। इन सब बातों को मैं चुनौती नहीं अवसर के रूप में देखता हूँ।

## गांव जैसे होटल

हमें कोकण में भी पर्यटकों के लिए सेवा -सुविधाएं निर्माण करनी पड़ेगी। लेकिन यह करते समय कोंकण का सौंदर्य प्रभावित नहीं हो इस बात का भी ध्यान रखना होगा। गांव जैसे हैं उन्हें उसी प्रकार रखते हुए उनके जैसे अनुकूल होटल, रेस्टॉरेंट शुरु किये जा सकते हैं। होटल आधुनिक सुविधाओं वाले होने चाहिए लेकिन उनका स्वरुप उस गांव जैसा ही होना चाहिए।

पर्यावरण, पर्यटन और राज शिष्टाचार ये तीनों ही विभाग एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। इन तीनों में समन्वय बिठाकर राज्य के हित के लिए कुछ बड़ा करने का मेरा मन है।

**शब्दांकन : इरशाद बागवान विभागीय संपर्क अधिकारी।**

# सरखेल

## महाराष्ट्र को आप पर गर्व है

जिसका अश्वदल उसकी पृथ्वी और जिसकी नौसेना उसका समुद्र इस बात को ध्यान में रख छत्रपति शिवाजी महाराज ने स्वराज्य के लिए पहली बार नौ सेना बनायी है। गुराब, गलबते, तरांडे, तारु, शिवाड, मचवा, पगार, वाघोर ऐसे विविध समुद्री वाहनों का निर्माण किया। छत्रपति संभाजी राजे ने यह सिद्धी, डच, पुर्तगाली आदि को शह देने के लिए नौसेना के विस्तार। छत्रपति की नौसेना बनाने में अनेक वीरों ने योगदान दिया उनमें से एक कान्होजी आंग्रे थे। २६ जनवरी को शिवाजी पार्क में निकाली गयी झांकी में स्वराज्य की सेवा करते हुए कान्होजी आंग्रे के नेतृत्व में किस तरह से समुद्र में स्वराज्य का भगवा तोरण चढाया गया, फहराने लगा, उसने अंग्रेज, डच और फ्रेंच पर समुद्र में कैसे नियंत्रण रखा, इस शौर्य गाथा को प्रदर्शित किया गया था। कुलाबा, विजय दुर्ग, सुवर्ण दुर्ग इन स्थानों पर जहाजों के निर्माण, शस्त्र निर्माण की बड़ी कामगिरी की थी। कान्होजी की अनुमति के बिना कोई भी समुद्र पर किसी भी प्रकार की आवाजाही नहीं कर सकता था। समुद्री व्यापारियों पर भी उनका नियंत्रण था। 'लहरों पर सवार होकर, तूफानों की हवा पीकर, शिवबाबा की यह नौसेना बनी, हाथ में अपना शीश लेकर, स्वराज्य का व्रत लेकर, लड़े ये सरदार दरिया के' इस प्रकार के शब्दों से जिनके कार्यों का वर्णन होता है, ऐसे कान्होजी आंग्रे को मन का मुजरा करने वाली इस झांकी का निर्माण सुप्रसिद्ध कला निर्देशक नितिन चंद्रकांत देसाई ने किया था।

इस झांकी में जहाज पर छत्रपति शिवाजी महाराज की अश्वारूढ. प्रतिमा लगाई गयी थी। कान्होजी आंग्रे के कार्यों की जानकारी दिखाने वाली लाइव प्रदर्शनी इस पर दिखाई जा रही थी। इस परेड में ६० कलाकारों ने हिस्सा लिया था।

**मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने मराठवाडा दौरे के दौरान अनेक विषयों पर नीतिगत निर्णय किये। मराठवाडा के उद्योगों को गति मिले इसके लिए आवश्यक उपाय करने का उन्होंने आश्वासन दिया। इसके अलावा कृषि आधारित व्यवसाय को प्रोत्साहित करने की बात भी उन्होंने कही। अधिकारियों के साथ की गयी जायजा बैठक में उन्होंने कहा कि किसान, मेहनतकश और युवाओं का विकास ही हमारी सरकार के कार्यों का केंद्र बिंदु है।**

**मराठवाडा दौरे के दौरान मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने विविध विकास कार्यों का निरीक्षण किया तथा उनसे सम्बंधित आवश्यक निर्देश भी दिए। इस अवसर उद्योगमंत्री सुभाष देसाई भी उपस्थित थे।**

# हम करेंगें ही

**संजीवनी जाधव -पाटिल**

*देखणी ती पाऊले जी ध्यासपंथे चालती*
*वाळवंटातूनी सुद्धा स्वस्तिपद्मे रेखिती...*

इसका भावार्थ है जो कदम एक ध्येय की तरफ चलते हैं वह मार्ग में आने वाली बाधाएं भी उनके लिए आसान हो जाती हैं। ऐसी ही कुछ पहचान मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे की दी जाए तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। सतत कार्य में लगे रहना उनका स्वभाव है। किसी भी समस्या का वैकल्पिक और सुयोग्य उपाय करते समय संवेदनशील तरीके से समस्या को समझने का तरीका क्या होता है यह मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के औरंगाबाद के पहले ही दौरे के दौरान देखने को मिला।

मराठवाडा में पिछले तीन चार सालों से अकाल का असर गहराता जा रहा है। इस समस्या का सामना करते हुए २०१९ में क्षेत्र को बेमौसम अतिवृष्टि का गंभीर सामना भी करना पड़ा। औरंगाबाद सहित मराठवाडा के उस्मानाबाद, बीड, लातूर इन जिलों के दो तालुकाओं में पानी तो चार तालुकाओं में सूखे की परिस्थिति थी। इसमें से किसी तरह से मार्ग निकालने में प्रशासन और किसान जद्दोजहद में थे तभी दीवाली के आसपास मराठवाडा को बेमौसम अतिवृष्टि ने एक दम से अस्त -व्यस्त कर दिया। जो किसान आतुरता से बारिश के पानी का इंतजार कर रहे थे उनके खेतों में महीने -देश महीने तक जमा रहे इतना पानी भर गया। इस बारिश के प्रकोप से किसानों की आँखें भर आयी। मुंह तक आया ग्रास छिन गया और फसलें चौपट हो गयी। यह परिस्थिति ठाकरे ने मुख्यमंत्री बनने से पहले इस भाग का दौरा करते समय देखी थी और उसका अनुभव किया था।

इस पूरी पार्श्वभूमि में शीतकालीन अधिवेशन के दौरान श्री ठाकरे द्वारा किसानों को दिलासा देने वाली कर्ज माफी की योजना निश्चित रूप से बड़ा आधार साबित हुई। मुख्यमंत्री पद की जवाबदारी स्वीकारने के साथ ही सरकार द्वारा घोषित किया गया यह निर्णय श्री ठाकरे के नेतृत्व क्षमता और किसानों के प्रति उनकी संवेदनशीलता की झलक दिखाने दिखा। मुख्यमंत्री का यह दौरा औरंगाबाद में लातूर, परभणी, उस्मानाबाद औरंगाबाद जिलों की समीक्षा बैठक तथा उद्योग विषयक महाएक्सपो २०२० के उद्घाटन के साथ संपन्न हुआ।

## उस्मानाबाद जिला

उस्मानाबाद जिले के विकास के लिए निधि कम पड़ने नहीं देने का वादा मुख्यमंत्री श्री ठाकरे ने किया है। मुख्यमंत्री ने कहा बिजली कनेक्शन के लिए पंजीयन पोर्टल निरंतर चालू रखें। सौर ऊर्जा प्रकल्प पूरा करने के लिए ठेकेदारों की संख्या बढाएं। महावितरण आपके द्वार योजना को और

अधिक प्रभावी तरीके से चलाएं, जनता के विकास के लिए और जिले के विकास के लिए सभी मिलकर अथक प्रयत्न करें यह सब की जवाबदारी है।

इस बैठक से पहले उनके हाथ से औरंगाबाद स्मार्ट सिटी प्रकल्प के तहत स्मार्ट सिटी बस व बस स्टॉप उपक्रम के संकल्प चित्र फलक का अनावरण किया गया। औरंगाबाद ग्रामीण भाग की महिलाओं व युवतियों में क़ानून के सम्बन्ध में जन जागृति करने के लिए मराठवाडा में पहली बार औरंगाबाद ग्रामीण पुलिस दल ने आधुनिक शैक्षणिक पुलिस वैन शुरु की है। अड़चन या संकट के समय महिलाओं को तत्काल मदद मिले इसके लिए 'पुलिस ऐप' तैयार किया गया है। इस वैन को हरी झंडी दिखाकर श्री ठाकरे ने उसका लोकार्पण किया।

उस्मानाबाद जिले की बैठक के बाद मुख्यमंत्री ने औरंगाबाद महानगरपालिका के पानी, सड़क और कचरे के सन्दर्भ में शहर के लोगों के स्वास्थ्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण कचरे की समस्या पर बैठक की। उन्होंने कहा कि इन समस्याओं के निराकरण के लिए शीघ्र ही निधि उपलब्ध करायी जाएगी। उन्होंने कहा कि शहर कचरा मुक्त रहें, यह विषय राज्य सरकार प्रमुखता से ले रही है। उन्होंने कहा कि इसके अलावा जो शहर की समस्याएं हैं उनका समाधान भी शीघ्र किया जाएगा। स्मार्ट सिटी उपक्रम के लिए स्वतंत्र अधिकारी की नियुक्ति भी की जाएगी।

## औरंगाबाद जिला

औरंगाबाद जिले की समीक्षा बैठक में सिंचाई, पानी, सड़क, स्वास्थ्य, फसल बीमा, पर्यटन और शिक्षा से सम्बंधित सवालों पर श्री ठाकरे ने कहा कि सिल्लोड की पानी समस्या के निराकरण के लिए पुर्णा नदी पर अतिरिक्त बैरेज के लिए सर्वेक्षण किया जाएगा।

फसल बीमा योजना के सम्बन्ध में कंपनी के प्रतिनिधियों से बात की जाएगी ताकि किसानों को बीमा कंपनियों के कार्यालयों में चक्कर नहीं काटने पडे। मुख्यमंत्री के इस

## मुक्त संवाद

मुख्यमंत्री का दौरा मराठवाडा की जिला स्तरीय यंत्रणा व जन प्रतिनिधियों के विचार जानने के लिए था । 9 जनवरी को सुबह 11 बजे निधार्रित समय के अनुसार मुख्यमंत्री औरंगाबाद के विमानतल पर उतरे। उसके बाद गाड़ी से औरंगाबाद कलाग्राम, गरवारे संकुल परिसर में मराठवाडा एसोसिएशन ऑ. फ स्माल स्केल इंडस्ट्रीज एन्ड एग्रीकल्चर (मसिआ ) द्वारा आयोजित 'एडवांटेज महाराष्ट्र एक्सपो ' नामक औद्योगिक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। यंहा पर उन्होंने सिर्फ उद्घाटन की औपचारिकता नहीं निभाते हुआ प्रदर्शनी में उद्योगपतियों द्वारा प्रदर्शित उत्पादों का अवलोकन किया। विभागवार बनायी गयी स्टॉल्स में स्टॉल धारकों से उनके उत्पादन में आने वाली समस्याओं और उनके उपायों पर भी मुख्यमंत्री ने बहुत ही गंभीरता के साथ चर्चा की। इस तरह का व्यवहार करने वाला व्यक्ति संवेदनशील होता है।

मुख्यमंत्री की यह संवेदनशीलता और उनकी सादगी बार बार इस दौरे के दौरान देखने को मिली। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने किसानों और उद्योगपतियों की मेहनत और उनकी कडी इच्छा शक्ति के साथ सरकार द्वारा सक्रियता के साथ खड़े रहने का जो आश्वासन दिया उससे उद्योगपति काफी आशवस्त हो गए। उद्घाटन के अवसर पर श्री ठाकरे ने कहा कि, किसानों को कर्ज मुक्त करते हुए अब उन्हें चिंता मुक्त करने की भी सरकार की भूमिका है। उद्योग विकास के द्वारा यंहा किसान और भूमिपुत्रों को रोजगार दिलाने और उद्योगों को सक्षम करना सरकार की पहली प्राथमिकता है। उद्योग और कृषि इन दोनों विभागों के समन्वय से अन्न प्रसंस्करण और तेल बीज प्रसंस्करण जैसे कृषि उपज पर आधारित अन्न प्रसंस्करण उद्योग को बड़े पैमाने पर गति दी जाएगी। बिडकीन में ५०० एकड़ जमीन पर अन्न प्रसंस्करण केंद्र का शीघ्र ही भूमिपूजन कर तेजी से उस कार्य को पूर्ण किया जाएगा। यंहा पर १०० एकड़ जमीन महिला उद्योगपतियों के लिए आरक्षित भी की जाएगी।

इस क्षेत्र में बड़े पैमाने पर काम हो रहा है यह कहते हुए मुख्यमंत्री ने यंहा के उद्योगपतियों की हौसलाअफजाई की। अंतरराष्ट्रीय बाजार में अपनी स्वतंत्र पहचान बनाने की क्षमता महाराष्ट्र के मराठवाडा के औद्योगिक क्षेत्र की है। पारम्परिक उद्योग-व्यवसाय को आगे बढाते हुए अलग -अलग आधुनिक प्रयोग कर दुनिया को 'मेड इन इण्डिया ' की पहचान हम करा सकते हैं। इस बात का विश्वास मराठवाडा औद्योगिक क्षेत्र में हो रहे काम को देखकर होता है। उन्होंने इस प्रदर्शनी को मराठवाडा क्षेत्र की औद्योगिक ताकत दिखाने वाली बताया। इस उद्घाटन के बाद मुख्यमंत्री ने औरंगाबाद में लातूर, परभणी, उस्मानाबाद औरंगाबाद जिलों की समीक्षा बैठक तथा जन प्रतिनिधियों की उपस्थिति में विकास कार्यों की रिपोर्ट ली।

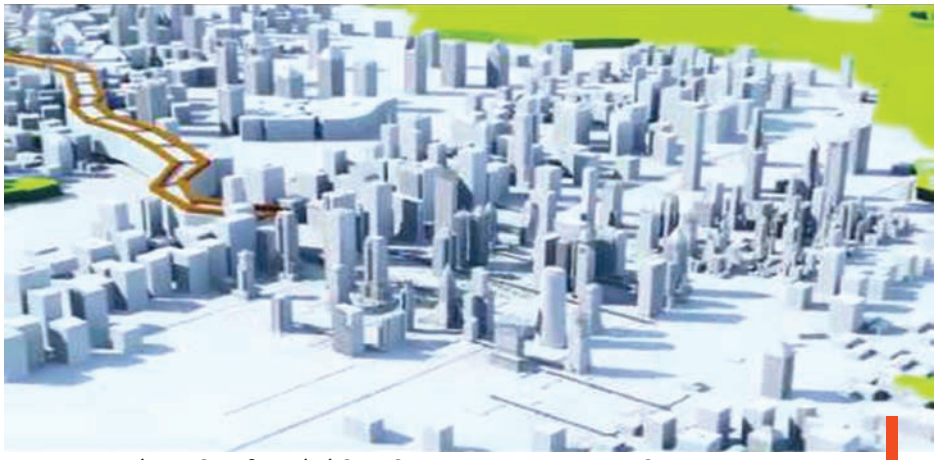

**शेन्द्रा-बिडकीन औद्योगिक विकास प्रकल्प का संकल्प चित्र।**

निर्णय से एक बार फिर किसानों के प्रति उनकी संवेदनशीलता नजर आती है।

## परभणी जिला

परभणी जिले की समीक्षा बैठक में कृषि विभाग के उप विभागीय कार्यालय शुरु करने का प्रस्ताव पर मुख्यमंत्री ने कहा इसे सरकार को भिजवाइए तत्काल मंजूरी दी जाएगी। रिक्त पदों के बारे में उन्होंने निर्देश दिए कि इस सम्बन्ध में रिपोर्ट लेकर एक महीने में पद भर दिए जाएँ। परभणी जिले के दयनीय होते खेल संकुल की मरम्मत के लिए मुख्यमंत्री ने निधि उपलब्ध कराने की बात कही तथा यह आशा जताई कि यंहा से आने वाले समय में अंतरराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी तैयार होंगे। पाथर्डी के विकास के लिए तीर्थ क्षेत्र विकास योजना के तहत निधि उपलब्ध कराई जाएगी। मेडिकल प्रवेश के लिए मराठवाडा के विद्यार्थियों को न्याय दिलाने के लिए प्रवेश सम्बन्धी जोन पद्धति की जांच कर उसमें सुधार किया जाएगा। परभणी बाई पास सड़क के लिए भू संपादन के सवाल का हल निकालने के लिए केंद्र सरकार से पत्र व्यवहार किया जाएगा। परभणी शहर की बढती पानी की जरूरत को ध्यान में रख अतिरिक्त पाइप लाइन, भूमिगत गटर योजना और जिले के बांधों के काम पूर्ण करने के निर्देश मुख्यमंत्री ने सम्बंधित अधिकारियों को दिए। येलदरी बाँध के पानी रिसाव को दूर कर सिंचाई के लिए बायीं और दांयी नहरें तैयार कर कृषि को भरपूर पानी उपलब्ध कराया जायेगा। उद्योगों को गति प्रदान करने के लिए नये औद्योगिक क्षेत्र के निर्माण के लिए शीघ्र जमीन उपलब्ध कराना, उसी प्रकार शहरी झौपड पट्टी धारकों को प्रधानमंत्री आवास योजना में लाने के लिए जिलाधिकारियों को कार्यवाही करने के निर्देश भी श्री ठाकरे ने दिए।

दौरे के दूसरे दिन सिडको के एमजीएम परिसर स्थित प्रियदर्शिनी उद्यान में प्रस्तावित बालासाहब ठाकरे के स्मारक की जगह का श्री ठाकरे ने निरीक्षण किया। इस अवसर पर उन्होंने इस परिसर में एक भी वृक्ष को नहीं काटने का निर्देश दिया तथा इसके उलट उन्होंने यंहा जामुन आदि के वृक्ष लगाने के निर्देश दिए ताकि यंहा बड़ी संख्या में पक्षी प्रवास कर सकें। ठाकरे का यह निर्देश

पर्यावरण के प्रति उनके प्रेम को दर्शाता है।

## लातूर जिला

लातूर जिले की समीक्षा बैठक के समय मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि अकालग्रस्त लातूर जिले की पानी की समस्या को प्रमुखता से सुलझाया जाएगा। उपलब्ध पानी संग्रह के सही तरीके से उपयोग के अलावा पानी को लेकर चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं का आपस में समन्वय कर पानी का नियोजन किया जाएगा। श्री ठाकरे ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि वर्षों से जिले की प्रलंबित समस्याओं का तत्काल समाधान निकाला जाय। फसल बीमा के सम्बन्ध में उन्होंने कहा कि जरूरत पड़ने पर बीमा कंपनियों के साथ सरकार स्तर पर समन्वय साधकर तत्परता के साथ फसल बीमा का पैसा किसानों के बैंक खाते में जमा करवाया जाएगा। किसानों के हितों के दूरगामी परिणाम लाने के लिए सरकार अपने स्तर पर योजना तैयार कर रही है। इसके लिए शीघ्र ही बैठकें भी की जाएगी तथा पडत पडी हुई जमीन का क्या प्रयोग एमआईडीसी के लिए किया जा सकेगा। मराठवाडा के इन चार जिलों की बैठकों के बाद शेष चार जिलों की बैठकों के लिए फिर से आने का आश्वासन श्री ठाकरे ने दिया। मराठवाडा की समस्याएं क्या हैं, इन समस्याओं का असर क्या है, इन समस्याओं के तात्कालिक और दीर्घकालिक उपाय क्या हैं, इन उपायों का अमल किस प्रकार से होता है, स्थानीय परिस्थितियों को देखते हुए इन उपायों में क्या -क्या सुधार किया जा सकता है, इन सभी बातों की दृष्टि से मुख्यमंत्री का यह दौरा बहुत महत्वपूर्ण साबित हुआ। मराठवाडा की विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए सरकार तैयार है यह सन्देश मुख्यमंत्री के दौरे से निकलकर आया है।

## स्वतंत्र मुख्यमंत्री कक्ष

विभागीय आयुक्त कार्यालय में 'मुख्यमंत्री सचिवालय कक्ष ' स्थापित किया गया।

**सूचना सहायक**

## महत्वपूर्ण घोषणाएं

- मराठवाडा में ८ हजार ३६० करोड़ का नया निवेश। बिडकीन में ५०० एकड़ जमीन में अन्न प्रसंस्करण केंद्र बनाया जाएगा, जिसमें महिला उद्योगपतियों के लिए १०० एकड़ जमीन आरक्षित।
- शेंद्रा में कौशल्य विकास केंद्र।
- लातूर जिले के किसानों के लिए दूध संकलन के तहत दूध का पाउडर प्रकल्प। देवणी गाय के अंतरराष्ट्रीय पशु संशोधन केंद्र के मार्फत गायों की अच्छी नस्ल तैयार करने व संवर्धन के लिए जगह।
- उस्मानाबाद जिले की दृष्टिकोण से महतवपूर्ण कृष्णा मराठवाडा सिंचाई प्रकल्प के तहत मराठवाडा के लिए दिया जाने वाला पानी, कृष्णा खोरे आदि के सम्बन्ध में कानूनी तौर पर और तकनीकी बातों का अध्ययन कर इस बारे में रिपोर्ट महाराष्ट्र जल परिषद के पास भेजी जाएगी।
- परभणी में कृषि विभाग के उप विभाग कार्यालय शुरु करने के सम्बन्ध में सरकार को प्रस्ताव भेजने को मंजूरी।
- परभणी जिले में औद्योगिक क्षेत्र बनाने के लिए जमीन।

# एक नजर

**जनवरी २०२० की महत्वपूर्ण गतिविधियों की रिपोर्ट**

## मुंबई समुद्री पुल प्रोजेक्ट

देश के सबसे लम्बे समुद्री पुल मुंबई ट्रांस हार्बर लिंक के पहले कॉलम को खड़ा करने के काम का शुभारम्भ मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के हाथों हुआ। इस कार्य को पूर्ण करने की समय सीमा 54 माह है लेकिन इस पर कार्य तेजी से चल रहा है। और यह आशा है कि समय सीमा से पूर्व यह काम पूर्ण हो जाएगा।

**ऐसा है यह प्रोजेक्ट:** मुंबई शहर के शिवडी से मुख्य भूमि के न्हावा को जोड़ने वाला करीब २२ किलोमीटर लम्बाई का ६ लाइन (३ +३) मार्ग इसके तहत बनाया जाना है। इस पुल की समुद्र में लम्बाई १६. ५ किलोमीटर तथा जमीन पर करीब ५.५ किलोमीटर रहेगी। इस पुल को मुंबई शहर के शिवडी व

**मुंबई समुद्री पुल प्रोजेक्ट (मुंबई ट्रांस हार्बर लिंक) के पहले कॉलम को खड़ा करने के काम का शुभारम्भ मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के हाथों हुआ। इस अवसर पर उनके साथ नगरविकास मंत्री एकनाथ शिंदे, सांसद अरविंद सावंत, विधायक अजय चौधरी आदि उपस्थित थे।**

मुख्य भूमि के शिवाजी नगर व राष्ट्रीय महामार्ग 4 ब तथा चिर्ले गांव के पास इंटर चेंजेज बनेगें। यह भारत का सबसे लंबा समुद्री पुल होगा।

**प्रोजेक्ट की वर्तमान स्थिति:** ● यह प्रोजेक्ट जापान अंतरराष्ट्रीय सहयोग संस्था (japan International corporation Agency - JICA) से कर्ज लेकर बनाया जा रहा है। ● प्रोजेक्ट का निर्माण कार्य ३ स्थापत्य ठेकेदारों व १ इंटेलिजेंट ट्रांसपोर्ट सिस्टम ठेकेदार के माध्यम से कराया जा रहा है। प्रोजेक्ट के तीन पॅकेज के ठेकेदारों को २३ मार्च २०१८ को कार्यादेश दिया गया है। ● दिसंबर २०१९ के अंत तक प्रोजेक्ट के कार्य में करीब १९ % आर्थिक रूप से प्रगति हो चुकी है। पुल की नींव और स्तम्भ (खम्भे) बनाने का काम प्रगति पथ पर है। इसके अलावा सेगमेंट कास्टिंग और तात्कालिक पुल बनाने का काम भी चल रहा है। ● प्रकल्प के निर्माण की अवधि साढे.चार साल है। इसके अनुसार सितम्बर २०२२ तक इसे पूर्ण करने का नियोजन किया गया है।

## शिवभोजन थाली शुभारम्भ

गणतंत्र दिवस के दिन राज्य में शिवभोजन योजना का शुभारम्भ किया गया। पहले दिन राज्य में इस योजना का फायदा ११ हजार ४१७ लोगों ने उठाया।

राज्य की गरीब और जरूरतमंद जनता को रियायती दर में खाना उपलब्ध कराने के लिए मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के सक्रिय प्रयासों से शिवभोजन योजना को अमल में लाया जा रहा है। अब तक राज्य में १२२ शिवभोजन केंद्र शुरु किये जा चुके हैं। इन केंद्रों के माध्यम से गरीब जनता को १० रुपये में भोजन दिया जा रहा है। शिवभोजन राज्य सरकार की प्रमुख योजना है और इसीलिए इसको नियमों की कसौटी पर व्यवस्थित तरीके से चलाया जा रहा है। अन्न, नागरी आपूर्ति व उपभोकता संरक्षण विभाग को इस योजना के सही सञ्चालन के लिए विशेष निर्देश दिए गए हैं। शिवभोजन योजना के तहत अकोला जिले में २, अमरावती ३, बुलडाणा ३, वाशिम २, औरंगाबाद ४, बीड १, हिंगोली १, जालना २, लातूर १, नांदेड़ ४, उस्मानाबाद ३, परभणी २, पालघर ३, रायगड ४, रत्नागिरी ३, सिंधुदुर्ग २, परेल ३, अँधेरी ३, वडाला २, ठाणे ७, कांदिवली २, भंडारा २, चंद्रपुर ३, गड़चिरौली १, गोंदिया २, नागपुर ७, वर्धा २, अहमदनगर ५, धुळे ४, जळगांव ७, नंदूरबार २, नाशिक ४, कोल्हापुर ४, पुणे १०, सांगली ३, सातारा ४, सोलापुर में ५ केंद्र शुरु किये जा चुके हैं। सम्बंधित जिलों के पालक मंत्रियों के हाथों से इस योजना का शुभारम्भ किया गया है।

खानावळ (मेस), स्वयंसेवी संस्था, महिला बचत समूह, भोजनालय, रेस्टॉरेंट माध्यम शिवभोजन योजना चलाई जा रही है। यानी जिन केंद्रों को इस इस योजना को अमल में लाने की मान्यता दी गयी है वंहा दोपहर १२ से २ खाना उपलब्ध कराया जाता है। लाभार्थियों से १० रुपये के अतिरिक्त शेष रकम, अन्न व नागरी आपूर्ति विभाग से अनुदान के रूप में केंद्र चालकों को उपलब्ध कराई जानी है।

## केमोथेरेपी सुविधा

केमोथेरेपी सुविधा का विस्तार राज्य के सभी जिला चिकित्सालय में करने की योजना की घोषणा स्वास्थ्य मंत्री राजेश टोपे ने की। मंत्रालय में विभाग का कामकाज संभालने के बाद विभाग के अधिकारियों की समीक्षा बैठक

लेकर यह सुविधा राज्य भर में शुरु करने का निर्णय किया। राज्य में वर्तमान में ११ जिला चिकित्सालयों में कैममोथेरेपी की सुविधा उपलब्ध है। लेकिन कैंसर रोगियों की बढती संख्या को देखकर सभी जिला चिकित्सालयों में यह सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। इसके लिए टाटा चिकित्सालय के सहयोग से आवश्यक तकनीक सम्बन्धी बातें पूर्ण करने के निर्देश विभाग को दिए गए।

स्वास्थ्य संस्थाओं का नेटवर्क पूरे प्रदेश में फैला हुआ है फिर भी उसे और मजबूत करने, स्वच्छता और स्वास्थ्य अधिकारियों की उपलब्धता जैसी बातों पर अधिक ध्यान दिया जाएगा। उपलब्ध सेवाओं के माध्यम से नागरिकों को अधिक अच्छी पद्धति से सेवा प्रदान करने तथा नागरिकों का स्वास्थ्य सेवाओं की तरफ देखने का नजरिया बदलने के प्रयास किये जायेंगें। बदलती जीवन शैली की वजह से रक्तचाप, मधुमेह, हृदय रोग जैसी बीमारियों का प्रमाण बढ.रहा है। इन बीमारियों के बारे में लोगों में जन जागृति करने की जरूरत है। स्वास्थ्य अधिकारियों के रिकत पद भरते हुए ग्रामीण भागों के चिकित्सालयों में दवाओं की भरपूर मात्रा में उपलब्धता रहे इस बारे में भी स्वास्थ्य यंत्रणा को ध्यान रखना चाहिए। इस तरह के निर्देश स्वाथ्य मंत्री ने विभाग के अधिकारियों को दिए।

## आरक्षण की अवधि बढाई : संविधान सुधार

महाराष्ट्र विधानसभा और विधान परिषद की हुई एक दिन की विशेष बैठक में अनुसूचित जाती, अनुसूचित जन जाति के लिए लोकसभा और राज्यों की विधानसभाओं में आरक्षित स्थानों, एंग्लो इंडियन समाज के सदस्यों को मनोनीत प्रतिनिधित्व देने के प्रस्ताव समय सीमा वृद्धि प्रस्ताव को अगले १० तक के लिए बढा दिया गया है। संसद द्वारा मंजूर किये गए संविधान (१२६ वां संशोधन ) विधेयक २०१९ के समर्थन का यह प्रस्ताव था जिसे बिना किसी विरोध के सर्व सम्मति से पास किया गया।

## प्रत्येक तालुका में एक चिकित्सालय

सामान्य वैद्यकीय उपचारों के लिए सहायक सिद्ध होने वाली महात्मा जोतिबा फुले जन आरोग्य योजना का दायरा बढाया जा रहा है। अब हर तालुका में एक

## ६५०० आरोग्यवर्धिनी केंद्र

स्वास्थ्य मंत्री राजेश टोपे ने जानकारी दी कि स्वास्थ्य में प्रतिबंधात्मक और प्रबोधनात्मक सेवा लोगों तक पंहुचाने के लिए सभी उपकेंद्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र व नागरी प्राथमिक आरोग्य केंद्रों को चरणबद्ध तरीके से आरोग्यवर्धिनी केंद्रों में रूपांतर किया जा रहा है। मार्च के अंत तक प्रदेश में ६५०० आरोग्यवर्धिनी केंद्र कार्यान्वित हो जायेंगें।

गडचिरौली, वाशिम, उस्मानाबाद व नंदूरबार चार आकांक्षित जिले, इसी तरह भंडारा, चंद्रपुर, वर्धा, सतारा, पालघर, नाशिक, लातूर, पुणे, अहमदनगर, नांदेड, हिंगोली, गोंदिया, अमरावती, सिंधुदुर्ग, जळगांव जैसे इन जिलों में ११६९ स्वास्थ्य उपकेंद्र व सभी जिलों के १५०१ (ग्रामीण भागों के) व ४१३ (शहरी भागों के) प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, कुल मिलाकर ३०८३ स्वास्थ्य केंद्रों को आरोग्यवर्धिनी केंद्रों परिवर्तित किया जा चुका है।

दूसरे चरण में जालना, बीड, परभणी परभणी जैसे मराठवाडा के जिलों के साथ -साथ शेष बचे जिलों में भी ये केंद्र शुरु होंगे। इन केंद्रों में समुदाय आरोग्य अधिकारी के पद पर आयुवेर्दिक, यूनानी व नर्सिंग पदवीधारी नियुक्त किये जायेंगें। स्वास्थ्य सेविका, बहु उद्देशीय स्वास्थ्य सेवक, आशा कार्यकर्ता के माध्यम से इन आरोग्यवर्धिनी केंद्रों में आने वाले तथा इनके अंतर्गत आने वाले गावों में प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा को मजबूत किया जाएगा। चयनित समुदाय अधिकारी को 6 माह का प्रशिक्षण दिया जाएगा। २०१९-२० में पूर्व परीक्षा में उत्तीर्ण ३६९६ (२३८८ आयुवेर्दिक, २३३ यूनानी व १०७५ बी. एससी नर्सिंग ) समुदाय अधिकारियों का प्रशिक्षण अगस्त २०१९ से शुरु किया गया है। प्रशिक्षित समुदाय आरोग्य अधिकारी, निकास परीक्षा पास करने के बाद फरवरी 2020 से इन स्वास्थ्य उपकेंद्रों पर कार्यरत हो जायेंगें। मार्च से 3500 आरोग्यवर्धिनी केंद्र कार्यान्वित हो जायेंगें।

**राजेश टोपे**
आरोग्य मंत्री

आधुनिक जीवन शैली की वजह से असंसर्गजन्य रोगों में वृद्धि हुई है। वर्तमान में दी जाने वाली माता बाल संगोपन स्वास्थ्य सेवा में वृद्धि कर असंसर्गजन्य बुखार जांच के लिए स्वास्थ्य सेवा आरोग्यवर्धिनी केंद्र के माध्यम से दिए जाने का उद्देश्य है।

**आरोग्यवर्धिनी केंद्र में 13 सेवाएं:**

● प्रसूति पूर्व व प्रसूति सेवा ङनवजात भ्रूण व नवजात बालकों को दी जाने वाली सेवा ङ बाल और किशोर वय में होने वाली बीमारियां व टीकाकरण सेवा ● परिवार नियोजन, गर्भ निरोधक व आवश्यक स्वास्थ्य सेवा ङसंसर्गजन्य रोगों का नियोजन व बाह्य रुग्ण सेवा ङसंसर्गजन्य रोग नियोजन व उनकी जांच ● असंसर्गजन्य रोग नियोजन व उनकी जांच ङनाक-कान-गला व नेत्र से सम्बंधित बीमारियों की सेवा ● दन्त व मुख स्वास्थ्य सेवा ङबढती उम्र की बीमारियां व परिहारक उपचार ● प्राथमिक उपचार व आपातकालीन सेवा ● आयुष व योग

चिकित्सालय योजना शुरु करने का निर्णय किया गया है। सहभागी चिकित्सालयों की संख्या दो गुना भी इस योजना के तहत किया जाना है। वर्तमान में एक हजार चिकित्सालयों का इसमें समावेश है। स्वास्थ्य मंत्री राजेश टोपे ने इस बात का विश्वास जताया है कि इसकी वजह से अधिकाँश मरीजों को इसका फायदा होकर दिलासा मिलेगा। जन आरोग्य योजना के माध्यम से सामान्य नागरिकों को वैद्यकीय उपचार की सुविधा मिल रही है। पिछले कुछ समय से इस योजना में लाभ प्राप्त करने वाले मरीजों की संख्या बढाए जाने की मांग की जा रही थी। इस मांग को देखते हुए अब इस योजना का लाभ अधिक से अधिक लोगों को मिले इसलिए अब इसमें लाभ हांसिल करने वाले मरीजों की संख्या बढाने का निर्णय लिया जा जाने वाला है।

**सहभागी चिकित्सालयों की संख्या दो गुना:** वर्तमान में जन आरोग्य योजना में राज्य में ४९२ चिकित्सालय शामिल हैं। ३५५ तालुकाओं में से १०० तालुकाओं में यह हैं जबकि शेष तालुकाओं के मरीजों को जिला चिकित्सालय या समीप के तालुका चिकत्सालय में उपचार के लिए जाना पड़ता है। मरीजों को दूसरे तालुका में उपचार के लिए जाना नहीं पड़े, उन्हें यह सुविधा उनके तालुका में ही मिल सके इसलिए प्रत्येक तालुका में एक चिकित्सालय का समावेश किये जाने का निर्णय किया गया। इसकी वजह से इस योजना में अब एक हजार चिकित्सालयों को शामिल किया जा सकेगा।

## संविधान की प्रस्तावना वाचन

भारतीय संविधान की प्रस्तावना का २६ जनवरी के बाद से राज्य की सभी ग्राम पंचायतों, पंचायत समितियों और जिला परिषद में गणतंत्र दिवस, महाराष्ट्र दिन, स्वाधीनता दिवस या अन्य किसी राष्ट्रीय दिन पर सामूहिक वाचन होगा। इस २६ जनवरी से राज्य में संविधान को लेकर जन जागृति करने का यह उपक्रम शुरु किया गया है, इसकी जानकारी ग्राम पंचायत मंत्री हसन मुश्रीफ ने दी।

गणतंत्र दिवस, महाराष्ट्र दिन, स्वाधीनता दिवस पर ग्राम पंचायतों, पंचायत समितियों और जिला परिषद में संविधान की प्रस्तावना वाचन का यह उपक्रम किया जाएगा। इसके तहत संस्था के पदाधिकारी व नागरिक संविधान की प्रस्तावना का वाचन करेंगें। नागरिकों में संविधान के सम्बन्ध में जागृति हो, उनको अपने हक और कर्तव्यों की जानकारी मिले तथा लोकतंत्र और अधिक मजबूत बनाने की दृष्टि से यह उपक्रम शुरु किया गया है। इस २६ जनवरी को राज्य की २७ हजार ८७४ ग्राम पंचायत, ३५१ पंचायत समितियों तथा ३४ जिला परिषदों में यह उपक्रम शुरु किया गया।

## ५०० किसान सम्मान –मार्ग दर्शक कक्ष

किसान भाइयों को अपनी समस्याओं को बताने तथा कृषि से सम्बंधित विशेष योजनाओं की जानकारी उन्हें मिले, उन्हें अपने हक का एक मंच मिले इसके लिए तालुका और जिला स्तर पर कृषि कार्यालयों में किसान सम्मान व मार्ग दर्शन कक्ष शुरु किये गए हैं। इस मुहिम की शुरुवात रायगड जिले के अलिबाग तालुका में कृषि मंत्री दादाजी भुसे के हाथों से की गयी। राज्य भर में ५०० कृषि कार्यालयों में ये केंद्र शुरु किये गए हैं।

कृषि मंत्री ने किसान सम्मान व मार्ग दर्शन कक्ष शुरु करने तथा तालुका स्तर पर किसान समन्वय समिति स्थापित करने का निर्णय घोषित किया था। इस निर्णय को लागू करने के लिए राज्य भर में ऐसे मार्गदर्शन केंद्र शुरु करने के लिए कृषि विभाग तैयार है। कृषि मंत्री भुसे ने बताया कि इस सन्दर्भ में विभाग के द्वारा सरकार का निर्णय भी जाहिर किया जा चुका है, जिसमें मार्गदर्शन कक्ष व समितियों के संबंध में निर्देश दिए गए हैं। कृषि उपज की उत्पादकता तथा आय में नियमित वृद्धि रखने के लिए सरकार के विविध विभागों के माध्यम से किसानों के लिए जो योजनाएं चलाई जाती हैं उनके अमल में समन्वय स्थापित करने के लिए तालुका स्थित समिति महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे की किसानों को चिंता मुक्त करने के उद्देश्य के लिए कृषि विभाग के माध्यम से किसानों को केंद्र में रख इस योजना को चलाया जा रहा है। किसानों की आय में वृद्धि के लिए तालुका स्तर की समिति की हर तीन महीने में एक बार बैठक होगी। इस बैठक में किसानों की समस्याओं पर चर्चा की जाएगी। मौसम, फसल की परिस्थियों, विपणन, कृषि कर्ज, कृषि आधारित व्यवसाय, बिजली कनेक्शन, किसानों के कर्ज के मामले आदि विषयों पर इन समितियों में चर्चा होगी।

## सरकारी कामकाज के लिए पैन अनिवार्य

**अजित पवार**
उपमुख्यमंत्री

राज्य सरकार के साथ किये जाने वाले किसी भी प्रकार के आर्थिक कामकाज के लिए अब पैन क्रमांक को अनिवार्य कर दिया गया है। राजस्व की चोरी पर अंकुश लगाने के लिए उप मुख्यमंत्री अजित पवार की अध्यक्षता में हुई बैठक में यह निर्णय किया गया।

विकास योजनाओं और मूलभूत प्रकल्पों को तेजी देने के लिए राज्य की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए वित्त मंत्री श्री पवार ने अपना ध्यान केंद्रित किया है। विभिन्न विभागों की राजस्व बढाने के लिए समीक्षा बैठकें की जा रही है। राजस्व में वृद्धि करने के साथ -साथ उसकी चोरी पर अंकुश कैसे लगाया जा सके इसके भी उपाय किये जा रहे हैं। ऑनलाइन लॉटरी में बड़े पैमाने पर राजस्व चोरी हो रही है इसलिए आने वाले समय में ऑनलाइन लॉटरी पर पाबंदी लगाकर पेपर लॉटरी शुरु करने का निर्णय किया गया है। होटल में बेचे जानी वाली शराब पर दो प्रकार के क्र लगाए जाते हैं लेकिन अब होटल में बिक्री होने वाली शराब पर कर रद्द कर शराब बनाने वाली कंपनियों पर ही उस कर को बढाया जाएगा। इस निर्णय की वजह से राज्य के राजस्व में वृद्धि होने की अपेक्षा है।

## डॉ.शंकरराव चव्हाण के नाम पर जल भूषण पुरस्कार

जल संपदा, जल संधारण व पानी आपूर्ति के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले व्यक्ति को पूर्व मुख्यमंत्री स्व. डॉ. शंकरराव चव्हाण के नाम पर जल भूषण पुरस्कार देने का निर्णय राज्य सरकार ने किया है।

महाराष्ट्र राज्य की नीति निर्धारण में अमूल्य योगदान देने वाले तथा जल संस्कृति के जनक पूर्व मुख्यमंत्री स्व. डॉ. शंकरराव चव्हाण की जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में यह निर्णय किया गया है। उन्होंने 'पानी रोको -पानी संचय करो ' का नारा देकर राज्य को अकाल मुक्त करने के लिए जल संस्कृति लायी थी। राज्य की अनेक सिंचाई परियोजनाएं उनके प्रयासों से पूर्ण हुई थीं। अकाल से मुक्ति के लिए उनके विचार आज की पीढी तक पंहुचाने की जरूरत है। उनके कार्य और संकल्पना के प्रचार -प्रसार करने का निर्देश राज्य सरकार ने दिया है और इसी का एक भाग जल भूषण पुरस्कार दिया जाना है। इसके अलावा जल क्रांति विषयक विचारों को गति देने के लिए राज्य सरकार की तरफ से सन्दर्भ ग्रन्थ व लोकराज्य का विशेषांक भी प्रकाशित किया जाएगा।

नांदेड शहर के विष्णुपुरी प्रोजेक्ट के पास पूर्व मुख्यमंत्री स्व. डॉ. शंकरराव चव्हाण का स्मारक बनाने तथा नांदेड जिले के भोकर में पुलिस प्रशिक्षण केंद्र खोलने का निर्णय भी किया गया है। नांदेड शहर में पुस्तकालय, प्रतियोगी परीक्षा मार्ग दर्शन केंद्र व लडके -लड़कियों के छात्रावास आदि काम भी प्रस्तावित किये गए हैं। इन कार्यों के लिए निधि के लिए सम्बंधित विभाग आवश्यक प्रावधान करे इस बात के निर्देश भी सरकार ने दिए हैं। डॉ. शंकरराव चव्हाण का जन्म १४ जुलाई १९२० को हुआ था। १५ जुलाई २०१९ से १४ जुलाई २०२० तक उनका जन्म शताब्दी वर्ष है। इस उपलक्ष में राज्य सरकार ने उक्त निर्णय किये हैं। विधानसभा के आगामी बजट अधिवेशन में विधान परिषद और विधान सभा में स्व. डॉ. शंकरराव चव्हाण के कार्यों का गौरव करने का प्रस्ताव पेश किया जाएगा, इस बात की घोषणा पहले ही की जा चुकी है।

## महाराष्ट्र के ५४ पुलिसकर्मियों को राष्ट्रपति पदक

उल्लेखनीय कार्य के लिए दिया जाने वाले राष्ट्रपति पुलिस पदक की घोषणा केंद्रीय गृह मंत्रालय की तरफ से कर दी गयी है। देश भर के १०४० पुलिस अधिकारी व कर्मचारियों को इस बार राष्ट्रपति पदक दिया जाना है। इसमें इस बार महाराष्ट्र के ५४ पुलिस अधिकारी व कर्मचारियों का नाम शामिल है।

## सक्षम अभियान

पेट्रोलियम पदार्थों के संरक्षण के सम्बन्ध में जन जागृति करने के लिए पेट्रोलियम संवर्धन व संशोधन संगठन द्वारा आयोजित 'सक्षम अभियान 2020 '(संरक्षण क्षमता महोत्सव) कार्यक्रम का उद्घाटन अन्न व नागरी आपूर्ति तथा उपभोकत संरक्षण मंत्री छगन भुजबल के हाथों यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान में हुआ।

विकास की तरफ तेज गति से बढ. रहे देश व राज्य की ऊर्जा की बढती जरूरतों को पूरा करने के लिए पेट्रोलियम पदार्थों के आयात पर निर्भर रहना पड़ता है। ऐसी परिस्थितियों में ऊर्जा साधनों का कड़ाई से उपयोग देश व राज्य के स्थायी विकास और पर्यावरण संवर्धन के लिए महत्वपूर्ण कदम साबित होता है। राज्य सरकार पेट्रोलियम पदार्थों के पर्याय के रूप में अपारंपरिक ऊर्जा व अन्य साधनों के प्रयोग करने के उपाय कर रही है। 'सक्षम अभियान २०२० '(संरक्षण क्षमता महोत्सव ) १६ जनवरी से १५ फरवरी २०२० के बीच चलाया जा रहा है। इस अभियान का घोष वाक्य ठईंधन अधिक ना खपाएं -आओ पर्यावरण बचाएं ' है।

**'सक्षम अभियान 2020 'के उद्घाटन के अवसर पर अन्न व नागरी आपूर्ति तथा उपभोकता संरक्षण मंत्री छगन भुजबल। साथ में अन्न व नागरी आपूर्ति तथा उपभोकता संरक्षण विभाग के प्रधान सचिव महेश पाठक, इंडियन आयल कॉर्पोरेशन के प्रादेशिक समन्वयक सुजीत रॉय प्रतिज्ञा लेते हुए।**

**परिवहन संस्था पुरस्कार :**

राष्ट्रीय स्तर का दूसरा उत्कृष्ट राज्य परिवहन संस्था पुरस्कार बेस्ट के मुख्य प्रबंधक श्री लाड तथा उत्कृष्ट डेपो पुरस्कार बेस्ट के बांद्राडेपो को दिया गया है। राज्य स्तर पर उत्कृष्ट परिवहन पुरस्कार मुरुड (रायगड), पंचवटी (नाशिक ), यवतमाळ, श्रीवर्धन (रायगड ), पेण (रायगड), परभणी, पीएमपीएमएल की बालेवाड़ी डेपो को उत्कृष्ट डेपो पुरस्कार दिया गया है। इस अवसर पर पीसीआरए की सक्षम -संरक्षण क्षमता महोत्स्व वैन का भी उद्घाटन किया गया।

**राज्य के हितों की अनेक योजनाओं को मंत्रिमंडल में मान्यता दी जाती है। ऐसे ही कुछ निर्णयों की विस्तृत रिपोर्ट**

# मंत्रिमंडल में तय हो गया

## इंदु मिल में स्मारक

भारतरत्न डॉ. बाबासाहब आंबेडकर का इंदु मिल में बनने वाले स्मारक में उनकी प्रतिमा की ऊंचाई ३५० फुट करने का निर्णय बैठक में किया गया। इससे पहले इस प्रतिमा की ऊंचाई २५० फुट करना तय किया गया था। नए निर्णय के हिसाब से स्मारक के चबूतरे की ऊंचाई १०० फुट तथा उस पर स्थापित की जाने वाली प्रतिमा की ऊंचाई २५० फुट होगी। इस प्रकार से इस स्मारक की जमीन से ऊंचाई ३५० फुट होगी।

इस प्रोजेक्ट के लिए मुंबई महानगर प्रदेश विकास प्राधिकरण ने सुधारित प्लान पेश कर दिया है और अंदाजित खर्च को मान्यता भी दी जा चुकी है। यह खर्च प्राधिकरण के माध्यम से किया जाएगा बाद में उसका भुगतान राज्य सरकार करेगी। यह प्रोजेक्ट तीन साल में पूर्ण होना अपेक्षित है। इसके लिए ६ फरवरी २०१८ को कार्यादेश दिया गया। इस काम का संरचनात्मक प्लान १००% पूर्ण हो चुका है तथा सभी अनुमतियाँ प्रदान की जा चुकी हैं। प्रतिमा की ऊंचाई बढाने की वजह से नयी आवश्यक अनुमतियाँ तत्काल ली जाए इस बात के निर्देश भी दिए जा चुके हैं।

प्रतिमा की ऊंचाई बढाने की वजह से इसमें लगने वाले कांस्य और लोहे की मात्रा में वृद्धि होगी। साथ ही प्रतिमा की नींव में भी वृद्धि होगी। इस स्मारक में बौद्ध वास्तु रचना शैली का गुम्बद, पुस्तकलय व प्रदर्शनी करने की सुविधा होगी। इसके पाद में ६ मीटर चौड़ाई का चक्राकार मार्ग होगा।

इंदु मिल में बनने वाले भारतरत्न डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के प्रस्तावित स्मारक के संकल्प चित्र का निरीक्षण करते हुए ज्येष्ठ नेता शरद पवार, सामाजिक न्याय मंत्री धनंजय मुंडे।

## फसल बीमा योजना

२०१९ में रबी की फसल के लिए १० जिलों में फसल बीमा कंपनियों का चयन नहीं होने के सम्बन्ध में नीतिगत निर्णय के उपाय करने को मंत्रिमंडल की बैठक में मान्यता प्रदान की गयी है। यह समिति खरीफ फसल 2020 में ऐसी परिस्थितियों के निर्माण होने की स्थिति में फसल बीमा व फल बीमा के योजना के सम्बन्ध में आवश्यक उपाय सुझाकर निर्णय करेगी। यही नहीं वर्तमान योजना में चल रही विविध त्रुटियों को दूर करने के लिए उपाय भी सुझाएगी।

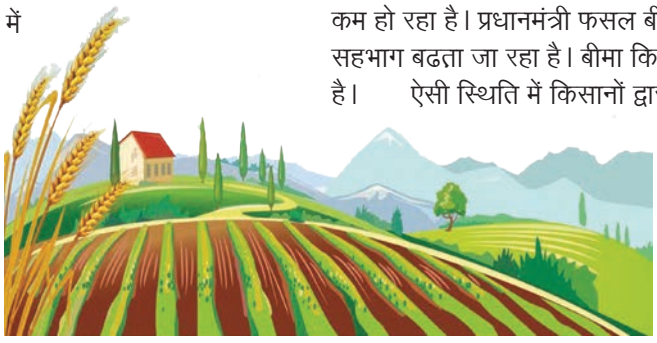

अनिश्चित मौसम की पार्श्वभूमि में किसानों को नियमित आय की गारंटी मिले इस पहलू को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना की शुरुवात की थी इस योजना में सुधार कर प्रदेश में २०१६ से प्रधानमंत्री कृषि बीमा योजना पर अमल किया जा रहा था।

ई निविदा पद्धति से जिला स्तर पर योजना को अमल में लाने के लिए यंत्रणा, केंद्र सरकार ने तय की गयी १८ बीमा कंपनियों में से ही की जाती है। आईसीआईसी लोम्बार्ड इंश्योरेंश, टाटा एआईजी जनरल इंश्योरेंश, चोला मंडलम जनरल इंश्योरेंश और श्री राम जनरल इंश्योरेंश इन चार बीमा कंपनियों ने योजना में राष्ट्रीय स्तर पर अपनी सहभागिता रोक दी है।

योजना पर अमल करने में आने वाली अड़चनों की वजह से बीमा कंपनियों का निविदा प्रक्रिया में प्रतिसाद हर फसल के लिए कम हो रहा है। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में किसानों का सहभाग बढता जा रहा है। बीमा किश्तों में अनुदानकी वृद्धि हो रही है। ऐसी स्थिति में किसानों द्वारा फसल बीमा की राशि नहीं मिलने की शिकायतें भी बढ. रही है। २०१९ की रबी की फसल में बीमा कंपनियों द्वारा इच्छा नहीं जताने की वजह से १० जिलों में अब तक यह योजना लागू कर पाना संभव नहीं हो सका। दूसरी बार निविदा निकालने के बावजूद बीमा कंपनियों की तरफ से कोई प्रतिसाद नहीं मिला। इसकी वजह से १० जिलों में खेती के खतरे का प्रबंधन करना आवश्यक हो गया है। आने वाली खरीफ की फसल में फिर से ऐसी स्थिति ना उत्पन्न हो जाए, इस बारे में योग्य उपाय ढूंढने के लिए मंत्रिमंडल की उप समिति स्थापित करने का निर्णय किया गया है।

इस स्मारक में ६८% खुली हरित जगह होगी। यंहा पर ४०० लोगों की बैठने की क्षमता वाला व्याख्यान व कार्यशाला लेने की सुविधा वाला ध्यान गृह होगा। १००० लोगों की बैठने की क्षमता वाला आधुनिक प्रेक्षागृह होगा।

## विशेषज्ञ संचालकों की नियुक्तियां रद्द

कृषि उत्पन्न बाजार समितियों पर की गयी विशेष निमंत्रितों (विशेषज्ञ संचालकों) की नियुक्तियां रद्द करने का निर्णय किया गया है। विशेषज्ञ संचालक नियुक्त करने के लिए महाराष्ट्र कृषि उत्पन्न विपणन (विकास व विनियमन) अधिनियम १९६३ में किये गए इस सन्दर्भ के प्रावधान को भी अलग कर दिया गया है।

इस अधिनियम के अनुसार १३ जून २०१५ से विशेषज्ञ संचालकों की नियुक्तियां की गयी थी। इस प्रावधान को रद्द करने के सम्बन्ध में अध्यादेश निकालने का प्रस्ताव राज्यपाल के पास भेजने को मान्यता दी गयी। मुंबई उच्च न्यायालय की औरंगाबाद खंड पीठ द्वारा दिए गए निर्णय को ध्यान में रख अब तक इस प्रकार से की गयी नियुक्तियों के प्रकरण रद्द करने के सम्बन्ध में निर्णय लेने को मान्यता दी गयी है।

## एक सदस्यीय प्रभाग पद्धति

नगरपरिषदों में बहुसदस्यीय प्रभाग पद्धति की बजाय एक सदस्यीय प्रभाग पद्धति को लागू करने के लिए अधिनियम में सुधार करने के लिए अध्यादेश निकालने को मान्यता दी गयी है।

महाराष्ट्र नगरपरिषद, नगर पंचायत व औद्योगिक नगरी अधिनियम १९६५ की धारा १० (२) में नगर परिषद चुनाव के लिए प्रभाग पद्धति व सदस्य संख्या के विषय में प्रावधान है। २०१७ में किये गए सुधार की वजह से वर्तमान स्थिति में भू सदस्यीय प्रभाग पद्धति लागू की जाती है। इस प्रावधान के अनुसार प्रभाग में संभव है वंहा से २ या ३ से अधिक नहीं, सदस्य चुन कर आते हैं। लेकिन अब नगर परिषद क्षेत्र के प्रभाग के विकास कार्यों में तेजी लाने के लिए एक सदस्यीय पद्धति लागू करने का निर्णय किया गया है। बहु सदस्यीय प्रभाग पद्धति के लिए किया गया प्रावधान महाराष्ट्र नगरपरिषद (सुधार) अधिनियम २०१९ की शुरुवात में हुए चुनावों तक ही लागू रहेंगें। इस निर्णय को अमल में लाने के लिए विधि व न्याय विभाग की सलाह के अनुसार आवश्यक सुधारों के साथ मसौदा निश्चित किया जाएगा।

## स्मार्ट प्रकल्प

कृषि व कृषि आधारित व्यवसाय के सभी घटकों के सर्वांगीण विकास के लिए विश्व बैंक की सहायता से महाराष्ट्र राज्य कृषि व्यवसाय व ग्रामीण परिवर्तन प्रकल्प को अमल में लाने के सन्दर्भ में उसे मंत्रिमंडल की बैठक में पेश किया गया।

इस प्रकल्प के लिए विश्व बैंक की

सहायता से करीब २१०० करोड़ रुपये का निवेश किया जाएगा। इसमें विश्व बैंक के कर्जे का हिस्सा करीब १४७० करोड़ रुपये का है। राज्य सरकार का हिस्सा ५६० करोड़ रुपये तथा ७० करोड़ रुपये सीएसआर का रहेगा। इस प्रकल्प को लागू रहने की अवधि सात साल की निधार्रित की गयी है। स्मार्ट प्रकल्प के तहत कृषि उपज के विपणन विषयक मूलभूत सुविधाओं को निर्माण करने पर विशेष बल दिया जाएगा।

इसमें कृषि उपज के बाजार प्रवेश का पंजीयन, गुणवत्ता जांच, कृषि उपज की कंप्यूटर के माध्यम से नीलामी पद्धति, संग्रहण सुविधा, निर्यात सुविधा का निर्माण, जो सुविधाएं वर्तमान में हैं उनका आधुनिकरण व उन्हें सक्षम बनाना। इसके साथ ही कृषि उत्पन्न बाजार समितियों व निजी बाजार समितियों को ई ट्रेडिंग के प्लेटफॉर्म के माध्यम से एकीकृत बाजार नेटवर्क द्वारा जोड़ने की सुविधा का भी इसमें समावेश है। इसी तरह किसान उत्पादक समूहों का निर्माण, उनके सक्रिय सहभाग से किसानों को बाजार व्यवस्था से जोड़ना, कृषि उपज निकालने के बाद उसके प्रबंधन व प्राथमिक प्रक्रिया द्वारा मूल्य वृद्धि, ग्राहकों के लिए सुरक्षित खाद्य पदार्थ (safe food) उत्पादित करने में मदद और इन सभी उपक्रमों द्वारा किसानों की आय में वृद्धि कर उनके लिए आजीविका के स्त्रोतों का निर्माण करना इस प्रकल्प का प्रमुख उद्देश्य है।

प्रकल्प के माध्यम से स्वयं सहायता समूह, ग्राम संघ, प्रभाग संघ, किसान उत्पादक कंपनियां, सामान्य स्वारस्य समूह, किसान स्वारस्य समूह की स्थापना करना और उनको मजबूत बनाना और कौशल्य विकास भी किया जा सकता है। इसके अंतर्गत स्थापित संस्थाओं का वार्षिक कारोबार बढाना व उनका मुकाबला प्रस्थापित निजी व्यावसायिकों से करने के लिए सहायक सिद्ध होने वाली मूल्य वृद्धि करने वाली चेन तैयार की जा सकती है। किसान उत्पादक संस्था, उत्पादक समूह व अन्य सम्बंधित संस्था का विकास व्यापार केंद्र के रूप में किया जाएगा। इसी तरह विभाग निहाय बाजार सुलभता केंद्र की स्थापना की जाएगी। इस बाजार केंद्र में कृषि उत्पन्न बाजार समितियां, किसान उत्पादक संस्था, ग्रामीण बाजार, गोदाम महामण्डल, निजी बाजार आदि का समावेश होगा। ग्रामीण बाजारों से वितरण केंद्र की स्थापना और अनाज व फल -सब्जी बाजार समूह की स्थापना की जाएगी।

## पद निर्माण

अन्य पिछड़ा वर्ग, सामाजिक व शैक्षणिक पिछड़ा प्रवर्ग, विमुक्त जाति, भटकन्तु जन जाति, विशेष पिछड़ा प्रवर्ग

## नाग नदी का प्रदूषण रोकेंगे

नाग नदी का प्रदूषण रोकने के प्रोजेक्ट के लिए आवश्यक निधि के कर्ज की वापसी के लिए सरकार के हिस्से की रकम की गारंटी देने का निर्णय किया गया है। प्रकल्प को पूरा करने और उस पर नियंत्रण के लिए समन्वय समिति नियुक्त की जाएगी।

केंद्रीय पर्यावरण और वन मंत्रालय के माध्यम से राष्ट्रीय नदी कृति योजना के अंतर्गत नदी के किनारे के शहरों के दूषित पानी से नदियों के प्रदूषण को रोकने के प्रयास किये जा रहे हैं। उसके अनुसार राष्ट्रीय नदी संवर्धन महानिदेशालय, केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय ने राष्ट्रीय नदी संवर्धन योजना के तहत नाग नदी के प्रदूषण रोकने के लिए २४१२.६४ करोड़ रुपये के प्रस्ताव को मान्यता दी है। प्रकल्प को पूरा नागपुर महानगरपालिका द्वारा किया जाना है। नदी में जाने वाले गंदे पानी को रोकने, उसको दूसरी तरफ घुमाकर उसका उपचार करने, सीवेज ट्रीजट्मेंट प्लांट (एसटीपी) बनाने, सुलभ शौचालयों का निर्माण जैसे कार्य इस प्रोजेक्ट के तहत किये जायेंगें।

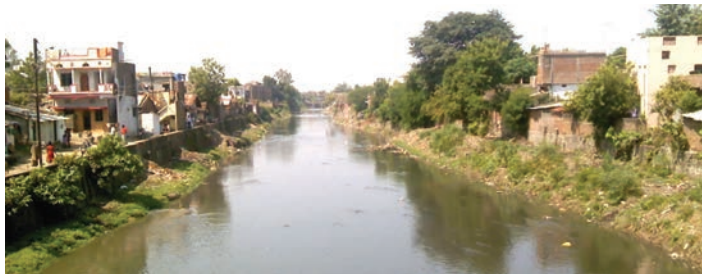

इस प्रोजेक्ट में केंद्र सरकार, राज्य सरकार व नागपुर महानगरपालिका का क्रमश ६०:२५ और १ %का हिस्सा रहेगा। यानी प्रत्येक को क्रमशः १४४७.५६, ६०३. १६ व ३६१.८६ करोड़ रुपये देने होंगे। योजना के लिए केंद्र सरकार जायका संस्था से १८६४.३ करोड़ रुपये का कर्ज लेने वाली है। इस कर्ज की वापसी में केंद्र सरकार का हिस्सा १४६०.४ करोड़ (कर्ज रकम का ७८. ३४ %) व राज्य सरकार का हिस्सा ४०३. ६ करोड़ (कर्ज की रकम का २१. ६६ % ) रहेगा।

राज्य सरकार के हिस्से की ६०३.१६ करोड़ (२५%) रकम में से ४०३. ६ करोड़ रुपये केंद्र सरकार जायका संस्था से लेगी। इस कर्ज की वापसी (कुल कर्ज का २१.७७%) इसी प्रकार राज्य सरकार के हिस्से की शेष राशि १९९.२६ की अतिरिक्त रकम की गारंटी केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय द्वारा देने का निर्णय किया गया है। इस प्रकल्प को पूरा करने और उस संनियंत्रण करने के लिए नागपुर के पालक मंत्री तथा ऊर्जा मंत्री डॉ. नितिन राऊत की अध्यक्षता में समन्वय समिति गठित की गयी है । इस समिति में गृह मंत्री अनिल देशमुख, क्रीड़ा व युवा कल्याण मंत्री सुनील केदार, पर्यावरण मंत्री आदित्य ठाकरे का समावेश किया गया है। नागपुर महानगरपालिका के आयुक्त समिति के सदस्य सचिव होंगे।

## अध्यापकों की प्रशिक्षण संस्था

राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आधुनिक शिक्षा पद्धति में हो रहे बदलावों पर नजर रखते हुए उच्च व तकनीकी शिक्षा विभाग के अधीनस्थ अध्यापकों व प्रधानाचार्यों को प्रशिक्षण देने के लिए कंपनी अधिनियम के अनुरूप अध्यापक विकास संस्था स्थापित करने की रूपरेखा को कुछ संशोधनों के साथ मान्यता प्रदान की गयी। इस कंपनी को स्वायत्ता मिले इस उद्देश्य से उसका निर्माण कंपनी अधिनियम के अनुरूप किया जाएगा। इसमें सरकार की हिस्सेदारी ४०%,राज्य तकनीकी शिक्षा मंडल की ५ % सभी विश्विद्यालयों का हिस्सा ४०%, स्वयं सेवी संस्थाओं व व्यावसायिक संस्थाओं का हिस्सा १०% तथा शैक्षणिक सस्थाओं व उद्योग का हिस्सा ५% रहेगा।

विश्विद्यालयों तथा महाविद्यालयों, संस्थाओं से सदयस्ता शुल्क लिया जाएगा, कॉर्पोरेट व बिजनेस हाउस से प्राप्त निधि से कॉर्पस फंड बनाया जाएगा। इस प्रशिक्षण संस्था का कामकाज चलाने के लिए प्रशासकीय समिति बनायी जाएगी तथा मुख्य सचिव उसके अध्यक्ष रहेंगें।

**संस्था के उद्देश्य:**

- उच्च शिक्षा देने वाले संस्थाओं के शिक्षकों को उद्योग, व्यवसाय व उनसे सम्बंधित क्षेत्रों का अत्याधुनिक ज्ञान, शिक्षा पद्धति व तकनीक से समृद्ध करना।
- विद्यार्थियों के शैक्षणिक गुणवत्ता में हुए बदलाव के आधार पर प्रशिक्षण के परिणाम की जांच कर प्रशिक्षण पद्धति में सुधार करना।
- उद्योग क्षेत्रों में उपलब्ध या भविष्य में होने वाले रोजगार के अवसरों के आधार पर नये पाठ्यक्रम विकसित करना तथा बदले हुए पाठ्यक्रम के लिए शैक्षणिक संस्थाओं को मार्गदर्शन करना।
- शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने के लिए सीखने -सिखाने की प्रभावी पद्धति को विकसित करना व शिक्षा के क्षेत्र में संशोधनों को प्रोत्साहित करना।
- शैक्षणिक दृष्टि से आगे राष्ट्रों व अन्य राज्यों की शिक्षा पद्धति का अध्ययन कर आधुनिक तकनीक आधारित व रोजगारभिमुख पाठ्यक्रम के लिए सरकार को सिफारिश करना व सलाह देना।
- मूलभूत/क्रिस कोर्स / अभिमुख और नियतकालीन प्रशिक्षण आयोजित करना।
- संस्था में पाठ्यक्रम और अध्यापन शास्त्र, अत्याधुनिक तकनीक, नेतृत्व विकास, भू अनुशासनात्मक अध्यापक समूह स सर्व समावेशक शिक्षा जिसे ५ उत्कृष्टता केंद्र प्रस्तावित। इनके द्वारा सर्व समावेशक प्रशिक्षण देना, उसी तरह से कमजोर वर्ग, महिला, दिव्यांगों में शिक्षण के बारे संवेदनशीलता निर्माण करना।

कल्याण इन प्रवर्गों के लिए सह सचिव तथा उप सचिव के पद निर्माण करने के लिए सरकार ने मान्यता दी है। सह सचिव संवर्ग का एक पद तथा उप सचिव संवर्ग का एक पद इसकी वजह से निर्माण होगा। इस विभाग के पास कुल ५२ पदों का आकृति बंद (सेवा नियम) है। विभाग के लिए नए ३७ पद नियमित व दो पद बाह्य स्त्रोतों से उपलब्ध किये जाने की इससे पहले मान्यता दी गयी है।

## सरपंच चुनाव

सरपंचों का चुनाव अब सीधे जनता से नहीं चुने गए सदस्यों के माध्यम से करने का निर्णय किया गया है। खर्च के विवरण के सन्दर्भ में सुधारित समय पत्रक में बदलाव करने को मंजूरी दे दी गयी है। सम्बंधित क़ानून में बदलाव करने के लिए अध्यादेश निकाला जाएगा।

## नगराध्यक्ष चुनाव

नगरपरिषद और नगरपंचायतों के नगराध्यक्ष पद के चुनाव अब निवार्चित नगरसेवकों के माध्यम से किये जायेंगें।

इसके लिए महाराष्ट्र नगरपरिषद, नगरपंचायत व औद्योगिक नगरी अधिनियम १९६५ में सुधार करने का निर्णय किया गया है। अभी नगराध्यक्ष का चयन सीधे जनता के माध्यम से होता है। अधिनियम में प्रस्तावित सुधार करने के लिए अध्यादेश प्रख्यापित करने के लिए राज्यपाल को अपील करने, विधि व न्याय विभाग की सलाह से अध्यादेश का मसौदे को अंतिम रूप देने को मान्यता दे दी गयी है।

## अधिव्याख्याता वेतन वृद्धि

राज्य की अकृषि विश्विद्यालयों व संलग्न गैर सरकारी अनुदानित महाविद्यालयों में जिन अधिव्याख्याताओं ने १ जनवरी १९९६ से पहले पी.एच.डी. पूरी कर ली है, उन्हें २७ जुलाई १९९८ की बजाय १ जनवरी १९९६ दो अतिरिक्त वेतन वृद्धियां देने के

निर्णय के प्रारूप को मान्यता दी गयी है। राज्य के पी.एच.डी. अहर्ता प्रपात अधिव्याख्याताओं की दो वेतन वृद्धि को मंजूरी पहले दी जा चुकी थी। केवल यह वेतन वृद्धि १९९६ से पहले करने का प्रस्ताव सरकार के पास विचाराधीन था। इस प्रस्ताव को मंजूर कर लिया गया है और इसके लिए लगने वाले खर्च को मान्यता दे दी गयी है।

## सुधारित वेतन श्रेणी

अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद के द्वारा की गयी सिफारिश के अनुसार सरकारी व गैर सरकारी नुदानित पदवी व पदविका संसथान, रसायन विज्ञान संस्था, सरकाती स्वामित्व का विश्विद्यालय, माटुंगा, इसी प्रकार से डॉ. बाबासाहब आंबेडकर तकनीकी शिक्षा विश्विद्यालय लोणेरे के शिक्षक व समकक्ष पदों को सातवां वेतन आयोग के अनुसार सुधारित वेतन श्रेणियाँ लागू की जाएगी। इस सम्बन्ध में मंत्रिमंडल की इससे पहले हुई बैठक में इति वृत्त को मान्यता दे दी है।

## वस्तु व सेवा कर सुधार

महाराष्ट्र वास्तु व सेवा कर (सुधार) अधिनियम २०१९ में सुधार करने का निर्णय किया गया है।

महाराष्ट्र वास्तु व सेवा कर (सुधार ) अधिनियम २०१९ की धारा २, धारा ७, धारा १०, धारा १३, धारा १४ से २० में किये गए प्रावधानों को अमल में लाने के लिए वस्तु व सेवा कर परिषद की सिफारिशों को उसकी सापेक्ष दिनांक से सुधार करने को मान्यता दी गयी है। इस प्रस्ताव को अमल में लाने के लिए अध्यादेश निकालने की इजाजत दी गयी है।

## कृषि उत्पन्न बाजार समिति

कृषि उत्पादन बाजार समितियों में केवल किसानों को मतदान देने का अधिकार देने के लिए २०१७ में सुधार किया गया था जिसे रद्द कर पहले की तरह से विविध कार्यकारी सेवा संस्थाओं में से सदस्य चयन करने की प्रक्रिया के लिए अध्यादेश प्रख्यापित करने को मान्यता दी गयी है।

कृषि उत्पन्न बाजार समितियों के चुनाव में हिस्सा लेने के लिए किसानों को मतदान का अधिकार है। इसकी वजह से मतदाओं की संख्या में बहुत वृद्धि हो गयी, जिसकी वजह से बाजार समितियों के चुनाव का खर्च बढ़ गया। इन समितियों को सरकार की तरफ से कोई अनुदान नहीं दिया जाता है। केवल बाजार शुल्क से ही ये समितियां अपना खर्च चलाती हैं। कुछ समितियों द्वारा चुनाव समय पर नहीं कराने को लेकर उच्च न्यायालय ने नाराजगी भी जताई है। इस वजह से किसानों को दिए गए मतदान के अधिकार पर पुनर्विचार किया गया। अब पहले की तरह विविध कार्यकारी सेवा सहकारी संस्थाओं व बहु उद्देशीय सहकारी संस्थाओं के प्रबंध समिति के सदस्यों में से चुने गए ११, ग्राम पंचायत सदस्यों में से चुने गए ४ ऐसे कुल १५ किसान प्रतिनिधियों के चयन का प्रावधान रखा जाएगा। २०१७ में बाजार क्षेत्र में रहने वाले कम से कम १० हेक्टेयर जमीन के मालिक, बाजार समितियों में कृषि फसल बेचने वाले किसानों को मतदान का अधिकार देने के लिए अधिनियम में सुधार किया गया था जिसे इस अध्यादेश के माध्यम से रद्द कर दिया गया है।

जलसंधारण के काम की वजह से पानी इस तरह से संचय किया जा सकता है।

# पानी की किल्लत ख़त्म

**नामदेव ज्ञानदेव चव्हाण**

वैश्विक तापमान वृद्धि का विपरीत असर मानव जाति पर होने लगा है। इसकी वजह से दिन -प्रतिदिन प्राकृतिक संपत्ति का नाश होता जा रहा है। इसके दुष्परिणाम को रोकने के लिए उपाय करना जरूरी हो गया है। इसके लिए केंद्र व राज्य सरकार के साथ -साथ स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा विविध प्रकल्प चलाये भी जा रहे हैं। इसके लिए निधि भी उपलब्ध कराई जा रही है। राज्य के पुलिस कर्मियों ने इस कार्य में अपनी सहभागिता निभाई है। पुलिस प्रशिक्षण केंद्र के कार्य क्षेत्र में सरकारी, अर्द्ध सरकारी व निजी संस्थाओं में समन्वय बनाकर नयी संकल्पना शुरु की गयी। पुलिस प्रशिक्षण केंद्र जालना में प्रशिक्षण केंद्र के सभी बाह्यवर्ग व अंतरवर्ग अधिकारी, प्रशिक्षक व उनकी टीम और प्रशिक्षण केंद्र में स्वेच्छा से श्रमदान करने वाले सभी प्रशिक्षणार्थियों ने सामूहिक सहयोग से श्रम निर्मित जल स्वराज्य का प्रकल्प प्रारम्भ किया।

## पानी की किल्लत पर मात

जालना शहर में कम बारिश होने की वजह से अकाल जैसी स्थित निर्माण हो गयी थी। पुलिस प्रशिक्षण केंद्र स्थित कुआँ और बोरवेल सूख गए थे। इस परिसर में लगे वृक्षों को बचाने के लिए प्रशिक्षणार्थियों को प्रतिदिन करीब आठ टैंकर पानी बाहर से मंगाना पड़ता था। पानी नहीं होने की वजह से इस प्रशिक्षण केंद्र में पुलिस सिपाही, कारागृह प्रशिक्षणार्थी, महाराष्ट्र सुरक्षा बल प्रशिक्षणार्थी (करीब ९२६ ) लोगों को प्रशिक्षण के लिए दूसरी जगह भेजना पड़ा था। बारबार पड़ने वाले इस सूखे की स्थिति से निपटने के लिए सात सूत्री कार्यक्रम की नीति बनायी गयी।

**जालना स्थित पुलिस प्रशिक्षण केंद्र में होने वाली बारिश के पानी का इसी परिसर में संचय करने की क्षमता विकसित करने का यश मिला है। पहले यंहा पर पानी संग्रहण के तीन क्षेत्र थे, इसके अलावा अब 16 नए संग्रहण, १ नए कुँए का निर्माण किया गया है। इससे करोड़ों लीटर पानी का संचय इस प्रशिक्षण केंद्र की हद में ही हो गया है। इस जल संग्रहण की वजह से यंहा के वृक्षों को लगने वाले पानी की जरूरत १०० % पूरी होना संभव हो गया है।**

- जानवरों को यंहा पर चरने की पाबंदी, इसके लिए प्रशिक्षण केंद्र की सीमा पर बाड़ लगाई गयी।
- जल संधारण क्षेत्र में पानी रोकने के लिए एनीकट बनाये।
- इन एनीकट में पानी रोकने के लिए छोटे, उसके बाद मध्यम तथा फिर बड़े मिट्टी के बाँध बनाये गए।
- मिट्टी के बांधों से पानी रोकने के लिए नालों को चौड़ा किया गया।
- परिसर के पानी के नालों से हावेर्स्टिंग, इमारत के पानी से रैन हावेर्स्टिंग और परिसर के बोरवेल के पुनर्भरण का काम किया गया।

- सम्पूर्ण जल संधारण क्षेत्र में नाले के दोनों तरफ प्रशिक्षण केंद्र में तैयार किये गए नीम व करंजी के ३५००० वृक्ष, अटल घन वन प्रकल्प के तहत ६०००० वृक्ष यानी कुल ९५००० वृक्षों को लगाया गया तथा उनकी देखभाल की गयी।
- नाले के पास के चार कुओं में ४० इंच व्यास को बढाकर ८० इंच चौड़ा किया गया। यह सभी कार्यक्रम चरणबद्ध तरीके से किये गए। इस काम में श्रमदान बहुत अमूल्य साबित हुआ। इस माध्यम से यह काम ९५ % सफल रहा।

## वृक्षारोपण

सरकार की वृक्षारोपण योजना के तहत पुलिस प्रशिक्षण केंद्र को दिए गए लक्ष्य के अनुसार प्रशिक्षण केंद्र परिसर में १०००० करंज, सीसम, इमली, नीम, बांस आदि के पेड़ लगाए गए। पुलिस प्रशिक्षण केंद्र की प्रशासनिक इमारत पीछे हरी जाली लगाकर नर्सरी बनायी गयी। रसोई में आने वाले दूध की खाली थैलियों को इकट्ठा किया गया। उनमें काली मिट्टी व खाद डालकर बांस, नीम, करंज, के ३५०० पौधे तैयार किये गए। विभागीय वन अधिकारी, सामाजिक वन विभाग जालना की मदद से पुलिस प्रशिक्षण केंद्र परिसर में २ हेक्टेयर क्षेत्र में 'अटल आनंद वन घर वन ' योजना चलाई गयी। इसमें करीब १८ स्थानीय प्रजाति, देसी प्रजाति के ६०००० वृक्ष लगाए गए। इस साल प्रशिक्षण केंद्र जालना में ९५००० वृक्षों को लगाने और उनकी देखभाल का कार्य शुरु है।

## जल संग्रहण में वृद्धि

दूसरे चरण में औद्योगिक क्षेत्र के बगल से जाने वाले पैदल रास्ते की ऊंचाई को बढ. ाया। ५२० मीटर लम्बा, ६० मीटर चौड़ा और २.५ मीटर गहरा तालाब तैयार किया। इसके जल संधारण क्षेत्र में छोटे बाँध, चरी, वृक्षारोपण कर, पास के वन विभाग की सीमा से आने वाले नाले के पूरे पानी को इस बाँध में लेकर पानी संचय करने वाली क्षमता का तालाब बनाया। प्रशिक्षण केंद्र के द्वार नंबर १ व २ के बीच के अपार्टमेंट के पीछे छोटे नाले पर ६ अतिरिक्त मध्यम आकार के मिट्टी के बाँध बनाकर पानी संचय करने की व्यवस्था बनायी गयी। इस प्रकार से इस हद में २५ नए पानी संग्रहण क्षेत्र अस्तित्व में आये और वे सभी आज पानी से भरे हुए हैं। कंटुर, चरी, बाँध, नाला चौड़ा करने के काम तथा पौधशाला व कलम तैयार करने की सविस्तृत जानकारी कर्मचारियों को देकर उनसे ये सब काम कराये गए। प्रशिक्षण क्षेत्र का परिसर विशाल है। इस क्षेत्र के शिवार की पानी संचय योजना, कर्मचारियों व अधिकारियों ने स्वयं श्रमदान कर छोटे, मध्यम और बड़े जलाशय तैयार किये हैं। लौटते मानसून में जालना शहर में अपेक्षा से अधिक बारिश हुई थी। इस अतिरिक्त बारिश की वजह से एक -एक कर छोटे, मध्यम, बड़े तालाब और नाले पानी से भर गए। प्रशिक्षण परिसर में जो बोरवेल पानी के अभाव में सूख गए थे उनमें फिर से पानी आ गया।

## स्वयंसेवी संस्थाओं की मदद

पुलिस प्रशिक्षण केंद्र में जल संधारण के अनेक कामों को देख जालना शहर में कार्यरत आनंदनगरी बहुउद्देशीय सेवाभावी संस्था के कार्यकर्ता, पदाधिकारी व कार्यकर्ता हमारे पास आये। उन्होंने अपनी पोकलैंड मशीन अल्प दर में एक महीने की कालावधि के लिए पुलिस प्रशिक्षण केंद्र को उपलब्ध कराई। प्रारम्भ में देवगिरी व वेरूळ निवासगृह के समीप के नाले को चौड़ा किया गया। प्रशिक्षण केंद्र से बहकर बाहर जाने वाले पानी को रोका गया। प्रशिक्षण केंद्र में होने वाली बारिश का पूरा पानी यंहा पर संचय करने की क्षमता इस प्रोजेक्ट की है। पुराने तीन पानी संग्रह और नए १६ पानी संग्रह क्षेत्र, एक नया कुआं निर्माण कर लाखों -करोड़ों लीटर पानी का संग्रह प्रशिक्षण केंद्र की सीमा में निर्माण किया गया। यह पानी प्रशिक्षण केंद्र परिसर में लगे वृक्षों की १०० % जरूरत को पूरा करने में सक्षम हैं।

**प्रशिक्षण केंद्र में बारिश का पानी रोककर जल संग्रहण निर्माण किया गया।**

**प्राचार्य, पुलिस प्रशिक्षण केंद्र -जालना**

**इजराइल एक महत्वपूर्ण ठिकाने पर बसा देश है। यह देश अफ्रीका और एशिया महाद्वीप दोनों के बीच एक कडी के रूप में है। इसकी वजह से प्राकृतिक सुंदरता, विविध संस्कृतियों का संगम और अफलातून मौसम इस देश को मिला है। इजराइल में अनेक पर्यटन स्थल हैं, जिसकी वजह से देश –विदेश के पर्यटकों का यह हमेशा आकर्षण केंद्र बना रहता है। अत्यंत विपरीत परिस्थितियों में विकास, वंहा की आधुनिक तकनीक और पर्यटन स्थलों की वजह से इजराइल ने बहुत तेजी से विश्व पर्यटन के मानचित्र पर अपनी जगह बनायी है।**

# छोटा देश –बड़ी उड़ान

**अजय जोगळेकर**

इस्त्रायलचा इजराइल का विकास के प्रति दृष्टिकोण और विकास की दृष्टि से उसकी प्राथमिकताओं के विषय इस बारे में इजराइल के काउन्सिल जनरल श्री याकोव फिंकलस्टाइन कहते हैं कि इजराइल ने हमेशा सभी राष्ट्रों के लिए प्रकाश दूत बनने की आकांक्षायें पाली है। (कदाचित किसी को यह बात गलत लगे) और इजराइल इस बात को एक चुनौती और जवाबदारी के रूप में देखता है। निरंतर नए -नए प्रयास कर पूरी दुनिया को सुन्दर बनाने की इस देश की इच्छा है और वह इसको लेकर प्रयास भी करता रहता है। इसकी वजह से पानी, कृषि, ऊर्जा, स्वास्थ्य जैसे विभिन्न क्षेत्रों की समस्याओं नए -नए हल निकालकर वह उन्हें सिर्फ अपने तक ही सीमित नहीं रखता दुनिया भर के देशों को उन्हें देने की उसकी नीति है। इसके साथ साथ उसने सुरक्षा, शारीरिक सुरक्षा से सायबर सुरक्षा जैसे विविध पहलुओं पर अत्याधुनिक तकनीक विकसित करने को प्रधानता दी है।

इजराइल की पहचान मूलभूत, स्वतंत्र नए विचार और उद्यमशीलता की वजह से 'द स्टार्ट अप नेशन' के रूप में मिली है। इस दृष्टिकोण से अनेक लोग यह कहते हैं 'इजराइली' आउट ऑफ़ द बॉक्स ' सोचते हैं। इस बारे में इजराइल के काउन्सिल जनरल श्री याकोव फिंकलस्टाइन कहते हैं

कि 'हम बॉक्स देखते ही नहीं और यही वजह है कि इजराइल आज मध्य पूर्व में नवीनता, अत्याधुनिक खोज, विकास, सायबर सुरक्षा, स्मार्ट सिटी और ऑटोमेशन (स्वयं चलित तकनीक ) के लिए 'सिलिकॉन सिटी' या भविष्य की तकनीक के लिए मिलने की इच्छा रखने वाली बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए एक प्रमुख केंद्र बन गया है।

## अनोखी परंपरा

वर्ष १९४८ में हमारे पूर्वजों ने स्वतंत्रता का घोषणा पत्र जारी करते समय जिस लोकतांत्रिक देश की कल्पना की थी, वो साकारने के लिए हम हमारी अनोखी परंपरा के लोकतांत्रिक मूल्यों को साध रहे हैं। इजरायली सरकार अपने हर नागरिक के फायदे के लिए विकास को गति देगी।

यह सरकार इजराइल के प्रेषितों की संकल्पना से राष्ट्र को अस्तित्व में लाने के लिए स्वतंत्रता, न्याय और शांति का मार्ग चुनेगी। धर्म, जाति, लिंग जैसे किसी भी आधार पर किसी से भेद नहीं करते हुए सभी निवासियों को समान सामाजिक व राजनीतिक हक मिलेंगें इस बात का ध्यान रखेगी, ये बातें स्वतंत्रता के घोषणा पत्र में कही गयी हैं।

अपने पड़ौसी देशों से शांतिपूर्ण व्यवहार करने के लिए इजराइल प्रयास करता रहता है। मध्य पूर्व में शांति स्थापित करने के लिए आर्थिक विकास और आधुनिकता का शिक्षा और संवाद से संगम होना आवश्यक है। और यही मध्य पूर्व में शांति स्थापित करने का मूलमंत्र है, ऐसा इजराइल का मानना है। हम देख रहे हैं कि इजिप्ट में शुरु हुई बदलाव की प्रक्रिया अब अरब व अन्य मुस्लिम देशों में भी फ़ैल रही है। वे इजराइली तकनीक,खेल और हमारे साथ द्विपक्षीय सम्बन्ध रखने के लिए उत्सुकता दिखा रहे हैं। इसकी वजह से हमारे क्षेत्र के भविष्य को लेकर मैं खूब आशावादी हूँ।

## सामंजस्य करार

श्री याकोव फिंकलस्टाइन ने इजराइल के काउन्सिल जनरल बनकर मुंबई आने के बाद से दोनों देशों के मैत्री सम्बन्ध बढाने के साथ साथ व्यवसाय बढाने की दृष्टि से भी अनेक नीतिगत कदम उठाये। वे कहते हैं जनवरी २०१८ में उनके देश के प्रधानमंत्री नेतन्याहू जब भारत दौरे पर आये तो वे मुंबई भी आये। इस दौरान मैं मुंबई में ही नियुक्त था यह मेरे लिए एक सौभाग्य की बात है। यह एक ऐतिहासिक दौरा था क्योंकि इजराइल के प्रधानमंत्री पहली बार मुंबई आये थे। इस ऐतिहासिक दौरे की वजह से भारत के पश्चिमी राज्यों में हमारे सहयोग की नीति की वजह से तेजी आयी है। इन राज्यों व इजराइल के दरम्यान आर्थिक, सांस्कृतिक और तकनीक विषयक सहयोग को खूब गति मिली। इस दौरे के बाद महाराष्ट्र सरकार व इजराइल की नॅशनल वाटर कंपनी के बीच मराठवाडा में वाटर ग्रीड प्रोजेक्ट का मास्टर प्लान तैयार करने का सहयोग करार हुआ। इस प्लान के तहत मराठवाडा क्षेत्र के ११ जलाशयों को जोड़कर इस क्षेत्र को अकाल मुक्त किया जा सकेगा। हमारे प्रधानमंत्री का स्वागत करने के लिए 'शालोम बॉलीवुड 'नामक सांस्कृतिक कार्यक्रम के तहत बॉलीवुड के दिग्गज कलाकार अमिताभ बच्चन, करण जौहर, ऐश्वर्या राय, सारा अली खान आदि आये थे। उस समय प्रधानमंत्री नेतन्याहू बॉलीवुड को इजराइल आने का न्यौता दिया था। इस दिशा में पहल भी शुरु हो गयी है। ' ड्राइव ' नामक सिनेमा के लिए जैकलीन फर्नांडीस और सुशांत राजपूत ने वंहा शूटिंग भी की है और उसका एक सीन नेटफ्लिक्स पर भी डाला गया है। स्मार्ट सिटी, स्मार्ट मोबिलिटी, सायबर, उच्च शिक्षा, स्टार्ट अप, इको सिस्टम जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ.ाने के लिए हम सरकारी व निजी क्षेत्रों से हाथ मिला रहे हैं।

## एक लगाव

आज बड़ी संख्या में भारतीय ज्यू समाज के लोग इजराइल में स्थांतरित हो गए हैं। इसकी वजह से इजराइल को लेकर सभी भारतीयों के दिलों में एक दिल से लगाव

रहता है। भारत के साथ द्विपक्षीय सम्बन्ध के बारे में जब इजराइल के काउन्सिल जनरल श्री याकोव फिंकलस्टाइन से पूछा गया तो उन्होंने बताया कि 'भारत के प्रधानमंत्री नरेंन्द्र मोदी और इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू की मुलाक़ात के बाद दोनों देशों के बीच सम्बन्ध आज सर्वोच्च स्तर पर हैं, लेकिन ये सम्बन्ध नए नहीं हैं। ज्यू व भारतीयों के बीच ऐतिहासिक सम्बन्ध हैं। लगभग 2 हजार सालों से भारत में रह रहे ज्यू समाज ने इस सम्बन्ध की नींव को मजबूत बनाया है। २९ जनवरी १९९२ में दोनों देशों के बीच पूर्ण राजनीतिक सम्बन्ध स्थापित होने के बाद से यह सम्बन्ध निरंतर बढते गए हैं। यह सहयोग त्रि स्तरीय हैं। सम्बन्ध दोनों देशों की 'सरकार से सरकार' के बीच का है। दूसरा सम्बन्ध दोनों देशों के बीच व्यापार का 'बिजनेस टू बिजनेस' तथा तीसरा सम्बन्ध दोनों देशों के नागरिकों के बीच यानी 'पीपल टू पीपल' है। दोनों देशों के बीच १९९२ में व्यापार दो सौ मिलियन डॉलर का होता था जो साल २०१८ में बढक़र ५. ८ बिलियन डॉलर का हो गया। आज अनेक भारतीय कंपनियां विशेषतः सूचना प्रौद्योगिकी व सायबर सिक्युरिटी, स्मार्ट मोबिलिटी, कृषि, जल प्रबंधन क्षेत्र की इजरायली तकनीक व संशोधन व विकास प्रणाली में निवेश करने लगी हैं। इजरायली विश्वविद्यालयों में भारतीय विद्यार्थियों की संख्या तेजी से बढ.रही है। इजरायल में पढऩे वाले विदेशी विद्यार्थियों में सबसे ज्यादा संख्या भारतीय विद्यार्थियों की ही है।

**शिवशाही में करीब २५ साल तक स्वराज्य की राजधानी का मान -अभिमान हांसिल करने वाला राजगड शिव प्रेमियों व दुर्ग प्रेमियों के लिए एक पसंदीदा गड है। शिवकालीन अनेक घटनाओं का साक्षीदार, बेलाग, आकर्षक निर्माण कार्य और छत्रपति शिवा-जी महाराज व राजमाता जिजाऊ साहब के सहवास का लाभ जैसी अनेक बातें हमें इस गड की तरफ खींच लाती हैं। गर्मी में अपनी मजबुती दिखाने वाला तथा बारिश में घनघोर हरियाली से आच्छादित तथा सर्दी में कोहरे में छुप जाने वाला यह राजगड है। इस गड से तोरणा, प्रतापगड, रायगड, लिंगाणा, सिंहगड, पुरंदर, वज्रगड, मल्हारगड, रोहिडा, रायेश्वर और लोहगड, विसापुर के किले दिखाई देते हैं। इसके लिए स्वराज्य का दर्शन लेने के लिए राजगड पर आना महत्वपूर्ण है।**

# गडों का राजा : राजगड

**सारंग खानापूरकर**

तोरणा जीतकर शिवराया ने स्वराज्य की नींव रखी। इस तोरणा पर उन्हें जो धन संपदा मिली उसका नीतिगत उपयोग करते हुए शिवराया ने मुरुंबदेव पहाड़ पर बुलंद राजगड का निर्माण किया। अत्यंत ऊंचाई, तीन बलशाली भुजाओं और मध्य भाग में ऊंची चोटी, ऐसे प्राकृतिक धरोहर वाले पहाड़ पर शिवराया ने भारी परकोटे के साथ मजबूत किला बनाते समय उसमें अभेदता भी लाई। स्वराज्य की पहली राजधानी का मान मिलने के बाद इस गड ने अनेक सुख -दुःख और तनाव की घटनाएं देखी।

राजाराम महाराज का जन्म देखने वाले इस गड ने शिवाजी महाराज की पत्नी सई बाई के निधन का दुःख भी देखा है। अफजल खान के वध के लिए महाराज इसी गड से प्रतापगड पर गए थे। आगरा से मुक्त होकर उन्होंने अपना पहला कदम राजगड पर ही रखा था। इसी गड से कामकाज संचालित करते हुए शिवराया ने स्वराज्य को बढ. ाया था। ईसवी सन १६४८ से १६७२ करीब २५ साल महाराज यंहा रहे थे, इसके बाद उन्होंने अपनी राजधानी रायगड स्थान्तरित की थी।

## पद्मावती माची

गड में सर्वाधिक समतल क्षेत्र इसी माची पर है और इसी वजह से शिवराया का आवास, शिवबंदी के कक्ष, सदर, सई बाई की समाधि, पद्मावती का मंदिर, पद्मावती तालाब, अनाज व शराब की कोठियां यंहा हैं। इस माची के निचले हिस्से में पद्मावती तालाब और चोर दरवाजा है। बीच के हिस्से में विश्राम गृह, शंकर मंदिर और पद्मावती मां का मंदिर है। मंदिर के सामने ही सई बाई की समाधि है।

## संजीवनी माची

पद्मावती माची के पश्चिम की तरफ संजीवनी माची है। तीन हिस्सों में नीचे की

तरफ उतरने वाली संजीवनी माची अढाई किलोमीटर लम्बे क्षेत्र में फैली हुई है। इसमें करीब १६ बुर्ज हैं। राजगड पर स्थित सुवेळा और संजीवनी माची के इन तटों के लिए बाहर से एक और चढाई है। इन सभी बुर्जो में एक से दूसरे में जाने के लिए मार्ग है। दो परकोटे, राजगड की विशेषता है। इस माची पर पानी की अनेक टंकियां हैं। संजीवनी माची पर आळू दरवाजे से भी आया जा सकता है। अंग्रेजी के शब्द ए के आकार की तरह यंहा का परकोटा वक्राकार होने की वजह से आळू दरवाजे का बाहर का दरवाजा अंदर से दिखाई नहीं देता तथा बाहर से अंदर का दरवाजा भी दिखाई नहीं देता है।

## सुवळा माची

गड के पूर्व दिशा में स्थित इस माची का नाम सुवेळा है। पद्मावती तालाब के बगल से ऊपर गए कि रामेश्वर मंदिर और पद्मावती मंदिर है। एक रास्ता मुख्य किले की तरफ जाता है जबकि एक बायीं ओर से सुवेळा माची की तरफ तथा तीसरा दाहिनी तरफ से संजीवनी माची की तरफ जाता है। सुवेळा माची के ऊपर की ओर जाते समय राह संकरी होती जाती है और आगे एक छोटी पहाड़ी पड़ती है। उसे डुबा कहते हैं। डुबा से घूमकर जुंझार बुर्ज के पास जाय जा सकता है। यह बुर्ज माची को दो भागों में बांटता हुआ है। सुवेळा माची के बीचोंबीच एक चट्टान खड़ी है। सामने से उसका आकार किसी हाथी की तरह लगता है। इस चट्टान के पेट में एक गाँठ जैसी है जिसे कुछ लोग बाघ की आँख भी कहते हैं। पहाड़ी किनारे के पास में मधु मक्खियों का छत्ता भी है। यंहा पर मधु मक्खियों के साथ छेड़छाड़ करने पर उनके द्वारा हमला कर देने के अनेक उदाहरण भी हैं, इसलिए यंहा ज्यादा शोर नहीं करें। सुवेळा माची के अंतिम टप्पे में वाघजाई का शिल्प भी है।

## गड की रचना

राजगड पर पद्मावती, सुवेळा और संजीवनी, तीन माची हैं। गड के बीच में एक चट्टान पर मुख्य किला बना हुआ है। हर माची के लिए एक स्वतंत्र दरवाजा है। पद्मावती माची पर जाने के लिए पाली दरवाजा, संजीवनी माची के लिए आळू दरवाजा, सुवेळा माची पर जाने के लिए गुंजवणे दरवाजा है। इस गड पर आने के लिए प्रमुख भाग पद्मावती माची पर लाकर छोड़ता है। पाली दरवाजा राजमार्ग होने की वजह से यंहा पालकी आ सकते वह इतना चौड़ा और ऊँचा है। महा दरवाजे पर स्थित बुर्ज में जाने के लिए सीढियां बनी हुई हैं। ऊपर के दरवाजे के बुर्ज से नीचे का पूरा मार्ग दिखाई पड़ता है। प्रवेश द्वार का संरक्षण बड़े बुर्जो से किया हुआ है। दरवाजे से अंदर आने पर दोनों ही तरफ पहरेदारों के लिए स्थान बनाये गए हैं। इस दरवाजे से गड पर आने से हम पद्मावती माची पर पंहुचते हैं।

## देखने योग्य अन्य स्थान

- **पद्मावती तालाब:** पद्मावती माची पर आने पर एक सुन्दर निर्माण कार्य वाला विशाल तालाब देखने को मिलता है। इस तालाब की दीवारें अभी भी साबूत हैं। तालाब में जाने के लिए दीवार पर ही एक कमान बनायी हुई है।
- **गुंजवणे दरवाजा:** यह दरवाजा तीन प्रवेश द्वारों की एक मालिका है। पहला दरवाजा सादा है लेकिन बहुत मजबूत है। दूसरे दरवाजे पर एक विशेष कमान बनायी हुई है। इसकी नक्काशी देखने योग्य है। इस दरवाजे से अंदर आने पर पद्मावती माची शुरु हो जाती है।
- **आळू दरवाजा:** संजीवनी माची पर आने के लिए यह मार्ग था। तोरणा से राजगड आने का यह मार्ग रहा होगा।

**लेखक दै. सकाळ में पत्रकार हैं ।**

## गड पर कैसे पंहुचें

**पुणे से दूरी :**48 किलोमीटर, समुद्र तल से ऊंचाई 1394 फुट

पुणे -सातारा मार्ग पर नरसापुर चौराहे से अंदर जाने पर आगे राजगड जाने का मार्ग है। कर्जत, पाली, पुणे, गुंजवणे इन बस स्थानकों से जाने के लिए महाराष्ट्र राज्य परिवहन मंडल की गाड़ियां हैं।

**गड पर जाने के लिए मार्ग**

**गुप्त दरवाजा**: वाजेघर नामक गांव में उतरकर राजगड जाया जा सकता है। बाबुड़ा झापा से एक घंटे की दूरी पर रेलिंग है। रेलिंग के सहारे राजगड पर जाया जा सकता है।

**पाली दरवाजा :** पुणे -वेल्हे एसटी से वेल्हे मार्ग पर पाबे गांव के यंहा उतरें। कानद नदी पार कर पाली दरवाजे तक जा सकते हैं। यह मार्ग सीढियों वाला है और सबसे आसान भी है। इस मार्ग से गड पर जाने के लिए तीन घंटे लगते हैं।

**गुंजवणे दरवाजा :** पुणे -वेल्हे ख़ास मार्ग पर मार्गासनी गांव में उतरकर साखर मार्ग से गुंजवणे गांव जाय जा सकता है। यह राह थोड़ी परेशानियों से भरी है, इसलिए बिना किसी जानकार व्यक्ति के इस मार्ग से नहीं जाएँ।

**रहने की सुविधा :** गड पर पद्मावती मंदिर में रहा जा सकता है। इसके अलावा पर्यटक निवास के कमरें हैं। खाने की व्यवस्था आपको स्वयं करनी होगी। किले पर पानी के स्रोत होने की वजह से साल भर पानी उपलब्ध रहता है।

# मंत्रिमंडल

| मंत्री | विभाग | कार्यालयीन पता | पालकमंत्री |
|---|---|---|---|
| श्री. उद्धव बाळासाहब ठाकरे | सामान्य प्रशासन, सूचना प्रौद्योगिकी, सूचना व जनसम्पर्क, विधि व न्याय और वे सभी विभाग जो किसी मंत्री को आवंटित नहीं किये गए हैं। | मंत्रालय मुख्य इमारत, ६ठा मजला दालन क्र. ६०१ | -- |
| श्री. अजित अनंतराव पवार<br>उप मुख्यमंत्री | वित्त व योजना | मंत्रालय मुख्य इमारत, ६ठा मजला (उत्तर बाजू) | पुणे |
| श्री. सुभाष राजाराम देसाई | उद्योग, खनन व मराठी भाषा | मंत्रालय मुख्य इमारत, ५वां मजला (मध्य बाजू)<br>दालन क्र. ५०२ | औरंगाबाद |
| श्री. अशोक शंकरराव चव्हाण | सार्वजनिक निर्माण<br>(सार्वजनिक उपक्रम को छोडकर) | मंत्रालय विस्तार इमारत, दूसरा मजला,<br>दालन क्र.२०५ ते २०७ | नांदेड |
| श्री. छगन चंद्रकांत भुजबल | अन्न नागरी आपूर्ति तथा ग्राहक संरक्षण | मंत्रालय मुख्य इमारत, दूंसरा मजला (मध्य बाजू)<br>दालन क्र. २०२ | नाशिक |
| श्री. दिलीप दत्तात्रेय वळसे पाटिल | कामगार राज्य उत्पादन शुल्क | मंत्रालय विस्तार इमारत, ५वां मजला,<br>दालन क्र. ५०७ | सोलापुर |
| श्री. जयंत राजाराम पाटिल | जल संपदा व लाभ क्षेत्र विकास | मंत्रालय विस्तार इमारत, ६ठा मजला, दालन क्र. ६०७ | सांगली |
| श्री. अनिल वसंतराव देशमुख | गृह | मंत्रालय मुख्य इमारत, पहला मजला, दालन क्र. १०१ | गोंदिया |
| श्री. विजय उर्फ़ बालासाहब<br>भाऊसाहब थोरात | राजस्व | मंत्रालय विस्तार इमारत, पहला मजला, दालन क्र. १०८ | -- |
| डॉ. राजेंद्र भास्करराव शिंगणे | अन्न व औषधि प्रसाधन | मंत्रालय मुख्य इमारत, पहला मजला, दालन क्र. १०३ | बुलडाणा |
| श्री. राजेश अंकुशराव टोपे | स्वास्थ्य व परिवार कल्याण | मंत्रालय मुख्य इमारत, चौथा मजला, दालन क्र. ४०३ | जालना |
| श्री. नवाब मोहम्मद इस्लाम<br>मलिक | अल्पसंख्यक विकास एवं वक्फ प्रतिभा,<br>कौशल विकास और उद्यमिता | मंत्रालय मुख्य इमारत, दूसरा मजला, दालन क्र. २०३ | परभणी |
| श्री. हसन मियालाल मुश्रीफ | ग्राम विकास | मंत्रालय मुख्य इमारत, तीसरा मजला, दालन क्र. ३०२ | अहमदनगर |
| डॉ. नितिन काशीनाथ राउत | ऊर्जा | मंत्रालय मुख्य इमारत, चौथा मजला, (मध्य बाजू)<br>दालन क्र. ४०२ | नागपुर |
| श्रीमती वर्षा एकनाथ गायकवाड | स्कूली शिक्षा | मंत्रालय मुख्य इमारत, तीसरा मजला, दालन क्र. ३०३ | हिंगोली |
| डॉ. जितेंद्र सतीश आव्हाड | गृह निर्माण | मंत्रालय विस्तार इमारत, दूसरा मजला,<br>दालन क्र.२०१, २०२, २१२ | -- |
| श्री. एकनाथ सभांजी शिंदे | शहरी विकास, सार्वजनिक निर्माण<br>(सार्वजनिक उपक्रम ) | मंत्रालय विस्तार इमारत, तीसरा मजला,<br>दालन क्र.३०२ ते ३०७ | ठाणे और<br>गडचिरोली |
| श्री. सुनील छत्रपति केदार | पशु संवर्धन, दुग्ध व्यवसाय विकास,<br>क्रीड़ा व युवक कल्याण | मंत्रालय मुख्य इमारत, दूसरा मजला, दालन क्र. २०१ | वर्धा |
| श्री. विजय नामदेव वडेट्टीवार | अन्य पिछड़ा वर्ग, सामाजिक व शैक्षणिक पिछड़ा वर्ग, भटकन्तु व विमुक्त जाति -जनजाति विशेष पिछडा वर्ग कल्याण, खार जमीन विकास, आपत्ति व्यवस्थापन, मदद व पुनर्वसन | मंत्रालय मुख्य इमारत, तीसरा मजला, दालन क्र. ३०१ | चंद्रपुर |
| श्री. अमित विलासराव देशमुख | वैद्यकीय शिक्षा व सांस्कृतिक कार्य | मंत्रालय मुख्य इमारत, चौथा मजला, दालन क्र. ४०१ | लातूर |
| श्री. उदय रविंद्र सामंत | उच्च व तकनीकी शिक्षा | मंत्रालय मुख्य इमारत, पांचवा मजला, दालन क्र. ५०१ | सिंधुदुर्ग |
| श्री. दादाजी दगडु भुसे | कृषि, पूर्व सैनिक कल्याण | मंत्रालय विस्तार इमारत, चौथा मजला, दालन क्र.४०७ | पालघर |
| श्री. संजय दुलीचंद राठौड | वन, भूकंप पुनर्वसन | मंत्रालय विस्तार इमारत, ६ठा मजला, दालन क्र.६०१ | यवतमाळ |
| श्री. गुलाबराव रघुनाथ पाटिल | पेयजल आपूर्ति व स्वच्छता | मंत्रालय मुख्य इमारत, तल मजला (१) | जळगाव |

| मंत्री | विभाग | कार्यालयीन पता | पालकमंत्री |
|---|---|---|---|
| ॲड. के. सी. पाडवी | आदिवासी विकास | मंत्रालय विस्तार इमारत, ५वां मजला, दालन क्र. ५०२ | नंदुरबार |
| श्री. संदीपनराव आसाराम भुमरे | रोजगार गारंटी व बागवानी | मंत्रालय विस्तार इमारत, तीसरा मजला, दालन क्र. ३१६ | -- |
| श्री. बालासाहेब उर्फ श्यामराव पांडुरंग पाटिल | सहकार, विपणन (मार्केटिंग) | मंत्रालय विस्तार इमारत, दूसरा मजला, दालन क्र. २४१ | सातारा |
| ॲड. अनिल दत्तात्रय परब | परिवहन व संसदीय कार्य | मंत्रालय मुख्य इमारत, ५वां मजला, दालन क्र. ५०३ | रत्नागिरी |
| श्री. असलम रमजान अली शेख | वस्त्रोद्योग, मत्स्य व्यवसाय, बंदरगाह विकास | मंत्रालय विस्तार इमारत, चौथा मजला, दालन क्र. ४०२ | मुंबई शहर |
| ॲड. यशोमति ठाकुर (सोनावणे) | महिला व बाल विकास | मंत्रालय विस्तार इमारत, ५वां मजला, दालन क्र. ५४० | अमरावती |
| श्री. शंकरराव यशवंतराव गडाख | मृदा और जल संधारण | मंत्रालय विस्तार इमारत, पहला मजला, दालन क्र. ११५, ११७ | उस्मानाबाद |
| श्री. धनंजय पंडितराव मुंडे | सामाजिक न्याय व विशेष सहायता | मंत्रालय मुख्य इमारत, पहला मजला, दालन क्र. १०२ | बीड |
| श्री. आदित्य उद्धव ठाकरे | पर्यटन, पर्यावरण और राज शिष्टाचार | मंत्रालय मुख्य इमारत, सातंवा मजला, दालन क्र. ७१७ | मुंबई उपनगर |

| राज्यमंत्री | विभाग | कार्यालयीन पता | पालकमंत्री |
|---|---|---|---|
| श्री. अब्दुल नबी सत्तार | राजस्व, ग्राम विकास, बंदरगाह, खार जमीन विकास तथा विशेष सहायता | मंत्रालय विस्तार इमारत, तीसरा मजला, दालन क्र. ३४० | धुळे |
| श्री. सतेज उर्फ़ बंटी डी. पाटिल | गृह (अर्बन), गृह निर्माण, परिवहन, सूचना प्रौद्योगिकी, संसदीय कार्य, पूर्व सैनिक कल्याण | मंत्रालय विस्तार इमारत, पहला मजला, दालन क्र. १३९ | कोल्हापुर |
| श्री. शंभुराज शिवाजीराव देसाई | गृह (रूरल), वित्त, योजना, राज्य उत्पादन शुल्क, कौशल्य विकास, उद्योजकता व विपणन | विधान भवन | वाशिम |
| श्री. ओमप्रकाश उर्फ बच्चू बाबाराव कडू | जल संसाधन और लाभ क्षेत्र विकास,स्कूल शिक्षा, महिला और बाल विकास, अन्य पिछडा वर्ग, मुक्त जाति, कामगार | विधान भवन | अकोला |
| श्री. दत्तात्रय विठोबा भरणे | सार्वजनिक निर्माण (सार्वजनिक उपक्रम छोडकर), मृदा व जल संधारण, वन, पशु संवर्धन, दुग्ध व्यवसाय विकास व मत्स्य व्यवसाय विकास, सामान्य प्रशासन | मंत्रालय विस्तार इमारत, सातंवा मजला, दालन क्र. ७०० व ७०१ | -- |
| डॉ. विश्वजीत पतंगराव कदम | कृषि, सहकार, सामाजिक न्याय, अन्न व नागरिक आपूर्ति एवं उपभोकता संरक्षण, अल्प संख्यक विकास एवं वक्फ, मराठी भाषा | मंत्रालय विस्तार इमारत, सातंवा मजला, दालन क्र. ७०३, ७०४ | भंडारा |
| श्री. राजेंद्र शामगोन्डा पाटिल यड्रावकर | स्वास्थ्य व परिवार कल्याण, वैद्यकीय शिक्षा, अन्न व औषधि प्रशासन, वस्त्रोद्योग, सांस्कृतिक मामलों के मंत्री | विधान भवन | -- |
| श्री. संजय बाबुराव बनसोडे | पर्यावरण, पेयजल आपूर्ति, सार्वजनिक निर्माण (सार्वजनिक उपक्रम), रोजगार गारंटी, भूकंप पुनर्वसन, संसदीय कार्य | विधान भवन | -- |
| श्री. प्राजक्त प्रसादराव तनपुरे | शहरी विकास, ऊर्जा, आदिवासी विकास, उच्च व तकनीकी शिक्षा, आपदा प्रबंधन, मदद व पुनर्वसन | विधान भवन | -- |
| कुमारी अदिति सुनील तटकरे | उद्योग, खनन, पर्यटन, बागवानी, खेल व युवा कल्याण, राज शिष्टाचार, सूचना एवं जनसम्पर्क | मंत्रालय मुख्य इमारत, तल मजला (२) | रायगड |

संदर्भ : www.maharashtra.gov.in, ४ फरवरी २०२०

# अग्रसर मराठी कदम

युवाओं में खेल के प्रति चाह व क्रीड़ा संस्कृति को बढावा देने के उद्देश्य से शुरु की गयी प्रतियोगिता 'खेलो इण्डिया ' में लगातार दूसरे साल भी महाराष्ट्र ने 'जनरल चैम्पियनशिप जीती। इस प्रतियोगिता में महाराष्ट्र के खिलाड़ियों ने २५६ पदक जीते। व्यक्तित्व विकास के लिए खेल आवश्यक है यह हमेशा ही बोलै जाता है, लेकिन अब तक शैक्षिणिक वर्ष समाप्त हो जाने के बाद गर्मियों के शिविर तक ही खेल मयार्दित रहता था। इस खेल महोत्सव ने इस दायरे को बढाया है। और स्कूली स्तर से ही खेल कितना महत्वपूर्ण है इस बात का महत्व बताया। राज्य में क्रीड़ा संस्कृति को फैलाने की दिशा में मिली यह सफलता महत्वपूर्ण साबित होगी। महाराष्ट्र ने ७८ स्वर्ण, ७७ रजत व १०१ कांस्य यानी कुल मिलाकर २५६ पदक जीते। इस प्रतियोगिता में हरियाणा दूसरे नंबर पर रहा और उसने २०० तथा दिल्ली तीसरे नंबर पर रहा जिसने १२२ पदक जीते।

असं के गुवाहाटी शहर में हुई इस प्रतियोगिता में महाराष्ट्र ने पहला क्रमांक बरकरार रखा। नवीन चंद्र बारदोली स्टेडियम में इस प्रतियोगिता के समापन समारोह में महाराष्ट्र संघ को जनरल चैम्पियनशिप का कप प्रदान किया गया।

खेलो इण्डिया स्पर्धा में महाराष्ट्र लगातार दूसरे साल भी 'जनरल चैम्पियनशिप 'का विजेता बना। यह बात प्रदेश के लिए अभिमान की है। ये युवा खिलाड़ी भविष्य में भी अपना ऐसा ही प्रदर्शन दोहराते रहे हैं, इसके लिए उनको प्रमुखता से सहयोग दिया जाएगा।

**-उद्धव ठाकरे, मुख्यमंत्री**

महाराष्ट्र ने प्रतियोगिता के २० खेलों में से १९ में हिस्सा लिया था। इनमें से तैराकी प्रतियोगिता में सबसे ज्यादा ४६ पदक महाराष्ट्र के खिलाड़ियों ने जीते। जिम्नास्टिक में ४०, कुश्ती में ३१, एथलेटिक्स में २९ और वेटलिफ्टिंग में २५ पदक महाराष्ट्र के खिलाडियों ने जीतकर अपना दबदबा कायम रखा । पिछले साल खेलो इण्डिया प्रतियोगिता बालेवाड़ी स्थित शिव छत्रपति क्रीड़ा संकुल में हुई थी। उस प्रतियोगिता में भी महाराष्ट्र की टीम ने २२७ पदक जीते थे। इस साल महाराष्ट्र के खिलाड़ियों ने अपने उस प्रदर्शन में और अधिक सुधार कर ज्यादा पदक जीते हैं। युवा खिलाड़ियों को प्रोत्साहन देने के लिए आयोजित इस प्रतियोगिता में १७ साल से कम और २१ साल से कम के युवा खिलाडियों को उनके खेल के कौशल का प्रदर्शन करने का अवसर मिलता है।

गुवाहाटी में हुई खेलो इण्डिया प्रतियोगिता में विजयी महाराष्ट्र का समूह

'खेलो इण्डिया स्पर्धा में महाराष्ट्र के युवा खिलाड़ियों को मिली सफलता, महाराष्ट्र में खेल के क्षेत्र के भविष्य के लिए एक शुभ संकेत है। ये खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सफल प्रदर्शन करें, इसके लिए सरकार उन्हें जो भी जरूरी होगा मदद करने के लिए तैयार है।

**-अजित पवार, उप मुख्यमंत्री**

खेलो इण्डिया स्पर्धा में महाराष्ट्र के खिलाड़ियों की सफलता सराहनीय है। इसी प्रकार का प्रदर्शन आगे भी खिलाड़ी करें इसके लिए युवक कल्याण विभाग की तरफ से उन्हें विविध उपक्रम सुविधाएं उपलब्ध करायी जायेंगीं।

**-सुनील केदार,**
**क्रीड़ा व युवक कल्याण मंत्री**

खेलो इण्डिया स्पर्धा में महाराष्ट्र के युवा खिलाड़ियों को मिली सफलता उत्साहवर्धक है। महाराष्ट्र में खेल की संस्कृति बढे इसके लिए क्रीड़ा व युवक कल्याण मंत्रालय की तरफ से विविध कार्यक्रम शुरु किये जाने हैं।

**- कुमारी अदिति तटकरे,**
**क्रीड़ा व युवक कल्याण राज्यमंत्री**

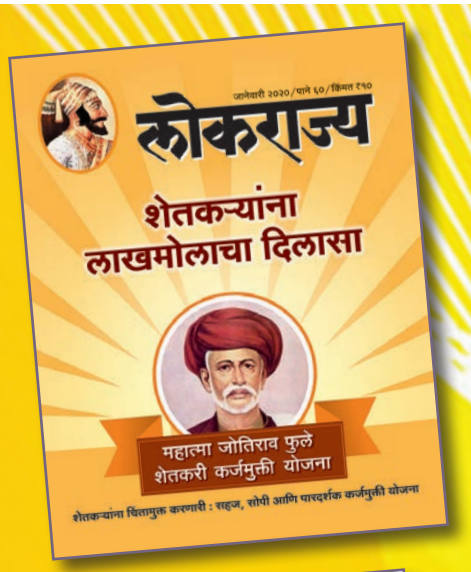

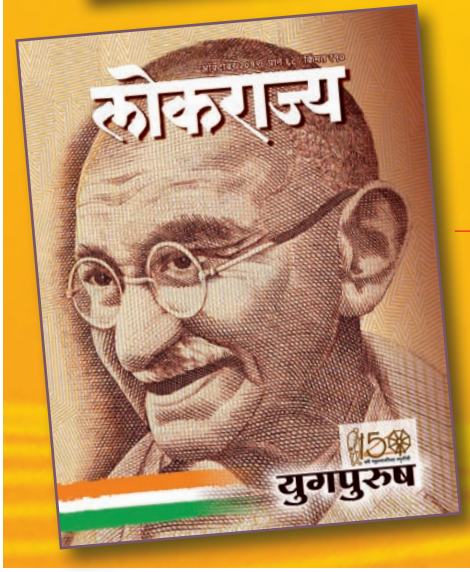


सत्यमेव जयते
महाराष्ट्र शासन

# लोकराज्य

अधिकृत और अचूक जानकारी

## देश का सबसे ज्यादा बिकने वाला मासिक

ABC

**ABC ने लगायी अधिकृत मुहर**

# लोकराज्य (मराठी)

# ६,२९,७९२

| | |
|---|---|
| **अन्नदाता (तेलुगू)** | **वनिता (मलयालम)** |
| ३,४३,३६६ | ३,४०,९८० |
| **गृहलक्ष्मी (हिंदी)** | **मलयालम मनोरमा (मलयालम)** |
| ३,०४,२०३ | २,४१,१९३ |

सूचना व जनसंपर्क महासंचालनालय, महाराष्ट्र सरकार

# शिवभोजन

महाराष्ट्र शासन

## गरीब और जरूरतमंदों के लिए आहार

**१० रुपये में भोजन**

- जिला चिकित्सालयों, बस स्थानकों, रेल्वे परिसर, बाजार, सरकारी कार्यालयों के परिसर
- पहले चरण में ५० स्थानों पर
- दोपहर १२ से २ के बीच

श्री. अजित पवार
मा. उपमुख्यमंत्री

श्री. छगन भुजबळ
मा. मंत्री,
अन्न व नागरी आपूर्ति व उपभोकता संरक्षण

डॉ. विश्वजीत कदम
मा. राज्यमंत्री,
अन्न व नागरी आपूर्ति व उपभोकता संरक्षण

श्री. उद्धव ठाकरे
मा. मुख्यमंत्री

Visit: www.mahanews.gov.in | Follow Us: /MahaDGIPR | Like Us: /MahaDGIPR | Subscribe Us: /MaharashtraDGIPR

प्रति / TO

**O.I.G.S. भारत सरकार के सेवार्थ LOKRAJYA**

***If undelivered, please return to:***

प्रेषक / **From**

अनिल आलूरकर
उपनिदेशक (प्रकाशन), सूचना व जनसंपर्क महानिदेशालय
लोकराज्य शाखा, ठाकरसी हाऊस, २री मंजिल, मुंबई पोर्ट ट्रस्ट, पोर्ट हाऊस के पास, शुरजी वल्लभभाई मार्ग, बेलार्ड इस्टेट, मुंबई-४०० ००१

लोकराज्य मासिक पत्रिका सूचना एंव जनसंपर्क महानिदेशालय, महाराष्ट्र सरकार, मंत्रालय, मुंबई की ओर से मुद्रक व प्रकाशक अनिल आलूरकर, उपनिदेशक (प्रकाशन), ने मे. मुद्रण प्रिंट एन पैक प्राइवेट लिमिटेड, प्लाट नं सी-२६०, एमआईडीसी, टीटीसी इंडिस्ट्रियल एरिया, सविता केमिकल रोड, बिहाइंड गोकुल होटल, पवने, नवी मुंबई - ४००७०३ से छपवाकर सूचना व जनसंपर्क महानिदेशालय, महाराष्ट्र सरकार, मंत्रालय, मुंबई-४०००३२ से प्रकाशित किया ।